भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 8 **जनवरी-फरवरी** 2007 **अंक** 1-2

किताबें

किताबें मँहगी हो गई हैं
कि लोग भूल गए हैं किताबें खरीदना,
सिर्फ एक वस्तु भर हैं किताबें
बाजार और पाठकों में तालमेल नहीं रहा
क्योंकि किताबें मँहगी हो गई हैं।

किताबें मँहगी हो गई हैं
कि संस्थानों में फंडाभाव हो गया है,
मंदी का खुशनुमा दौर है,
कटौती चल रही है
क्योंकि किताबें मँहगी हो गई हैं।

किताबें मँहगी हो गई हैं
कि बुद्धिजीवी उतर आए हैं शेयर बाजार में,
किताबें मँहगी हो गई हैं
कि परीक्षार्थी खुशहाल हैं पैरवी के संसार में,
किताबें मँहगी हो गई हैं
कि लेखकों की जनसंख्या अपार है,
किताबें मँहगी हो गई हैं
कि पढ़ने वालों की चाहत बेजार है,
किताबें मँहगी हो गई हैं
कि इंटरनेट के सामने किताबें लाचार हैं।

तब,
क्या समाप्त हो जाएगा किताबों का दौर?
नहीं, कि किताबें अब भी जिन्दा रहेंगी।
हर दौर में, हर दशा में
किताबें जिन्दा रहेंगी—
क्योंकि किताबें
आदमी को आदमी से मिलाती हैं,
आदमी को एक बार फिर से
आदमी बनाती हैं।

—बालेन्दु शेखर तिवारी

एक पुस्तक चाहिए

पेट की है भूख अपनी, देह की है भूख कुछ,
पर दिमागी भूख को तो अपना ही हक चाहिए।
बुभुक्षित मस्तिष्क बोला, आदमी की जेब से
एक रोटी कम सही, पर एक पुस्तक चाहिए।

—सूर्यकुमार पाण्डेय, लखनऊ

कविजी आओ घर चलें, रैन भई एहि देस

1945 की फरवरी की वह रात्रि आज भी नहीं भूलती जब गोरखपुर के सेंट एण्ड्रूज कॉलेज के मैदान में 25 हजार श्रोता रात 2 बजे तक कवियों को सुनने के लिए एकत्र थे। पं० माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान, शम्भूनाथ सिंह, धर्मवीर भारती, जगदीश गुप्त, गोपीकृष्ण गोपेश, सुमित्राकुमारी सिन्हा आदि प्रमुख कवियों को एकाग्र भाव से सुनते रहे। कवि सम्मेलन दो दिन चला। मैं बी०ए० का छात्र था। प्रो० राजनाथ पाण्डेय ने इस कवि सम्मेलन का आयोजन कराया था। मैं सक्रिय कार्यकर्ता था, यहीं मेरा सम्पर्क पं० माखनलाल चतुर्वेदी तथा अन्य साहित्यकारों से हुआ। परिचय ही नहीं प्रगाढ़ सम्बन्ध बना, साहित्य में रुचि जगी। मेरे जीवन की दिशा ही बदल गई।

1964 में मैं काशी आकर बस गया। रोटरी क्लब का सदस्य बना। 1970-71 में वाराणसी में रोटरी क्लब की ओर से नागरी नाटक मण्डली के प्रेक्षागृह में, बाद में टाउनहाल में कवि सम्मेलन का आयोजन किया। दोनों में 200 रुपये टिकट लगाई गई। कवि सम्मेलन में रामधारी सिंह 'दिनकर', जानकीवल्लभ शास्त्री, नागार्जुन, सुमित्रानन्दन पंत, महादेवी वर्मा प्रभृति सुप्रसिद्ध कवि आये।

प्रमुख स्थानीय कवि भी सम्मिलित हुए, शरद जोशी ऐसे व्यंग्यकार भी थे, जिन्होंने गद्य में व्यंग्य सुनाए। श्रोताओं ने आधी रात के बाद तक कवियों और व्यंग्यकारों को सुना और अपनी रचनात्मक प्रतिक्रिया भी व्यक्त की। कविताओं की रागात्मक संवेदना उनके मन को स्पर्श करती थीं और वे उन्हें गुनगुनाते भी थे।

आज के परिप्रेक्ष्य में यह सब स्मरण करता हूँ तो लगता है बीत गई सो बात गई।

टीवी युग ने कविताओं को अत्यन्त हल्के हास्य-व्यंग्य और चुटकुलों तक सीमित कर दिया है। अब न वे श्रोता हैं और न वे कवि। टीवी पर कवि सम्मेलन के नाम पर हास्य सम्मेलन कहिए, लाफ्टर शो कहिए या वाह वाह कीजिए। कवि **ज्ञानेन्द्रपति** ने टीवी युग में कवि की चर्चा करते हुए लिखा है—

नहीं, फासफोरस नहीं
बेचैनी नहीं, तड़प नहीं
संशय नहीं, सवाल नहीं
सुहाऊ और सुजाऊ
कवि टीवी युग के
आओ छाओ
चितवती जनता चेतेगी कैसे के
चित चुराऊ प्रोग्रामों में।

नई कविता के कवियों ने रागात्मकता के स्थान पर बौद्धिकता को स्वीकार किया, उनकी रचनाओं में बौद्धिक संवेदना की गहनता है किन्तु वे सामान्य श्रोताओं को लुभाती नहीं। आज के श्रोता भी उतने संवेदनशील नहीं। तभी कवि **केदारनाथ सिंह** 'मोड़ पर विदाई' देते हुए कहते हैं—

शेष पृष्ठ 2 पर

प्रसादजी के जन्म दिवस 31 जनवरी पर

प्रसाद के 'आँसू' की कहानी

—पुरुषोत्तमदास मोदी

किसी कवि की रचना को समझने के लिए उस कवि के अंतरंग को जानना आवश्यक है। रचना विशेष का मूल उत्स क्या है, उसकी प्रेरणा कहाँ है? यह जाने बिना रचना के साथ न्याय नहीं होता।

प्रसादजी के 'आँसू' के सन्दर्भ में अनेक विद्वानों ने भिन्न अर्थ लगाये हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार ''वेदना की कोई एक निर्दिष्ट भूमि न होने से सारी पुस्तक का कोई एक समन्वित प्रभाव नहीं निष्पन्न होता।''

प्रसादजी के समकालीन तथा मित्र नंददुलारे वाजपेयी ने 'आँसू' को प्रसादजी का विरह काव्य बताते हुए विरह के इतने मार्मिक वर्णन की सराहना की है।

प्रो० कल्याणमल लोढ़ा के अनुसार ''आँसू' प्रसाद की वैयक्तिक अनुभूति का काव्य है। इस अनुभूति का स्पष्ट सम्बन्ध प्रसाद के जीवन से है। इस नाते वह कवि की विभिन्न मन:स्थितियों और तद्गत भाव स्थितियों की अभिव्यंजना है। प्रसाद के जीवन के बाह्य संघर्ष का इतिहास तो सर्वविदित है पर उससे अधिक अंत:संघर्ष का, जो उन्हें करना पड़ा था और जिसने उनके काव्य-व्यक्तित्व को सर्वाधिक प्रभावित किया, उसका लेखा-जोखा अभी नहीं हो पाया।''

'आँसू' के सन्दर्भ में उसी अंत:संघर्ष को जानने की अपेक्षा है।

प्रसादजी के बड़े भाई शम्भुरत्नजी प्रसादजी को बहुत स्नेह करते थे और वही सारा कार्य व्यापार देखते थे। उन्होंने सुँघनी साहु परिवार को प्रतिष्ठा प्रदान की थी। उनका रहन-सहन उच्चकोटि का था और व्ययशील थे। प्रसादजी उन दिनों बही खातों में हाशिए और रद्दी कागजों पर कविता लिखते थे। भाई शम्भुरत्नजी को इसकी जानकारी होने पर वे रुष्ट भी होते थे किन्तु उनका अजस्र स्नेह बना रहता था और प्रसादजी को व्यावसायिक दायित्व से मुक्त रखते थे।

ऐसे में प्रसादजी की 17 वर्ष की अवस्था में भाई शम्भुरत्नजी का निधन हो गया। परिवार में प्रसादजी और उनकी भाभी शेष थे। भाभी के लिए प्रसादजी पुत्रवत् थे।

19 वर्ष की अवस्था में सन् 1908 में प्रसादजी का विन्ध्यवासिनी देवी से विवाह हुआ। 8 वर्ष बाद 1916 में पत्नी का राजयक्ष्मा से निधन हो गया। घर में केवल तीन प्राणी थे—प्रसादजी स्वयं, उनकी भाभी और उनकी पत्नी। भाभी का स्नेह और पत्नी का प्रेम यही उनके जीवन का आधार था। 29 वर्ष की आयु में भाभी के कहने से प्रसादजी का दूसरा विवाह 1918 में सरस्वती देवी से हुआ। एक वर्ष में ही प्रसव में सरस्वती देवी का निधन हो गया। पत्नी अत्यन्त सुन्दर थी, प्रसादजी उसे बहुत प्यार करते थे। उसके निधन से प्रसादजी को विचलित कर दिया। सरस्वती देवी भी सुन्दर थीं और जबतक वे पूर्व पत्नी के प्रेम को नई पत्नी में देखते तभी एक वर्ष में ही उनका भी निधन हो गया। प्रसादजी पर यह सबसे बड़ी चोट थी। इस असीम वेदना ने 'आँसू' में अभिव्यक्ति पाई। 1919 में प्रसादजी का कमला देवी से तीसरा विवाह हुआ।

दोनों पत्नी के निधन के दो वर्ष बाद जुलाई 1921 में 32 वर्ष की अवस्था में प्रसादजी ने 'आँसू' पूरा किया। प्रसादजी मैथिलीशरण गुप्तजी को 'आँसू' के छन्द सुनाए। गुप्तजी ने 'आँसू' के पद सुनते ही कहा—

जो घनीभूत पीड़ा थी
मस्तक में स्मृति-सी छायी
दुर्दिन में आँसू बनकर
वह आज बरसने आयी।

यह 'आँसू' के इनर टाइटिल पर अंकित है। श्री रायकृष्णदासजी के कथनानुसार मैथिलीशरण गुप्तजी ने प्रसादजी के आँसू पोंछने के लिए गुनगुनाते हुए इन पंक्तियों की रचना की। इसे मैथिलीशरणजी द्वारा लिखी गई 'आँसू' की भूमिका समझना चाहिए।

आँसू का प्रथम छन्द है—

इस करुणा कलित हृदय में
अब विकल रागिनी बजती
क्यों हाहाकार स्वरों में
वेदना असीम गरजती।

घनीभूत पीड़ा की स्मृति और बजती विकल रागिनी और हाहाकार स्वरों में गरजती असीम वेदना 'आँसू' है।

'आँसू' का प्रथम संस्करण 1925 ई० में मैथिलीशरण गुप्त के प्रकाशन संस्थान चिरगाँव झाँसी से प्रकाशित हुआ था। द्वितीय संस्करण 1933 ई० में प्रकाशित हुआ। इसके प्रकाशक थे भारती-भण्डार, रामघाट, बनारस सिटी। यह रायकृष्णदास द्वारा स्थापित प्रकाशन संस्थान था। द्वितीय संस्करण के प्रकाशकीय में लिखा है—

''आँसू के इस दूसरे संस्करण में, छन्दों का क्रम, कुछ बदल दिया गया है। कुछ छन्द और भी जोड़ दिये गये, जो पहले संस्करण के बाद लिखे गये थे।''

1925 में प्रकाशित 'आँसू' के प्रथम संस्करण में प्रसादजी की प्रथम पत्नी तदुपरान्त दूसरी पत्नी के निधन के आघात की प्रथम अभिव्यक्ति है। 1933 में प्रकाशित 'आँसू' प्रसादजी के काव्यात्मक विकास की परिणति है।

पृष्ठ 1 का शेष

अब जाओ मेरी कविताओं
सामना करो तुम दुनिया का
यदि बजता है तो सिर्फ वहीं
यह इकतारा निर्गुनिया का।

कविवर हताश हैं। तीन दोहों में अपनी व्यथा व्यक्त करते हैं—

हैं अवाक् सब बोलियाँ, खुले होंठ निस्तब्ध
कवि जी पकड़ो ज़ोर से, उड़े जा रहे शब्द।

कलम छोड़ दो मेज़ पर, काग़ज़ रख दो द्वार
सारी दुनिया जा रही, कविजी चलो बज़ार।

श्रोता कब के उठ गए, पाठक चले विदेश
कवि जी आओ घर चलें, रैन भई एहि देस।

स्वयंप्रकाश कहते हैं—

''मेरी समझ से इसके लिए सबसे ज्यादा दोषी है आधुनिक हिन्दी कवियों का नकचढ़ापन, जिन्होंने जनता को कविता सुनाना घटिया काम समझ कर तीसरे चौथे दर्जे के कवियों के लिए मंच छोड़ दिया। उन्होंने हिन्दीभाषी जनता की परवाह नहीं की। वे जनता के लिए लिख ही नहीं रहे थे। वे पता नहीं किसके लिए लिख रहे थे। उन्होंने जनता की परवाह नहीं की तो जनता ने भी उन्हें अपने दिल से निकाल दिया। खराब मुद्रा ने अच्छी मुद्रा को चलन से बाहर कर दिया। पाठ्यक्रम—साहित्य प्रेम की नर्सरी हुआ करते थे, अच्छी और सच्ची कविता से खाली हो गए। क्या विडम्बना है कि हिन्दी का कवि हिन्दीभाषी जनता को अपनी कविता सुनाने से डरता है और यह हमारी भाषा की ही विडम्बना है। अन्य भारतीय भाषाओं में कवि सम्मेलन होते हैं, कवि कथन होते हैं, कवि दरबार और काव्य आवृत्ति प्रतियोगिता होती है- हिन्दी में एहसान कुरैशी होते हैं।''

देखना है—कब कवि को श्रोता मिलते हैं, कब श्रोता को कवि। कविता का भविष्य बतायेंगे पाठक या श्रोता।

फिलहाल—**कविजी आओ घर चलें, रैन भई एहि देस।**

—पुरुषोत्तमदास मोदी

पाठक की तलाश में पुस्तकें

—डॉ० महीप सिंह

द फेडरेशन ऑफ इण्डियन पब्लिशर्स ने एक बड़ी उपयोगी पुस्तक प्रकाशित की है—'भारत में पुस्तक प्रकाशन के 60 वर्ष (1947-2007)'। बड़े आकार की लगभग 400 पृष्ठों की इस अंग्रेजी पुस्तक का सम्पादन प्रकाशन उद्योग के स्तम्भ-पुरुष दीनानाथ मल्होत्रा ने किया है। कुछ मास पूर्व ही फ्रैंकफर्ट में प्रतिवर्ष की भाँति अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला लगा था। इस मेले में संसार के अनेक भागों के प्रकाशक भाग लेते हैं। इस वर्ष इस मेले में भारत की विशिष्ट भूमिका थी। ऐसे अवसर पर इस पुस्तक का प्रकाशन अपने आप में बहुत महत्त्वपूर्ण था। प्रकाशन उद्योग के सम्बन्ध में हमारे देश में आम जानकारी बहुत कम है। हमारी अधिकांश जनसंख्या गाँवों और छोटे-छोटे कस्बों में रहती हैं, जहाँ पुस्तकों के पहुँचने के साधन बहुत सीमित हैं। कई बार तो जितना किसी पुस्तक का मूल्य होता है उससे अधिक डाक खर्च आ जाता है। पुस्तकों की नियमित दुकानें भी बहुत कम हैं।

पाठ्य-पुस्तकों को छोड़कर पुस्तक विक्रय का धन्धा बड़ी मंथर गति से चलने वाला धन्धा है, इस कारण इसे बहुत कम लोग अपनाते हैं। इन सीमाओं के होते हुए भी पुस्तक-प्रकाशन व्यवसाय ने गत 60 वर्षों में बहुत प्रगति की है। हमारे देश में स्वतंत्रता की प्राप्ति तक साक्षरता की दर 30 प्रतिशत से अधिक नहीं थी। आज यह 65 प्रतिशत पहुँच गई है। केरल में यह प्रतिशत 90 से अधिक है। इस प्रकार इस समय भारत में 65 करोड़ से अधिक साक्षर लोग हैं। इतनी बड़ी संख्या में जहाँ साक्षर हों उस देश में पुस्तक प्रकाशन की अपार सम्भावनाएँ हैं। भारत बहुभाषी देश है।

अंग्रेजी सहित 22 भाषाएँ संविधान द्वारा स्वीकृत हैं और पुस्तक प्रकाशन का कार्य 24 भाषाओं में होता है। 16000 से अधिक सक्रिय प्रकाशकों द्वारा सन् 2005 में प्रकाशित पुस्तकों की संख्या 82577 थी। इनमें 25 प्रतिशत पुस्तकें हिन्दी में और 20 प्रतिशत पुस्तकें अंग्रेजी में प्रकाशित हुई। इस देश में साक्षरता वृद्धि का बड़ा लाभ भारतीय भाषाओं को प्राप्त हुआ है। एक ओर 80 प्रतिशत पुस्तकें भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होती हैं, दूसरी ओर दैनिक समाचार पत्रों के प्रकाशन के क्षेत्र में कल तक अंग्रेजी अखबारों का जो दबदबा था उसे आज भारतीय भाषाओं, विशेषकर हिन्दी के दैनिक पत्रों ने तोड़ दिया है। यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि भारत में बंगाली, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगू, कन्नड़ आदि ऐसी कई भाषाओं वाले राज्य हैं, जिनकी जनसंख्या 5 करोड़ से 10 करोड़ के बीच है। इनमें प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली पुस्तकों की संख्या 5 हजार से 8 हजार के बीच होती है। इनकी तुलना में संसार के अनेक ऐसे देश हैं जिनकी जनसंख्या इन राज्यों जैसी है, किन्तु वहाँ प्रकाशित पुस्तकों की संख्या 50 हजार से 70 हजार के बीच होती है। हिन्दी इस देश में 45 प्रतिशत भाग की राजभाषा है और लगभग 60 प्रतिशत लोग हिन्दी बोलते हैं, किन्तु प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली पुस्तकों की संख्या 22 हजार से कम होती है। अंग्रेजी में पुस्तकें प्रकाशित करने वाले प्रकाशक यह सन्तोष अवश्य कर सकते हैं कि इस भाषा में सबसे अधिक पुस्तकें प्रकाशित करने के मामले में भारत विश्व में तीसरे नम्बर पर है।

जिस देश में अंग्रेजी जानने और बोलने वालों की संख्या 2 प्रतिशत से भी कम है वहाँ 20 प्रतिशत पुस्तकें अंग्रेजी में प्रकाशित होती हैं। इस दृष्टि से गैर अंग्रेजीभाषी देशों में भारत सर्वप्रथम है। इसमें सन्देह नहीं कि गत 60 वर्षों में हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाओं ने बहुत उन्नति की है। आज अनेक राज्यों में वहाँ की भाषाएँ अनेक विषयों में उच्च शिक्षा का माध्यम हैं। निचली अदालतों में सारी बहस और न्यायाधीशों के फैसले इन भाषाओं में होने लगे हैं। तमिलनाडु की करुणानिधि सरकार ने तो अब यह निर्णय ले लिया है कि राज्य के उच्च न्यायालय का सारा कामकाज तमिल भाषा में किया जाएगा। उत्तर प्रदेश के उच्च न्यायालय के अनेक न्यायाधीश अब हिन्दी में अपनी कार्रवाई करने लगे हैं। बावजूद इसके इस तथ्य से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि अंग्रेजी का वर्चस्व पूरी तरह कायम ही नहीं है, वरन वैश्वीकरण के बढ़ते हुए प्रभाव के कारण वह निरन्तर बढ़ता जा रहा है। प्रकाशन की दृष्टि से भारत की गणना आज संसार के पहले सात देशों में की जाती है। इन सात में से चीन को छोड़कर, जिसकी जनसंख्या भारत से अधिक है और जहाँ प्रतिवर्ष एक लाख से अधिक पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, शेष 5 देशों की जनसंख्या भारत से बहुत कम है। इन सभी तथ्यों के सन्दर्भ में इस पुस्तक में व्यापक चर्चा की गई है। जैसा पहले कहा जा चुका है कि सभी भारतीय भाषाओं में नई से नई और विविध पुस्तकों के प्रकाशन की असीम सम्भावनाएँ व्याप्त हैं, जिनका पूरी तरह उपयोग किया जाना चाहिए।

पुस्तकों के व्यापक प्रचार में देश के विभिन्न भागों में आयोजित किए जाने वाले पुस्तक मेले बड़ा उपयोगी काम करते हैं। प्रति दूसरे वर्ष दिल्ली में लगने वाले अन्तरराष्ट्रीय पुस्तक मेले में लाखों लोग आते हैं और देशी-विदेशी प्रकाशकों की पुस्तकें खरीदते हैं। नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया की ओर से देश के विभिन्न भागों में ऐसे स्थानों पर पुस्तक मेले लगाए जाते हैं जो अपेक्षाकृत छोटे हैं। इससे दूर-दराज के क्षेत्रों में भी पुस्तकें पहुँच जाती हैं। लगभग 50 वर्ष पहले प्रकाशन क्षेत्र में एक क्रान्ति आई जब हिन्द पाकेट बुक्स की ओर से पाकेट बुक्स का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ था। मुझे स्मरण है कि उस समय इनका मूल्य एक रुपया प्रति पुस्तक था। इन पुस्तकों का अभूतपूर्व स्वागत हुआ था। बाद में तो पाकेट बुक्स प्रकाशित करने वाले प्रकाशनों की भीड़ आ गई। फिर पता नहीं क्या हुआ कि यह भीड़ छूटने लगी? अनेक प्रकाशनों ने ऐसी पुस्तकें छापनी बन्द कर दीं। अन्य भारतीय भाषाओं का हाल भी ऐसा ही हुआ। मुझे मुख्य रूप से इसके दो कारण दिखाई देते हैं। लगभग सभी प्रकाशनों ने घरेलू लाइब्रेरी योजना प्रारम्भ की थी। दूर गाँवों में बैठे लोग भी इस योजना के सदस्य बन जाते थे।

उन्हें पुस्तकों के पैकेट डाक द्वारा भेजे जाते थे, जिसका खर्च प्रकाशक वहन करते थे। धीरे-धीरे डाक दरें इतनी बढ़ गईं कि प्रकाशनों के लिए यह खर्च उठाना बहुत कठिन हो गया। उस समय यह बहुत स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि यदि सरकार पुस्तकों के सन्दर्भ में इन दरों को नियमित नहीं करेगी तो यह बहुत उपयोगी प्रयास अपना दम तोड़ देगा। वैसा ही हुआ। दूसरा बड़ा कारण है कि नित्य बढ़ते टीवी चैनलों ने बहुत बड़े पाठक वर्ग, विशेष रूप से महिलाओं को अपनी ओर खींच लिया।

यह विचित्र विरोधाभास है कि इन वर्षों में दैनिक समाचार पत्रों की बिक्री बहुत बढ़ी है, किन्तु पत्र-पत्रिकाओं का पाठक घटा है और अपने समय की अनेक प्रतिष्ठित पत्रिकाएँ बन्द हो गई हैं। भारत में पुस्तक प्रकाशन के 60 वर्ष ग्रन्थ प्रकाशन के क्षेत्र में इस देश की उपलब्धियों और सम्भावनाओं का व्यापक परिदृश्य हमारे सामने रखता है। प्रकाशन व्यवसाय मात्र एक व्यवसाय नहीं है। असंख्य लोगों के मानसिक और बौद्धिक विकास का यह प्रबल साधन है। इसलिए इसका दायित्व अन्य किसी भी व्यापार और उद्योग से कहीं अधिक है और यह व्यापक जागरूकता की माँग करता है।

बिना पुस्तकों का घर वैसा ही है जसा बिना खिड़कियों का मकान।

—एच० मान

कालरूपी महासागर में पुस्तकें दीप स्तम्भ की भाँति हैं। **—ई० पी० ह्विपल**

जब मेरे पास स्वल्प द्रव्य होता है, मैं पुस्तकें खरीदता हूँ और कुछ शेष रहता है तब भोजन सामग्री और वस्त्र लेता हूँ। **—इरसेमस (दार्शनिक)**

कलम की तलवार भाँजते

संस्मरणों के योद्धा कांतिकुमार जैन

लम्बी छरहरी गोरी काया के धनी डॉ० कांतिकुमार जैन 75वें में चल रहे हैं। 1992 में जब सागर विश्वविद्यालय से अवकाशग्रहण किया था तो हिन्दी जगत उन्हें नहीं जानता था। अकादमिक क्षेत्रों में उनकी पहचान सिर्फ एक प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग) के रूप में ही थी।

बुढ़ौती में बुद्धि के दाँत निकलना कांति के लिए सिर्फ मुहावरा ही नहीं, हकीकत बन गया। संयोग देखिए कि इसी बीच पाँव की हड्डी टूट गई। अब सागर किनारे बैठने के सिवा जुगाली के किया भी क्या जा सकताथा। सो यादों में डूबने लगे। अपनी असमर्थता को भुनाने का हुनर काम आया। कलम को दुधारी तलवार बनाया।

कांतिकुमारजी का पहला संस्मरण 'वसुधा' में अमृतरायजी की पत्नी 'श्रीमती सुधा राय' छपा। फिर रजनीश पर आया धांसू संस्मरण। अब तक जैन साहब जाल फेंकने में माहिर हो चुके थे। उनकी इस महारत को राजेन्द्र यादव ने परखा और उनको 'एक बार और जाल फेंक रे मछेरे' की याद दिलाई। 'हंस' में छपा एक नायाब मछली का जिन्दा फासिल्स-अंचलजी पर संस्मरण। फिर रसालजी का तर्पण महोत्सव। फिर वन्स मोर, वन्स मोर की ध्वनियाँ और उसके साथ ही शुरू हुई हिन्दी जगत में अखिल भारतीय खदबराहट—यह साला कौन आ गया? साहित्य के दारोगाओं ने कम तफ्तीश शुरू की, अभी तक कहाँ थे कांतिकुमार जैन?

कांतिकुमार जैन ने हिन्दी साहित्य में संस्मरण लेखन को एक नयी विधा के रूप में स्थापित कर दिखाया है। कांति ने यादों के सहारे यादगार संस्मरण लिखे हैं। परन्तु स्मृतियों पर आधारित उनके संस्मरण तथा परख भी हैं। पढ़ने में वे कोई कोताही नहीं करते। जिस पर लिखना होता है उसे पूरा खंगाल कर लिखते हैं।

संस्मरण किसी पर भी लिखे जा सकते हैं। इसके लिए व्यक्ति का विशिष्ट होना अनिवार्य नहीं है। संस्मृत व्यक्ति तो कैमरे का अपरचर मात्र है। व्यक्ति के बहाने तत्कालीन समय-समाज परिवेश की परते खुलती हैं। परन्तु किसी को इतना भी मत खोलिए कि वह नंगा दिखाई देने लगे।

''कोई नंगा दिखने लगे तो उसके लिए कांति जिम्मेदार कैसे हुआ? द्रौपदी के चीरहरण के लिए क्या आप वेद व्यास को जिम्मेदार ठहराएँगे? कोई भी लेखक अपने समय, समाज और मूल्यचर्या का इतिहास मात्र लिखता है और मैं भी वही करता हूँ।''

कांतिकुमार जैन को उनके संस्मरणों में साहस समय के तथ्यनिष्ठ इतिहास, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, पठनीयता और अलग अंदाजेबयाँ के लिए लोग जानते पहचानते हैं। उन्होंने गद्य की एक नई भाषा विकसित की है। उनके संस्मरण न रेखाचित्र हैं, न शब्दचित्र, गल्प, न गप्प, न कविता, चुटकुला, कहानी, न समाजशास्त्र न मनोरंजन। लेकिन इन सबकी छवियाँ उनके संस्मरणों में मिलती हैं और जबरदस्त पठनीयता ऊपर से। जिस पर भी उन्होंने लिखा उसे नए सिरे, नए तरीके से पहचानने की कोशिश की। सारी थूका-फजीहत के बाद भी यह नहीं लगता कि लेखक का उद्देश्य निन्दा करना है। उनके लिखे संस्मरणों की लोकप्रियता एक मूल्य बनकर उभरी है।

कान्तिकुमार की 2002 में पुस्तक '**लौट कर आना नहीं होगा**', 2004 में '**तुम्हारा परसाई**', 2006 में '**जो कहूँगा सच कहूँगा**' पुस्तकें आईं। इसके अलावा तीन पुस्तकें आने को बेचैन हैं—'**बैकुण्ठपुर में बचपन**', '**पप्पू ख्वास का कुनबा**' और '**अब तो बात फैल गई**'। बड़े टिपिकल नाम हैं और नाम ही नहीं काम भी बड़ा टिपिकल है। बैकुण्ठपुर में बचपन का नायक बैकुण्ठपुर जगह है, मालगुडी डेज की तरह। पप्पू खवास एक साईं चरित्र है। 'अब तो बात फैल गई' पाठकों, आलोचकों के प्राप्त पत्रों के आधार पर हिन्दी समाज को समझने का समाजशास्त्रीय उपक्रम है। अद्यतन बस्तर के राजा प्रवीणचन्द्र भंजदेव पर संस्मरण।

संकीर्ण मानसिकता से उबरें

यह उस समय की बात है, जब राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी वर्धा हिन्दी समिति की बैठक में सम्मिलित होने गए हुए थे। वहाँ हिन्दी को लेकर नकारात्मक चर्चा करने वाले भी कई लोग थे। इस बात से गाँधीजी चिढ़ गए। उन्होंने सीधा कटाक्ष करने के बजाय परोक्ष रूप से प्रहार आरम्भ कर दिया।

उन्होंने समिति की बैठक में आए आगन्तुकों का अभिवादन करते हुए सर्वप्रथम सभी का आभार ज्ञापन किया। तत्पश्चात उन्होंने कहा कि हमें हिन्दी भाषा को लेकर संकीर्ण मानसिकता से उबरना चाहिए। हिन्दी भाषा का इतिहास भी काफी पुराना है। संस्कृत से इसका अभ्युदय हुआ है। इसलिए इसमें गम्भीरता का अत्यन्त गरिमामयी भाव सन्निहित है। इस भाषा पर कोई विवाद की वजह कुछ हो ही नहीं सकता। विवाद यदि है, तो संकीर्ण भाव का। इसलिए आज से हम सभी समिति से जुड़े लोगों को संकल्प लेना होगा कि भाषा को लेकर अपनी संकीर्ण मानसिकता को तिलांजलि देनी है।

गाँधीजी के इस विचार को सुनकर बैठक में आए वक्ताओं का भाषा को लेकर विवाद एवं नकारात्मक भाव खत्म हो गया और सभी ने व्यापक दृष्टि से सहमति के बने बिन्दुओं पर हस्ताक्षर कर दिए। इस प्रकार वर्धा हिन्दी समिति के द्वारा हिन्दी के उत्थान के लिए लाए प्रथम प्रस्ताव को मंजूरी मिल गयी।

—पूनम ज्ञान

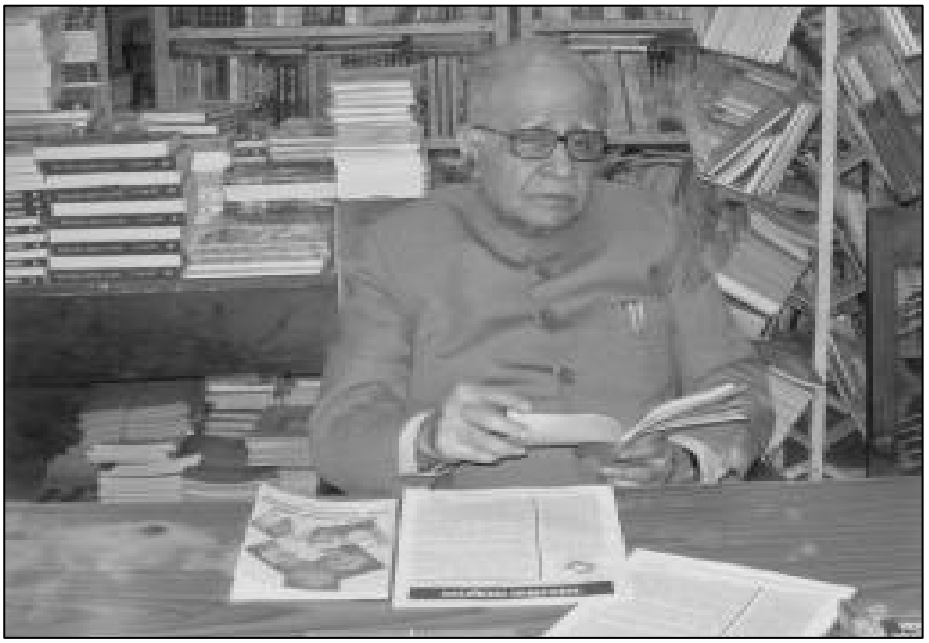

कर्नाटक के राज्यपाल श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी
विश्वविद्यालय प्रकाशन में पुस्तकों का अवलोकन करते हुए।

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

KOLKATA BOOK FAIR

कोलकाता पुस्तक मेला

Maidan on Outram Road (Crossing of Park Street & Jawahar Lal Nehru Road)

में

31 जनवरी से 11 फरवरी 2007

विविध विषयों की नवीनतम पुस्तकों के साथ उपस्थित हो रहा है।

आध्यात्मिक

■ पं० गोपीनाथ कविराज ■करपात्रीजी ■स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती ■प्रो० कल्याणमल लोढ़ा ■श्यामाचरण लाहिड़ी ■ विश्वनाथ मुखर्जी तथा अन्य

इतिहास ग्रन्थ

■प्रो० अनंत सदाशिव अलतेकर ■डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ■डॉ० लल्लनजी गोपाल ■डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त ■डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल ■डॉ० मारुतिनन्दनप्रसाद तिवारी ■डॉ० मोतीचन्द्र ■जेम्स प्रिंसेप ■पं० बलदेव उपाध्याय तथा अन्य

शिक्षा तथा मनोविज्ञान विषयक ग्रन्थ

■डॉ० के०पी० पाण्डेय ■आर०आर० रस्क तथा अन्य

साहित्य-समीक्षा ग्रन्थ

■डॉ० भगीरथ मिश्र ■डॉ० रामचन्द्र तिवारी ■डॉ० बच्चन सिंह ■डॉ० शुकदेव सिंह ■प्रो० कल्याणमल लोढ़ा तथा अन्य

कथा साहित्य

■प्रेमचंद ■द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' ■बिमल मित्र ■बच्चन सिंह ■विवेकी राय ■युगेश्वर ■कुबेरनाथ राय ■प्रभुदयाल मिश्र

संस्कृत साहित्य

■डॉ० कपिलदेव द्विवेदी ■डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी ■पं० चण्डिकाप्रसाद शुक्ल ■पं० बलदेव उपाध्याय ■डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी तथा अन्य

अन्य विषय

■समाजशात्र, धर्म तथा दर्शन ■पत्रकारिता ■सङ्गीत ■भाषण तथा संवाद विज्ञान ■व्याकरण, भाषा और कोश ■लोक-साहित्य/ भोजपुरी साहित्य ■संत-साहित्य ■कबीर-साहित्य ■आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य-समीक्षा ■प्रेमचंद-साहित्य ■प्रसाद-साहित्य ■उपन्यास ■कहानी (मौलिक कृति) ■हास्य-व्यंग्य ■संस्मरण, जीवनचरित यात्रा तथा डायरी ■मनीषी, संत महात्मा ■अध्यात्म, योग, तंत्र, दर्शन ■योग, स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व ■बाल साहित्य

विश्वविद्यालय प्रकाशन

पोस्ट बॉक्स नं० 1149, विशालाक्षी भवन, चौक (चौक पुलिस स्टेशन के पास)

वाराणसी-221001 (यू०पी०) भारत

फोन व फैक्स : (0542) 2413741, 3413082 (का०), 2436498, 2311423 (नि०)

ई-मेल : sales@vvpbooks.com • वेबसाइट : www.vvpbooks.com

सम्मान-पुरस्कार

साहित्य अकादमी सम्मान

संथाल परगना (झारखण्ड) पथर गामा गाँव में जन्मे **ज्ञानेन्द्रपति** बिहार में जेल अधिकारी की नौकरी और घरद्वार छोड़कर 1990 से काशी में आ बसे और काशी के भूगोल को, प्रकृति को, लोकजीवन को देखा ही नहीं, अनुभव किया

और समय-समय पर अपनी कविताओं में उसे अभिव्यक्त करते रहे। 24-25 फरवरी 2007 को ज्ञानेन्द्रपति को काशी में नागरी नाटक मण्डली सभागार में **पहल सम्मान** प्रदान किया जायगा। इसकी चर्चा चल ही रही थी कि साहित्य अकादमी ने ज्ञानेन्द्रपतिजी को उनकी दूसरी काव्य-कृति '**संशयात्मा**' को इस वर्ष के **साहित्य अकादमी पुरस्कार** के लिए चुना गया। 44 कृतियों में से 'संशयात्मा' का चयन हुआ। निर्णायक मण्डल में थे—डॉ० राममूर्ति त्रिपाठी, नंदकिशोर नवल और ममता कालिया।

'शब्द लिखने के लिये ही कागज बना है', 'गंगा तट' और 'भिनसार' के बाद 'संशयात्मा' ज्ञानेन्द्रपति की चौथी रचना है।

भारतीय भाषाओं के लिए साहित्य अकादमी द्वारा घोषित अन्य कृति और कृतिकार—

उर्दू : 'रास्ता और मैं' मख्मूर सईदी, **मैथिली** : 'काठ' प्रो० विभूति आनन्द, **असमिया** : 'चिनेह जोरिर गाँधी' अतुलानंद गोस्वामी, **बांग्ला** : 'अमर मित्र बोडो सानमोखांआरि लामाजो' कातिन्द्र सोरगियारि, **डोगरी** : 'कोरे काकल कोरिया तालियाँ' दर्शनदर्शी, **गुजराती** : 'आटानो सूरज' रतिलाल अनिल, **कश्मीरी** : 'याद आसमां हिन्ज' शफी शौक, **मलयालय** : 'चूवन्न चिन्नडळ' एम० सुकुमारन, **मणिपुरी** : 'नूंगशिबी ग्रीस' शरतचन्द थियम, **मराठी** : 'भूमी' आशा बगे, **नेपाली** : 'द्रोह', भीम दाहाल, **ओडिया** : 'स्वरोदय' बंशीधर षडंगी, **पंजाबी** : 'इश्क बाझ नमाज दा हज नाही' अजमेर सिंह औलख, **राजस्थानी** : 'पूर्णमिदम्' लक्ष्मीनारायण रंगा, **संस्कृत** : 'तव स्पर्श स्पर्श' हर्षदेव माधव संथाली, **सिन्धी** : 'धर्ती अ०जो० सडु' कीरत बाबाणी, **तमिल** : 'आकयतुक्कु' मु० मेता, **तेलुगु** : 'अस्तित्वनदम आवली तीराना' मुनिपल्ले राजू। इस वर्ष सात कविता संग्रह, चार उपन्यास, चार कहानी संग्रह, तीन नाटक, तीन ललित निबन्ध, एक यात्रा संस्मरण तथा एक आत्मकथा को पुरस्कृत किया गया।

वाचस्पति, बिहारी व शंकर पुरस्कार घोषित

के०के० बिड़ला फाउण्डेशन ने वर्ष 2006 के वाचस्पति, बिहारी तथा शंकर पुरस्कारों की घोषणा कर दी है। पन्द्रहवाँ **वाचस्पति पुरस्कार** डॉ० भास्कराचार्य त्रिपाठी को उनकी कृति '**साकेतसौरभम्**' (महाकाव्य) के लिए दिया जायेगा। इसकी पुरस्कार राशि एक लाख रुपये है।

बिहारी पुरस्कार सुश्री अलका सरावगी को उनके उपन्यास '**शेष कादम्बरी**' के लिए तथा **शंकर पुरस्कार** डॉ० शान्ति जैन की पुस्तक '**लोकगीतों के सन्दर्भ और आयाम**' (प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी) को दिया गया है। बिहारी पुरस्कार की राशि एक लाख रुपये है। शंकर पुरस्कार की राशि डेढ़ लाख रुपये है। इस वर्ष के शंकर पुरस्कार से सम्मानित 'लोकगीतों के सन्दर्भ और आयाम' डॉ० शान्ति जैन का लिखा एक बृहद ग्रन्थ है जो पूरे उत्तर भारत के लोकगीतों पर आधारित है। पुस्तक में लोकगीतों के साहित्यिक सौन्दर्य के विश्लेषण-विवेचन के साथ उनके सांगीतिक पहलुओं पर भी प्रकाश डाला गया है। फाउण्डेशन के निदेशक बिशन टण्डन के अनुसार संस्कृत कृतियों को सम्मानित करने के उद्देश्य से वर्ष 1992 में फाउण्डेशन ने वाचस्पति पुरस्कार की शुरुआत की थी।

विश्वभारती पुरस्कार राशि बढ़ी

संस्कृत संस्थान, उत्तर प्रदेश ने विश्वभारती पुरस्कार की सम्मान धनराशि 1 लाख रुपये बढ़ा दी है। अब यह पुरस्कार 2 लाख 51 हजार रुपये का होगा। अभी तक 1 लाख 51 रुपये दिए जाते थे। संस्थान, नारद और व्यास नाम से दो नये पुरस्कार भी शुरू करने जा रहा है।

व्यास पुरस्कार 1 लाख और नारद पुरस्कार 51 हजार रुपये का होगा। व्यास पुरस्कार पुराण और धर्मशास्त्र के संस्कृत विद्वान को दिया जाएगा। नारद पुरस्कार संस्कृत पत्रकारिता के लिए दिया जाएगा। वाल्मीकि पुरस्कार 1 लाख रुपये का ही रहेगा। इसके अलावा विशिष्ट, नामित, वेद पण्डित, विशेष तथा विविध पुरस्कारों की धनराशि भी पूर्ववत रहेगी।

डॉ० अर्जुनदास केसरी

साहित्यकार एवं लोकवार्ताकार डॉ० अर्जुनदास केसरी को उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 2 लाख रुपये का पं० दीनदयाल उपाध्याय सम्मान प्रदान किया गया। यह सम्मान भारत- भारती के बाद सर्वोच्च नामित सम्मान है। डॉ० अर्जुनदास केसरी की अब तक कुल 36 कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें से अधिकतर लोक साहित्य, संस्कृति, लोकजीवन और कला विषयक हैं। पूर्व में आपकी कृति 'लोरिकायन' नामित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार से सम्मानित हो चुकी है।

रामेश्वर पाण्डेय पतंग सम्मानित

'वर्तिका' के सम्पादक, कविवर श्री रामेश्वर पाण्डेय पतंग को भारतीय साहित्यकार संसद, समस्तीपुर द्वारा जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय शिखर सम्मान, देव साहित्य संस्कृति परिषद्, गोपालपुर, विद्यापति नगर द्वारा आरसी प्रसाद सिंह, सम्मान तथा खानकाह सूफी दीदार चिश्ती, कल्याण (महाराष्ट्र) द्वारा मानव काव्य-रत्न सम्मानप्राप्त हुआ।

डॉ० आदित्य प्रचण्डिया को 'साहित्यश्री' सम्मान

डॉ० राकेश गुप्त द्वारा अपनी जीवनसंगिनी स्व० श्रीमती तारावली गुप्त की स्मृति में दिया जाने वाला 'साहित्यश्री' सम्मान इस वर्ष डॉ० आदित्य प्रचण्डिया को प्रदान किया गया। प्रो० कृष्ण सहाय सक्सेना की अध्यक्षता में सम्पन्न इस आयोजन में डॉ० राकेश गुप्त ने 5100 की राशि भेंट कर डॉ० प्रचण्डिया को सम्मानित किया। 'ग्रन्थायन के व्यवस्थापक' अभयकुमार गुप्त ने वाग्देवी प्रतिमा भेंट की और डॉ० गोपालबाबू शर्मा ने शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया। अध्यक्ष प्रो० कृष्ण सहाय सक्सेना ने 'साहित्यश्री' सम्मान का प्रमाण-पत्र समर्पित किया।

सूर्यकुमार पाण्डेय को लाला बालकराम आहूजा स्मृति सम्मान

गत दिनों कानपुर में आयोजित मानस मंच के रामायण मेले में लाला बालकराम आहूजा स्मृति सम्मान प्रसिद्ध कवि एवं व्यंग्य स्तम्भकार सूर्यकुमार पाण्डेय को उनके व्यंग्य विधा में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया। मंच की ओर से उन्हें अंगवस्त्रम, सम्मानपत्र, प्रतीक चिह्न तथा सम्मान राशि भेंट की गयी। इस अवसर पर संयोजक रघुराजशरण अवस्थी ने कृष्णमित्र (गाजियाबाद), डॉ० विष्णु सक्सेना (अलीगढ़) तथा सुनील बाजपेयी (कानपुर) को भी सम्मानित किया।

काकादेव कानपुर में आयोजित इस मेले में गिरिजाशंकर दीक्षित 'गिरिजेश' की पुस्तक 'समय चक्र' का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर रात्रि में एक विराट कवि सम्मेलन भी आयोजित हुआ, जिसका संचालन शशिकान्त यादव (भोपाल) ने एवं संयोजन डॉ० सुरेश अवस्थी ने किया।

बुद्धिनाथ मिश्र को 'बच्चन' सम्मान

प्रसिद्ध कवि एवं साहित्यकार डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र को गत दिनों लखनऊ में आयोजित अखिल भारतीय मंचीय कवि परिषद के 'रंग स्मृति समारोह' में गीत विधा में विशिष्ट योगदान के लिए 'हरिवंश राय बच्चन सम्मान' से सम्मानित किया गया। परिषद की ओर से उन्हें शाल, सम्मान पत्र, स्मृति चिह्न व 11 हजार रुपये की

राशि भेंट की गयी। हिन्दी और मैथिली के चर्चित रचनाकार डॉ० मिश्र सम्प्रति ओएनजीसी, देहरादून में मुख्य प्रबन्धक (राजभाषा) के पद पर कार्यरत हैं।

समारोह के मुख्य अतिथि वरिष्ठ कवि गोपालदास 'नीरज', अध्यक्ष गीतकार श्री सोम ठाकुर तथा विशिष्ट अतिथि कवि एवं सांसद श्री उदयप्रताप सिंह एवं श्री केशरीनाथ त्रिपाठी थे।

इस अवसर पर वरिष्ठ कवि श्री आत्मप्रकाश शुक्ल को 'उपलब्धि सम्मान', श्री माहेश्वर तिवारी को 'वीरेन्द्र मिश्र सम्मान' एवं श्री कैलाश गौतम सहित 20 साहित्यकारों को 'शारदा सम्मान' से अभिषिक्त किया गया।

राष्ट्रधर्म सम्मान

स्व० श्रीकृष्णदास माहेश्वरी की स्मृति में राष्ट्रधर्म, लखनऊ ने इस वर्ष पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी चेतना के उन्नायक मणिपुरी संस्कृत के सेवक आचार्य **डॉ० राधागोविन्द पाण्डेय** 'कविराज' को राष्ट्रधर्म सेवा सम्मान स्वरूप 21,000 रुपये की राशि प्रदान की गयी।

राष्ट्रधर्म गौरव सम्मान 20,000 रुपये से डॉ० सन्तोष तिवारी, सागर को उनकी श्रेष्ठ कृति 'अज्ञेय से अरुण कमल तक' तथा सुश्री अंजलि भारती, लखनऊ को उनके कालजयी उपन्यास 'दहक' पर प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त कहानी प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार सुश्री मुनीन्द्र, सतना; द्वितीय पुरस्कार डॉ० श्याम सखा 'श्याम', रोहतक; तृतीय पुरस्कार डॉ० विश्वमोहन कुमार शुक्ल, पटना को। व्यंग्य लेख का प्रथम पुरस्कार श्री मनोहर पुरी, द्वितीय पुरस्कार श्री अनुराग वाजपेयी, तृतीय पुरस्कार श्री श्रीनाथप्रसाद को प्रदान किया गया। ये सभी सम्मान व पुरस्कार 29 अक्टूबर 2006 को निराला नगर, लखनऊ में दिये गये।

कन्नड़ कवि शिवरुद्रप्पा को राष्ट्रकवि की उपाधि

कर्नाटक सरकार ने जानेमाने कन्नड़ कवि और साहित्यकार डॉ० जी०एस० शिवरुद्रप्पा को राष्ट्रकवि की उपाधि से अलंकृत किया है। मुख्यमंत्री एच०डी० कुमारस्वामी ने यहाँ आयोजित एक समारोह में डॉ० शिवरुद्रप्पा को इस उपाधि से सम्मानित किया। डॉ० शिवरुद्रप्पा का जन्म सन् 1926 में राज्य के शिमोगा जिले के शिकापुरा नगर में हुआ था। उन्होंने लगभग पाँच दशकों तक मैसूर, बेंगलूर और उस्मानिया विश्वविद्यालय में कन्नड़ भाषा में शिक्षक के रूप में कार्य किया। उन्हें पूर्व में सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार, कर्नाटक राज्योत्सव पुरस्कार सहित कई उपाधियों और पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

डॉ० व्यास को पत्रकारिता सम्मान

रायपुर में पं० बृजलाल द्विवेदी स्मृति अखिल साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान 2006 मासिक पत्रिका 'वीणा' के सम्पादक डॉ० श्यामसुन्दर व्यास को प्रदान किया गया है। इन्दौर से वर्ष 1927 से प्रकाशित हो रही पत्रिका वीणा को 80 वर्ष के साहित्यिक योगदान के लिए यह सम्मान दिया गया है। डॉ० व्यास 35 साल से इसके सम्पादक हैं। सम्मान की संयोजक श्रीमती भूमिका द्विवेदी ने बताया कि हिन्दी की स्वस्थपत्रकारिता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से स्थापित पुरस्कार के तहत साहित्यिक पत्रिका का उत्कृष्ट सम्पादन करने वाले सम्पादक को 11 हजार रुपये व स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया जाता है।

डॉ० स्वामी श्यामानन्द सरस्वती को आचार्य सम्मान

डॉ० श्यामानन्द सरस्वती 'रौशन' को आचार्य सम्मान भेंट करते हिन्दी के वरिष्ठ कवि प्रो० नंद चतुर्वेदी

साहित्यिक पत्रिका 'सम्बोधन' की ओर से वर्ष 2006 का आचार्य निरंजननाथ सम्मान प्रसिद्ध गजलकार डॉ० स्वामी श्यामानन्द सरस्वती 'रोशन' को उनके गजल संग्रह **'सुर बाँसुरी के'** के लिए प्रदान किया गया।

सम्मान के मुख्य अतिथि साहित्यकार **श्रीराम मेश्राम** ने 87 वर्षीय डॉ० स्वामी को शाल ओढ़ाकर, स्वागताध्यक्ष **श्री मधुसूदन पाण्डया** ने प्रशस्ति-पत्र, समारोह अध्यक्ष **प्रो० नन्द चतुर्वेदी** ने स्मृति चिह्न व श्रीफल एवं सम्मान समिति के अध्यक्ष **कर्नल देशबन्धु आचार्य** एवं **सुधा आचार्य** ने सम्मान राशि 11,000 रुपये भेंट कर अभिनन्दन किया। समारोह के अध्यक्ष कवि एवं चिन्तक प्रो० नन्द चतुर्वेदी ने कहा कि समाज में भाषाओं की मैत्री, सामाजिक समरसता के लिए शुभ संकेत है।

साहित्य परिषद राजस्थान द्वारा भगवतीशरण मिश्र सम्मानित

अखिल भारतीय साहित्य परिषद, राजस्थान ने सुप्रसिद्ध उपन्यासकार डॉ० भगवतीशरण मिश्र को पं० हीरालाल शुक्ल एवं श्रीमती रामेश्वरी देवी शुक्ल पुरस्कार से सम्मानित किया। अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिलब्ध लेखक को परिषद के निदेशक रमेशकुमार शर्मा ने उनके पश्चिम विहार, नयी दिल्ली स्थित आवास पर एक सादे समारोह में यह पुरस्कार प्रदान किया। इसके पूर्व बीकानेर में डॉ० भगवतीशरण मिश्र के कथा साहित्य विषय पर अखिल भारतीय साहित्य परिषद, राजस्थान ने एक राज्यस्तरीय संगोष्ठी आयोजित की थी। इस अवसर पर 12 से अधिक साहित्यकारों एवं विद्वानों ने पवन पुत्र, पहला सूरज, पीताम्बरा, पद्मनेत्रा, पावक, आरण्या एवं अग्निपुत्र समेत ने डॉ० मिश्र की विभिन्न औपन्यासिक कृतियों पर शोध-पत्रों का वाचन किया।

रामास्वामी को जी०डी० बिरला पुरस्कार

के०के० बिरला फाउण्डेशन द्वारा वर्ष 2006 के लिए संस्थान द्वारा प्रवर्तित वैज्ञानिक शोध पर जी०डी० बिरला पुरस्कार प्रो० श्रीराम रामास्वामी को दिया गया। प्रो० रामास्वामी को डेढ़ लाख रुपये, प्रशस्ति पत्र, श्रीफल व अंगवस्त्र दिया गया। पुरस्कार प्रदान करते हुए ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि के०के० बिरला फाउण्डेशन के पुरस्कार न केवल प्रेरक व प्रतिष्ठापूर्ण हैं बल्कि जीवन मूल्यों के प्रति आस्था जगाने वाले रचनात्मक कार्यों के लिए ऊर्जा का संचार करते हैं।

फाउण्डेशन के अध्यक्ष के०के० बिरला ने इन पुरस्कारों की सार्थकता व विद्वत परिषद् के निर्णय के बाद पुरस्कार विजेताओं के नाम घोषित करने की शुचिता को सर्वोपरि बताया।

डॉ० गिरिजाशंकर त्रिवेदी सम्मानित

लघुकाशी के रूप में विख्यात जनपद खीरी लखीमपुर के पुण्य क्षे गोला गोकर्णनाथ में गत 16 दिसम्बर को वरिष्ठ साहित्यकार तथा पत्रकार तथा अन्त्याक्षरी अभियान के पुरस्कर्ता डॉ० गिरिजा शंकर त्रिवेदी का क्षेत्रीय साहित्यकारों की ओर से सारस्वत सम्मान किया गया। डॉ० अनन्तराम मिश्र 'अनन्त' तथा आयोजक प्राचार्य महेन्द्र त्रिपाठी ने पारम्परिक रूप में अंगवस्त्रम्, श्रीफल तथा प्रशस्ति पत्र भेंट कर मुख्य अतिथि डॉ० त्रिवेदी को अभिनन्दित किया।

इस अवसर पर त्रिवेदीजी ने कवि सुरेशकुमार शुक्ल प्रणीत काव्य संग्रह 'जीवन के सोपानों में' तथा कवि रामकृष्ण मिश्र रचित काव्य कृति 'जीवन राग' का लोकार्पण किया। अपने उद्बोधन में उन्होंने आदिकवि वाल्मीकि और क्रौंच-क्रौंची प्रसंग को सन्दर्भित करते हुए कहा कि अन्ध भौतिकवाद का व्याध जीवन मूल्य के क्रौंच को जब अपना निशाना बनाता है, तब मानवता की क्रौंची विलख उठती है और कवि के हृदय में एक ओर करुणा तो दूसरी ओर क्रोध फूट पड़ता है। व्याध के प्रति शाप और क्रौंची के प्रति

करुणा। इस प्रकार आग और पानी का सन्धि पत्र बनकर कविता रूपायित हो उठती। इस प्रकार कविता का सीधा सम्बन्ध मानवता से है।

डॉक्टर हरिनारायण दीक्षित को श्रीवाणी अलंकरण पुरस्कार

भारतवर्ष के प्रतिष्ठित 'न्यास रामकृष्ण जयदयाल डालमिया श्रीवाणी न्यास, नई दिल्ली' द्वारा वर्ष 2006 के लिए डॉक्टर हरिनारायण दीक्षित, प्राक्तन प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग तथा प्राक्तन अधिष्ठाता कलासंकाय, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल (उत्तरांचल) को उनकी संस्कृत-साहित्य की प्रशंसनीय रचनाओं के आधार पर 'श्रीवाणी अलंकरण सम्मान पुरस्कार' के लिए चयनित किया गया है। उन्हें यह पुरस्कार (18 जनवरी, 2007 लोकसभा अध्यक्ष श्री सोमनाथ चटर्जी द्वारा) को एक अति भव्य समारोह में संस्कृत के प्रतिष्ठित विद्वानों, न्यायविदों, राजनीतिज्ञों एवं भारत के गणमान्य नागरिकों की गरिमामयी उपस्थिति में प्रदान किया गया।

इस समारोह में डॉ० दीक्षित को दो लाख रुपये की पुरस्कार राशि, प्रशस्ति पत्र, श्रीवाणी की प्रतिमा, मंगलवस्त्र तथा श्रीफल देकर सम्मानित किया गया।

रूपा बाजवा को साहित्य अकादमी अवार्ड

रूपा बाजवा को उनके पहले अंग्रेजी उपन्यास 'द साड़ी शाप' के लिए साहित्य अकादमी अवार्ड दिया जाएगा। तीस वर्षीय बाजवा और अन्य अवार्ड पाने वाले लोगों को 20 फरवरी को एक विशेष आयोजन में 50 हजार रुपये और ताम्रपत्र दिया जाएगा।

दादाजी मैं सोनियाँ गाँधी को जानता हूँ, राहुल गाँधी को भी जानता हूँ, पर यह महात्मा गाँधी कौन है?

— गाँधीजी के निर्वाण दिवस की स्मृति में

कथन

आमजन कैसे?

विश्व की सारी राज्य व्यवस्थाएँ, संविधान, दर्शन और चिन्तन प्रणालियों का केन्द्र मनुष्य जीवन है। मनुष्य जीवन नष्ट हो रहा है। हत्या, अपहरण और अन्य अपराध जारी है। सरकार बहुमत में है। संविधान व्यवस्था ठीक है। प्रश्न है—इन परिस्थितियों में आमजन किससे रोए और कैसे रोए? **—हृदयनारायण दीक्षित**

हाशिये का समाज और भूमण्डलीकरण

भूमण्डलीकरण एक ऐसी व्यवस्था है जो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के रथ पर सवार होकर आया है। उसने न केवल समाज के रिश्तों को बदल दिया है बल्कि हाशिये की जनता को भी धीरे-धीरे उपभोक्ता में बदलना शुरू कर दिया है। भूमण्डलीकरण ने राष्ट्रराज की सम्प्रभुता को खत्म कर दिया है। असमानता, एकाधिकार व हिंसा पर आधारित इस व्यवस्था के संचालक संगठनों में विश्व व्यापार संगठन, विश्व बैंक व अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोष प्रमुख हैं।

उदारीकरण के चलते उपजी प्रतिस्पर्धा से सिर्फ उच्च वर्ग ही लाभान्वित हो रहा है। हाशिये का समाज धीरे-धीरे नष्ट होता जा रहा है।

—रामशरण जोशी
उपाध्यक्ष, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

पिछले दस वर्षों में देश के एक लाख किसानों ने आत्महत्या की है। नवसाम्राज्यवाद भूमण्डलीकरण का दूसरा नाम है। देश की सरकार साम्राज्यवाद और जनता के बीच में दलाल की भूमिका में है। **—पंकज बिष्ट**

साहित्य में प्रतिरोध और मुखर होगा

इस साल जिस तरह का साहित्य हमें देखने को मिला है, वह भविष्य के लिए उम्मीद बाँधता है। कविता की दुनिया में देखें तो कई नाम ऐसे हैं जो इस वर्ष अपनी कविताओं से समय की आवाज बने हैं। मुझे सबके नाम याद नहीं आते, लेकिन हरिश्चन्द्र पाण्डेय, रवीन्द्र स्वप्निल प्रजापति आदि कुछ ऐसे हवाले हैं जो भविष्य में बेहतर शक्ल ले सकते हैं। इस तरह के युवा कवियों के हिसाब से देखें तो कह सकते हैं कि कविता में नई प्रवृत्ति बनती हुई दिखाई दे रही है जो खुद को इक्कीसवीं सदी की लय के साथ जोड़ रही है। गद्य लेखन में नए प्रयोग हो रहे हैं। खासकर, आत्मवृत्तांत लिखने की परम्परा ने गद्य को नए आयाम दिए हैं। इस साल सूरजपाल चौहान की जो आत्मकथा आई है, और कुछ संस्मरण व पत्र-लेखन की किताबें भी आई हैं, वे भविष्य की तस्वीर खुद-ब-खुद बनाती हैं। कई पत्रिकाएँ इस साल आईं, कई की घोषणा है और इन्तजार भी। ये सब मिलाकर हम कह सकते हैं कि हिन्दी साहित्य में गतिमयता बनी हुई है, माहौल अब भी सरगर्म है और साहित्य अपनी खास आवाज लेकर सामने आ रहा है। बहुत लम्बे समय तक हम अपने समय के लेखन के लिए समकालीनता का प्रयोग करते रहे हैं। मुझो लगता है कि अब इस समकालीनता को तोड़ कर ही नई धारा का निर्माण होगा। वह धारा कैसी होगी, इसकी भविष्यवाणी करना कठिन है, लेकिन साहित्य से बाहर की दुनिया में इस वर्ष कई ऐसी घटनाएँ घटी हैं जिनका असर साहित्य पर निश्चित ही पड़ेगा। राजनीति जबकि शून्य में चली गई है औरा बाजारीकरण व वैश्वीकरण के हमले तीखे होते जा रहे हैं, ऐसी स्थिति में लेखक, जिसके भीतर मूल्य चेतना अब भी बची है, प्रतिरोध कर रहा है। उसके भीतर चुपचाप एक संघर्ष चल रहा है जो प्रतिरोध के रूप में मुखर होकर अपने समय की आवाज बन रहा है। मेरा मानना है कि साहित्य में यह प्रतिरोध आने वाले दिनों में और मुखर होगा। **—केदारनाथ सिंह**

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय पुरातन छात्र समागम

कहाँ है मेरा वह बी०एच०यू

महामना जब अपने अन्तिम समय में बीमार थे, कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने एक कविता उन्हें प्रेषित की थी, जिसका सार था—''जिस भारत का सपना हमने देखा वह अब आजाद होने को है, लेकिन जिस भारत का सपना देखा वह भारत कहाँ है?'' आज विश्वविद्यालय में आकर मुझे भी लग रहा है कि ''मेरा वह बी०एच०यू० कहाँ है?'' मैं जो भी हूँ, आज महामना का प्रसाद हूँ मेरे पास पैसा तो नहीं है, लेकिन जिन पुस्तकों ने मेरे जीवन को आलोकित किया, मेरे बाद वह इस विश्वविद्यालय पुस्तकालय की शोभा बढ़ायेंगी।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय यदि संयुक्त परिवार है तो कला संकाय मेरा मातृकुल है और आज भी मुझे इस कुल की सन्तान होने का गर्व है।

—डॉ० नामवर सिंह

बढ़ो तो इतना बढ़ो कि खुद मंजिल लोहा मान ले,
पढ़ो तो इतना पढ़ो कि खुद पुस्तक तुमसे ज्ञान ले।

—युगराज

महामना के बारे में पढ़ा और सुना था, यहाँ आकर लगा जितना लिखा गया था, जो बातें मेरी जानकारी में हैं, वह बहुत कम है। शिक्षा में नैतिकता और संस्कार का होना आवश्यक है, मैं समझता हूँ महामना ने इन्हीं मूल्यों को पिरोकर युवाओं को शिक्षित किया और उनके शिक्षा मन्दिर में यह क्रम आज भी जारी है।

—एरिक नीके, राजदूत, नीदरलैण्ड

मैंने कोई ऐसा लेखक नहीं देखा जो अपने लेखन कार्य को लेकर शर्मिंदा महसूस करता हो। **—विलियम एम० थैकरे** (उपन्यासकार)

यत्र-तत्र-सर्वत्र

सांस्कृतिक आत्म-विश्लेषण 2006

समय अविभाज्य सत्ता है। दिन और रात सूर्योदय और सूर्यास्त के प्रतिफल है। भूतकाल सिर्फ हमारी स्मृतियाँ हैं और भविष्यकाल आकांक्षाएँ। स्मृति और आकांक्षा से 'मुक्त मन' के लिए काल विभाजन जैसी कोई सत्ता नहीं होती। सारा खेल मन और आकांक्षाओं का है।

संस्कृति राष्ट्र का प्राण है, भूमि जन और राज्यव्यवस्था राष्ट्र की देह है। परम्परा के अनुसार भारत को अपने सांस्कृतिक अधिष्ठान का विश्लेषण करना चाहिए। भारत की राष्ट्र-राज्य सम्प्रभुता पर खतरे में है। भारत की कोई राष्ट्रीय सांस्कृतिक नीति नहीं है। साहित्य संस्कृति की भाषाई अभिव्यक्ति होता है। चित्रकला, नृत्य, मूर्तिकला और स्थापत्य गैरभाषाई अभिव्यक्तियाँ हैं। सिनेमा में दोनों हैं। गुजरे दो-ढाई दशक से देह अभिव्यक्ति ही साहित्य और कला का मूल केन्द्र है। अब समूचा सांस्कृतिक परिदृश्य काम उद्दीपन में है। बहुप्रतिष्ठित पत्रिकाएँ काम को दाम बना रही हैं।

हिन्दी अपने दम पर राष्ट्रभाषा है, संविधान में वह राजभाषा है। पहले सूबाई भाषाई राजनीति की उस पर हमलावर थी, अब तमाम हिन्दी लेखक, पत्रकार और समाचारवाचक भी हिन्दी का रूप-स्वरूप बिगाड़ रहे हैं। वह उच्च वर्ग की भाषा पहले भी नहीं थी। हीनभावग्रस्त उच्चवर्ग अंग्रेजी में ही रोता, हंसता और गुस्साता था, मध्यवर्ग इसी की नकल में हिन्दी भी अंग्रेजी में बोलता है।

भारत का लोकमन सहज कलाप्रेमी है। भारतीय कला का मूल तत्व रस है, लेकिन 2006 के सिनेमा में न रस है, न आनन्द। नृत्य सौन्दर्य रस नहीं है। देह अब परम है।

साहित्यकार पत्रकार मनोहरश्याम जोशी, भानुप्रताप शुक्ल और वचनेश त्रिपाठी विदा हो गए। संगीतकार नौशाद, शहनाई शहंशाह बिसमिल्लाह खाँ और फिल्मकार ऋषिकेश मुखर्जी भी छोड़ गए। जर्मन चिंतक विलियम हास ने 'द डेस्टिनी ऑफ माइंड' में ठीक कहा कि समय सभी जीवंत वस्तुओं का दुश्मन है। काल सबको आवृत्त करता है पर संस्कृति सत्य के आग्रही समाज काल को अनुकूल रखते हैं। संस्कृति संवर्द्धन व रक्षण राष्ट्रीय चुनौती है। संस्कृति बचेगी तो राष्ट्र रहेगा वरना भारत मौलिक पहचान खो देगा। **—हृदयनारायण दीक्षित**

कृतज्ञता के कोष कृपणता

आज जब महादेवीजी और आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का शताब्दी वर्ष चल रहा है, मेरे मन में यह व्यथा है कि भारत के नागरिक समाज को क्या हो गया है? विश्वविद्यालयों की मति क्यों मारी गई है कि इन शताब्दियों को मनाने के लिए जो उत्साह होना चाहिए, वह दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है? इलाहाबाद में भी कोई हरकत नजर नहीं आती। बनारस विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय एवं शान्ति निकेतन को आचार्य हजारीप्रसाद के शताब्दी समारोह मनाने चाहिए और उनका राष्ट्रीय सम्प्रेषण चाहिए। उनके जीवन पर साहित्य अकादेमी को फिल्म बनवानी चाहिए। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी बरसों आचार्य पद पर आसीन थे। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय एवं चण्डीगढ़ में उन्होंने हिन्दी में उच्च शिक्षा के नए कीर्तिमान स्थापित किए। क्या वहाँ कृतज्ञता के कोष में कृपणता स्थानापन्न हो गई है? **—लक्ष्मीमल्ल सिंघवी**

पत्रिकाओं की प्रदर्शनी

देश के विभिन्न अंचलों से प्रकाशित विभिन्न प्रकार की पत्रिकाओं को संकलित कर स्थान-स्थान पर उनकी प्रदर्शनी लगाकर कैलाश त्रिपाठी समाज में पत्रिकाओं के प्रति जनजागृति कर रहे हैं। वे अजीतमल, औरैया एवं विधूना आदि में कई-कई बार स्थान-स्थान पर अखिल भारतीय पत्रिका प्रदर्शनी का आयोजन कर चुके हैं। 19 नवम्बर 2006 को विधूना में उत्तर प्रदेश के पूर्व विधानसभा अध्यक्ष श्री केशरीनाथ त्रिपाठी के साथ कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम श्री टी०एन० चतुर्वेदी द्वारा उनकी पत्रिका प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए पत्रिकाओं के विशाल संकलन को देखकर आयोजक की प्रशंसा की तथा पत्रिका प्रदर्शनी को समाज के लिए बहु उपयोगी बताया।

पुरस्कार राशि का वितरण बेरोजगारों को

'समयांतर' के सम्पादक पंकज विष्ट को पिछले दिनों केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा से एक लाख रुपये गणेशशंकर विद्यार्थी पत्रकारिता पुरस्कार स्वरूप प्राप्त हुए थे। 17 दिसम्बर 2006 को श्री विष्ट सारनाथ, वाराणसी के छाँही गाँव में संस्थान के उपाध्यक्ष श्री रामशरण जोशी तथा साहित्यकारों और बुद्धिजीवी की टोली के साथ पहुँचे और गाँव के 13 लोगों को स्वरोजगार हेतु सारी राशि वितरित की।

डॉ० विवेकी राय के उपन्यासों पर पी-एच०डी०

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ०प्र०) से वर्ष 2006 में श्री चन्द्रशेखर तिवारी ने 'विवेकी राय के उपन्यासों में स्वातंत्र्योत्तर ग्राम जीवन का स्वरूप' शीर्षक पर डॉ० मान्धाता राय, प्राचार्य स्वामी सहजानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर (उ०प्र०) के निर्देशन में पी-एच०डी० की डिग्री प्राप्त की है।

डॉ० विवेकी राय विगत छः दशकों से भी अधिक समय से साहित्य-सृजन में लगे हुए हैं। अपनी इतनी लम्बी सृजन-यात्रा में उन्होंने स्वातंत्र्योत्तर भारतीय गाँवों का विविध कोणों से अपने समग्र साहित्य खासकर औपन्यासिक साहित्य में बखूबी चित्रण किया है। 'बबूल', 'पुरुष पुराण', 'लोकऋण', 'श्वेत पत्र', 'सोनामाटी', 'समर शेष है', 'मंगलभवन', 'नमामि ग्रामम', 'अमंगलहारी' व 'देहरी के पार' नामक अपनी कुल दस औपन्यासिक कृतियों के अलावा हिन्दी साहित्य की लगभग सभी विधाओं में उनकी करीब पैंतीस कृतियाँ अब तक प्रकाशित हो चुकी हैं और लगभग पाँच-सात रचनायें प्रकाशनाधीन (शीघ्र प्रकाश्य) हैं। अपनी सुदीर्घ रचनात्मक श्रृंखला और महान साहित्यिक प्रदेय के चलते डॉ० राय को तमाम राज्य व राष्ट्रस्तरीय सम्मान व पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। डॉ० राय पूर्वांचल के शायद अकेले ऐसे रचनाकार हैं जिन्हें भारत के तीन-तीन राष्ट्रपतियों—डॉ० राजेन्द्रप्रसाद, डॉ० शंकरदयाल शर्मा और डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम ने पुरस्कृत किया है।

एनसीईआरटी की पुस्तकों से आपत्तिजनक अंश हटे

राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसन्धान प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) ने जैन और सिख समुदाय की भावनाओं का आदर करते हुए इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों से आपत्तिजनक अंशों को निकाल दिया है। प्रसिद्ध इतिहासकार रामशरण शर्मा रोमिला थापर ओर विपिन चन्द्रा द्वारा एनसीईआरटी के लिए लिखी गयी पाठ्य-पुस्तकों से आपत्तिजनक अंशों को हटा दिया गया है। ग्यारहवीं कक्षा में इतिहास की पाठ्य-पुस्तक प्राचीन भारत से प्रो० आर०एस० शर्मा के दो अवतरणों को हटा दिया गया है और उनकी जगह नये अवतरण शामिल किए गये हैं। प्रो० रोमिला थापर की पुस्तक मध्यकालीन भारत तथा प्रो० विपिन चन्द्रा की पुस्तक आधुनिक भारत से भी कुछ अंशों को हटाया गया है। इसके अलावा बारहवीं कक्षा में प्रो० विपिन चन्द्र की किताब मार्डन इण्डिया के एक अवतरण को हटाया गयाहै और उसकी जगह नया अवतरण शामिल किया गया है। बारहवीं कक्षा में प्रो० विपिनचन्द्रा की

इतिहास की पुस्तक मॉर्डन इण्डिया में 18वीं तथा 19वीं सदी के जाटों के बारे में की गयी टिप्पणियों के सम्बन्ध में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने 24 अक्टूबर को एक दिशा निर्देश जारी किया है। इसके तहत सम्बद्ध स्कूल पुस्तक के इन अंशों को नहीं पढ़ा सकते और न ही परीक्षा में इससे प्रश्न पूछ सकते हैं।

पुस्तकों का संसार आपके द्वार

मध्य प्रदेश के राज्य शिक्षा केन्द्र 48 जिलामें में 26 जनवरी से पुस्तक मेले आयोजित करने जा रहा है। उद्देश्य है स्कूल के बच्चे और उनके अभिभावक मनपसन्द पुस्तकों का चयन करें और स्कूल उन्हें खरीदें। देखना है ऐसे पुस्तक मेलों में कितने लब्ध-प्रतिष्ठ प्रकाशक भाग ले सकेंगे? क्या उनके लिए यह व्यावहारिक होगा?

अन्धे को दी किताबें पढ़ने की सजा

मध्यकालीन शासकों के बेसिर पैर के आदेशों जैसा ही तुर्की में घटना हुई, जब यहाँ के एक दृष्टिहीन पेंशनभोगी को 26 दिन तक पुस्तकालय में किताबें पढ़ने और इन पर कुछ लिखने की सजा दी गई।

सजायाफ्ता इसमाइल केंसेवन का दोष सिर्फ इतनाथा कि उसने निकाय चुनाव में मतदान नहीं किया था।

अपराध तो अजीब है और सजा भी किसी तुगलकी फरमान से कम नहीं। उत्तर पश्चिम तुर्की में कुटहा प्रान्त निवासी 73 वर्षीय इस्माइल के पुत्र ने बताया कि पिता अब पुस्तकालय में क्या करेंगे जबकि वह दृष्टिहीन और पढ़ने-लिखने में पूरी तरह से अक्षम हैं।

विश्व हिन्दी सम्मेलन

आठवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन जुलाई-अगस्त 2007 में न्यूयार्क (अमेरिका) में होगा। भारतीय विद्या भवन, न्यूयार्क इसे सफल बनाने में प्रयत्नशील हैं।

www.questia.com
क्लिक करें और पहुँच जाएँ लाइब्रेरी

तकनीक के विकास से लाइब्रेरी भी अछूती नहीं रही है। तभी तो ऑनलाइन लाइब्रेरी आज समय की माँग बन गई है। माउस के एक क्लिक करने भर से आपकी तमाम किताबी जरूरतों को पूरा कर देती हैं ये लाइब्रेरीज।

ऐसी ही किताबों की अपनी अनोखी दुनिया है questia.com, विश्व की प्रमुख ऑनलाइन लाइब्रेरी में शुमार इस वेबसाइट की मदद से आप तकरीबन 67,000 किताबों और जर्नल्स को ऑनलाइन पढ़ सकते हैं।

इस वेबसाइट के होम पेज पर आपको विभिन्न सब्जेक्ट के तहत कई विषयों की लिस्ट मिलती है, जैसे—आर्ट, कम्युनिकेशन, इकोनॉमिक्स एण्ड बिजनेस, एजुकेशन, लॉ, म्यूजिक, साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी आदि। इन लिंक्स को क्लिक करके आप सम्बन्धित विषय पर लिखी गई कई किताबों और आर्टिकल्स को अपने कम्प्यूटर स्क्रीन पर ही पढ़ सकते हैं।

होम पेज पर ही आपको लाइब्रेरी एरिया ऑप्शन के तहत कई सब-ऑप्शंस मिलेगा, जैसे—रिसर्च टॉपिक, बुक प्रोफाइल, न्यूज-पेपर। रिसर्च टॉपिक्स लिंक पर क्लिक करने से आप कई विभिन्न विषयों पर आर्टिकल्स पढ़ सकते हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि ये विषय इस तरह व्यवस्थित हैं कि इन्हें ढूँढ़ना काफी आसान हैं यहाँ।

क्लास रूप ऑप्शन पर क्लिक कर आप अपने लिए ऑनलाइन कॉन्टेंट भी डेवलप कर सकते हैं। यहाँ एक ऑपशन आपको सर्च भी मिलता है, जहाँ आप अपनी जरूरत के हिसाब से किताब, पत्रिकाएँ, न्यूजपेपर आदि को भी सर्च कर सकते हैं। इस साइट की सहायता आप रिसर्च पेपर तैयार करने में भी ले सकते हैं, क्योंकि रिसर्च पेपर तैयार करने से सम्बन्धित कई स्टेप्स यहाँ बताए गए हैं।

भोजपुरी को वैधानिक मान्यता

भोजपुरी और राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने का विधेयक संसद के अगले सत्र में पेश किए जाने की सम्भावना है। विचारणीय है कि देश की 24 करोड़ की आबादी भोजपुरी भाषा बोलती है और दुनिया के 17 देशों में भोजपुरी बोलने वाले लोग हैं। गृह राज्यमंत्री श्री प्रकाश जायसवाल के अनुसार भोजपुरी और राजस्थानी दोनों भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की माँग काफी समय से उठती रही है, दोनों ही काफी समृद्ध भाषाएँ हैं और देश-विदेश में करोड़ों लोग इन्हें बोलते हैं। अब इस मामले में ज्यादा किन्तु-परन्तु की गुंजाइश नहीं लगती। उम्मीद की जानी चाहिए कि संसद के आगामी बजट सत्र में इन भाषाओं के लिए संविधान संशोधन का विधेयक पारित करा लिया जाएगा। प्रभुनाथ सिंह ने स्वतंत्रता संग्राम में भोजपुरी भाषा के योगदान का जिक्र करते हुए कहा कि चंपारन, जहाँ भोजपुरी बोली जाती है, वह महात्मा गाँधी की कर्मभूमि रहा है।

भिखारी ठाकुर की व्यथा थी—

केकरा केकरा नाम बताईं
सारे जग लुटेरवा हो,
गुरु लूटे, पुरोहित लूटे,
अउरी लूटे साहुकरवा हो।

अब तक भोजपुरी पर लगभग 500 फिल्में बन चुकी हैं, कितनी बन रही हैं। भोजपुरी पत्रिकाएँ भी प्रकाशित हो रही हैं। भले ही इसे अब मान्यता दी जा रही हो, लोकमानस ने इसे विगत पचास वर्षों से साहित्य, कला तथा संस्कृति भी भाषा स्वीकार कर ली है।

आठवीं अनुसूची में सम्मिलित 19 भाषाएँ—संस्कृत, हिन्दी, असमी, बंगाली, गुजराती, कन्नड़, कश्मीरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, सिंधी, तमिल, तेलुगू, उर्दू, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी और नेपाली।

अब साक्षर से सीधे स्नातक

अब स्नातक बनने के लिए न तो 10वीं पास करना जरूरी है और न ही न्यूनतम योग्यता दस जमा दो। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पत्राचार विभाग ने नई योजना चालू की है जिसमें किसी भी राज्य का वयस्क नागरिक आर्ट्स और कॉमर्स में स्नातक की डिग्री ले सकता है। यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन (यूजीसी) और नेशनल काउंसिल फॉर टीचर एजुकेशन (एनसीटीई) ने कुरुक्षेत्र विवि को इसकी मंजूरी दे दी है। विश्वविद्यालय ने हरियाणा सरकार से भी मंजूरी माँगी है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के वाइसचांसलर डॉ० आर०पी० हुड्डा के अनुसार जो व्यक्ति किसी कारणवश स्कूली पढ़ाई नहीं कर सके, लेकिन वे अब पढ़ाई करना चाहते हैं तो विश्वविद्यालय के पत्राचार विभाग ने उनके लिए एक योजना शुरू की है।

हैरी पॉटर को क्या पाठक मरने देंगे?

आखिरकार हैरी पॉटर को जन्म देने वाली जे०के० रोलिंग ने अपनी सातवीं किताब पूरी कर ली और इसी के साथ जल्द ही दुनिया भर के पाठकों का इन्तजार भी खत्म हो जाएगा।

'हैरी पॉटर एण्ड द डेथली हॉलोज' के नाम से प्रकाशित होने वाली इस किताब में पाठकों को युवा पॉटर के जादुई कारनामों के साथ उनके लव लाइफ के बारे में भी पढ़ने और जानने का मौका मिलेगा।

पुस्तक लिखते हुए रोलिंग ने कहा था कि हैरी पॉटर के जादुई कारनामों की यह आखिरी शृंखला है और इसमें पॉटर की मौत हो जाएगी। यह बात जानने के बाद से ही पॉटर के प्रशंसकों में बेचैनी और उत्सुकता बनी है कि आखिरकार इस पुस्तक का अन्त क्या होगा। पर पाठक क्या हैरी पॉटर को मरने देंगे?

कोलकाता का बोई पाड़ा

कोलकाता के कालेज स्ट्रीट पर छोटी-छोटी गुमटीनुमा पुस्तकों की दुकानों को बोई पाड़ा यानी पुस्तकों का बाजार नाम से जाना जाता है। ये छोटी-छोटी दूकानें पाँच पीढ़ियों से पटरी पर चल रही हैं। इन दुकानों में अक्सर कितनी दुर्लभ पुस्तकें मिल जाती हैं। इधर कोलकाता म्यूनिस्पल कारपोरेशन ने इन्हें हटाकर मार्किस स्क्वायर के पास एकमात्र पुस्तकों का विशाल बाजार (बुक माल) बनाने का निश्चय किया है। इस क्षेत्र में

प्रमुख शिक्षा संस्थाएँ—प्रेसीडेन्सी कॉलेज, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता मेडिकल कॉलेज आदि हैं। इन दुकानों से अध्येताओं को पुस्तकें खुले में देखने-परखने की सुविधा के साथ कम मूल्य में भी प्राप्त हो जाती है। बोई पाड़ा के पुस्तक विक्रेताओं को आशंका है कि विशाल पुस्तक केन्द्र में रख-रखाव तथा अन्य व्यय इतना अधिक होगा कि पाठकों को मनचाही पुस्तकें कम मूल्य में सुलभ करा सकना सम्भव नहीं होगा।

कोलकाता म्यूनिस्पल कारपोरेशन के मेयर विकासरंजन मुखर्जी का कहना है कि ये पुस्तक विक्रेता फेरी वाले हैं जिन्हें लाइसेंस प्राप्त है, यह बाजार सब्जी, कपड़ा तथा जूता विक्रेताओं का रहा है। उनका कहना है कि इन पुस्तक विक्रेताओं को उचित स्थान सुलभ कराया जायगा। कॉलेज स्ट्रीट का बोई पाड़ा इतिहास मात्र रह जायगा जो शताब्दी से अधिक समय तक पुस्तकों के लिए अपनी पहचान बनाये हुए था।

इतिहास और तटस्थता

वैश्वीकरण के इस दौर में जब दुनिया सिमटकर एक गाँव में तब्दील हो रही हो, तब मध्यकाल के मार-काट भरे इतिहास का कोई अर्थ नहीं रह जाता। कल के झगड़े आज की दोस्ती में बदल रहे हैं, तो इतिहास के प्रति नजरिया भी बदल रहा है। कल तक पाकिस्तान में जो कुछ इतिहास के नाम पर पढ़ाया जा रहा था, अब उसे बदला जा रहा है। इधर ब्रिटेन में भी जूनियर कक्षाओं में पढ़ाया जाने वाला इतिहास बदला जा रहा है। भारत में ब्रिटिश राज को लेकर एक नया अध्याय जोड़ा गया है। *ब्रिटिश साम्राज्य में भारत की भूमिका और भारतीय स्वाधीनता संग्राम* नामक इस अध्याय में जहाँ जालियांवाला बाग में जनरल डायर द्वारा किए गए सामूहिक नरसंहार का हवाला है, वहीं विंस्टन चर्चिल द्वारा गाँधीजी के बारे में की गई टिप्पणियों और कामसूत्र जैसे विषयों को शामिल किया गया है। जाहिर है, किसी भी नजरिये से ब्रिटिश कार्रवाइयों को जायज नहीं ठहराया जा सकता। इतिहास के पाठ्यक्रम के लिए बनी समिति के निदेशक क्रिस मैक्गावर्न भी स्वीकारते हैं कि मोटे तौर पर इस अध्याय का स्वर ब्रिटिश विरोधी है। इसलिए परम्परागत सोच वाले ब्रिटिश इतिहासकार इस बात पर खासे खफा हैं कि अब ब्रिटेन में ही ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ पढ़ाया जाएगा। वे इसे साम्राज्यवाद के बाद ब्रिटेन के खिलाफ रची गई साजिशों का एक हिस्सा बता रहे हैं। बहरहाल, यह एक दिलचस्प मुद्दा है कि किस तरह आपको अपने ही इतिहास को एक बदले हुए अन्दाज में अपने बच्चों को पढ़ाना पड़ता है। 1997 में जब हम आजादी की स्वर्ण जयन्ती मना रहे थे, तब हमने उन्हीं ब्रिटिश महारानी को आमंत्रित किया, जिनके पुरखों ने देश में अत्याचार किए। रानी उस जालियाँवाला बाग गईं जरूर, जहाँ जनरल डायर ने मानवता की चिंदियाँ उड़ाई थीं, पर उन्होंने इस उस काण्ड के लिए माफी नहीं माँगी। दो वर्ष पहले जब तत्कालीन ब्रिटिश विदेश मंत्री जैक स्ट्रॉ भारत आए, तब उन्होंने पहली बार जालियाँवाला बाग काण्ड के लिए अपनी सरकार की तरफ से माफी माँगी। यह भारत व ब्रिटेन के बीच सुधरते रिश्तों का ही सुफल था कि ब्रिटिश सरकार के नजरिये में परिवर्तन आया। सच यह भी है कि परिवर्तन क्यों न आए? आज ब्रिटेन में कोई 10 लाख भारतवंशी रहते हैं। इतनी बड़ी तादाद में किसी कौम को आप कब तक नजरअंदाज कर सकते हैं? उनके बच्चों के सामने आप ब्रिटिश अत्याचारों को जायज तो नहीं ठहरा सकते। इसलिए वक्त का तकाजा है कि इतिहास को तटस्थता के साथ पढ़ाया जाए। पर यहीं दूसरा सवाल भी उठ खड़ा होता है कि क्या इतिहास तटस्थता के साथ पढ़ाया जा सकता है? —*अमर उजाला से*

भारतीय प्रवासी प्रकाशक पुरस्कृत

ग्रेट ब्रिटेन में बसे ब्रिटेन के सबसे बड़े एशियाई पब्लिशिंग हाउस के संस्थापक प्रवासी भारतीय 75 वर्षीय रमणीकलाल सोलंकी को नववर्ष 2007 के सी०बी०ई० (कमाण्डर ऑफ ब्रिटिश एम्पायर) से पुरस्कृत किया गया।

अब नहीं छपेगा विश्व का सबसे पुराना अखबार

स्वीडन से प्रकाशित होने वाला विश्व का सबसे पुराना अखबार 'द पोस्ट आक इनराइकस तिडनिंगर' अब नहीं छपेगा। नए साल 2007 से इसका केवल ऑनलाइन संस्करण ही उपलब्ध रहेगा। यह अखबार 1645 से प्रतिदिन प्रकाशित हो रहा है। रविवार 31 दिसम्बर 2006 को इसका अन्तिम अंक छपा। 2007 के पहले दिन से इसका मुद्रित संस्करण सिर्फ इतिहास का हिस्सा बन कर रह गया।

विदेशों में प्राच्य विद्या अध्ययन में रुचि नहीं

ब्रिटेन के सुप्रसिद्ध कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय और जर्मनी के बर्लिन इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी में प्राच्य विद्या विभाग बन्द कर दिए गये। जबकि ये पश्चिम के प्राचीन एवं गौरवशाली विभाग हैं। इस वर्ष संस्कृत और हिन्दी में एक भी छात्र ने प्रवेश नहीं लिया। योरप और अमेरिका के अन्य विश्वविद्यालयों की भी यही स्थिति है।

'नीरज' मंगलायतन के कुलाधिपति

उत्तर प्रदेश सरकार ने पद्मश्री डॉ० गोपालदास 'नीरज' को अधिनियम की धारा-12 के उपबन्धों के अधीन मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़ उत्तर प्रदेश का कुलाधिपति नियुक्त किया है। इसके अनुसार डॉ० गोपालदास नीरज कार्यभार ग्रहण करने की तिथि से 5 वर्ष की अवधि तक उक्त पद पर बने रहेंगे।

हिन्दू संस्कृति, दर्शन पढ़ेंगे पाकिस्तानी

पाकिस्तान सरकार ने माध्यमिक स्कूलों के छात्रों को संशोधित पाठ्यक्रम के तहत इतिहास में हिन्दू, बौद्ध और जैन दर्शन पढ़ाने का फैसला किया है। पाँचवीं से आठवीं तक की कक्षाओं के लिए बनाए गए नए पाठ्यक्रम में सिन्धु घाटी की सभ्यता से लेकर दक्षिण एशिया की विभिन्न सभ्यताओं का अध्ययन कराया जाएगा।

पाठ्यक्रम की शुरुआत इतिहास की विभिन्न धाराओं के महत्त्व को रेखांकित करते हुए की गई है। पाँचवीं कक्षा के पाठ्यक्रम में सिन्धु घाटी की सभ्यता से शुरू करके दिल्ली सल्तनत (15,00 से 1526 ईसापूर्व) तक के इतिहास को समेटा गया है। इसमें खासतौर से मोहनजोदड़ो और हड़प्पा सभ्यता के लोगों की उपलब्धियों को जोड़ा गया है। पाँचवीं कक्षा के ही दूसरे अध्याय को सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक व्यवस्था पर केन्द्रित किया गया है।

इतिहास किसी भी सभ्यता का प्राणतत्त्व होता है, उसे भुलाना, उसे विकृत करना आत्महत्या करना है। पाकिस्तान अभी तक यही करता रहा, इतिहास की साम्प्रदायिक दृष्टि ने उसके सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक विकास को अवरुद्ध कर किया।

हिन्दी अकादमी पुनर्जीवित होगी

आन्ध्र प्रदेश में विगत सात वर्षों से बन्द पड़ी हिन्दी अकादमी को सरकार पुनर्जीवित करेगी। अकादमी के अध्यक्ष वाई लक्ष्मी प्रसाद ने बताया है कि व्यवहारिक रूप से मृतप्राय अकादमी के विकास के लिए सरकार ने 45 लाख रुपये आवंटित कर दिये हैं। अकादमी प्रत्येक वर्ष एक हिन्दी लेखक को वार्षिक पुरस्कार के रूप में एक लाख रुपये की राशि देगी।

राष्ट्रीय ज्ञान आयोग की संस्तुति

सैम पित्रोदा की अध्यक्षता में 2005 में गठित राष्ट्रीय ज्ञान आयोग ने प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को अपनी रिपोर्ट सौंपी। रिपोर्ट में पहली कक्षा से प्रथम भाषा के साथ ही अंग्रेजी पढ़ाने, पचास राष्ट्रीय विश्वविद्यालय सहित नये विश्वविद्यालय खोलने और एक राष्ट्रीय लाइब्रेरी आयोग बनाने की संस्तुति की गई है। अन्य महत्त्वपूर्ण सिफारिशों के अन्तर्गत राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क कायम करने, अनुवाद को एक उद्योग के रूप में विकसित करने, व्यावसायिक शिक्षा को मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अन्तर्गत लाने और शिक्षा के अधिकार के लिए एक केन्द्रीय कानून की भी सिफारिश की गयी है।

यह कटु सत्य है कि अंग्रेजी के बिना इस देश का विकास नहीं हो सकता। अन्य देशों से अंग्रेजी में बेहतर होने के कारण ही सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़े रोजगार क्षेत्र में हम आगे हैं।

नेट परीक्षा की वापसी

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में नियुक्ति के लिए एम०फिल० और पी-एच०डी० प्राप्त आवेदकों को दृष्टिगत रखते हुए नेट परीक्षा उत्तीर्ण की अनिवार्यता समाप्त कर दी थी। किन्तु अनेक विद्वानों का मत है कि नेट परीक्षा उत्तीर्ण आवेदकों का चयन सुविधाजनक होता है। अत: नेट परीक्षा पुन: अनिवार्य कर दी जाने की सम्भावना है।

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी को वेदरत्न पुरस्कार

ज्ञानपुर, भदोही निवासी पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी को भारतीय विद्या भवन, बंगलौर द्वारा एक लाख रुपये के 'श्री गुरु गंगेश्वरानन्द वेदरत्न पुरस्कार 2005' से सम्मानित किया जाएगा।

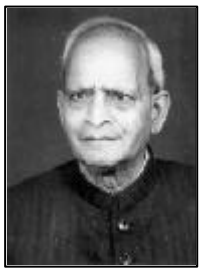

भारतीय विद्या भवन, बंगलौर द्वारा राष्ट्रीय स्तर का यह पुरस्कार 1995 में आरम्भ किया गया था। यह पुरस्कार दो वर्ष में एक बार वैदिक विद्वान् को वेदों के प्रचार-प्रसार, शिक्षा एवं शोधकार्य पर उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया जाता है।

डॉ० द्विवेदी की गणना जहाँ एक ओर संस्कृत भाषा के सरलीकरण के उन्नायकों में की जाती है। वहीं डॉ० द्विवेदी ने वेदामृतम् ग्रन्थमाला के द्वारा वेदों के ज्ञान को जनसामान्य तक पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। वेदों, पर लिखे आपके शोधग्रन्थ—अथर्ववेद का सांस्कृतिक अध्ययन, वेदों में विज्ञान, वेदों में आयुर्वेद, वेदों में राजनीतिशास्त्र, वेदों में समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और शिक्षाशास्त्र, वैदिक दर्शन, वैदिक देवों का आध्यात्मिक और वैज्ञानिक स्वरूप, द एसेन्स ऑफ द वेदाज़, कल्चरल स्टडी ऑफ द अथर्ववेद आदि उल्लेखनीय हैं।

रत्नप्रकाश सम्मान

संस्कृत-साहित्य के मूर्धन्य विद्वान् 'पद्मश्री' डॉ० कपिलदेव द्विवेदी को 'रत्नप्रकाश सम्मान' से भी अलंकृत किया गया है। आपको यह सम्मान संस्कृत-साहित्य एवं वैदिक-साहित्य की दीर्घकालीन सेवा एवं समाज सेवा के लिए प्रधन किया गया है।

डॉ० द्विवेदी को यह सम्मान प्रसिद्ध हिन्दी समालोचक डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव एवं जिलाधिकारी गोरखपुर डॉ० हरिओम् ने रैम्पस पब्लिक स्कूल, गोरखपुर में 'रत्नप्रकाश-सम्मान' प्रदान किया। इस पुरस्कार में डॉ० द्विवेदी को इक्कीस हजार रुपये, चाँदी का नारियल, शाल तथा प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित किया गया।

रत्नप्रकाश मेमोरियल सेवा संस्थान ट्रस्ट द्वारा साहित्य, कला, विज्ञान तथा समाज-सेवा में विशिष्ट योगदान के लिए 'रत्नप्रकाश सम्मान' दिया जाता है।

इस अवसर पर जिलाधिकारी गोरखपुर डॉ० हरिओम् ने डॉ० द्विवेदी की संस्कृत-साहित्य के योगदान की चर्चा की और कहा कि ऐसे सम्मानों से स्वस्थ समाज की रचना करने में मदद मिलती है। कार्यक्रम में हिन्दी समालोचक डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव ने कहा कि यह आयोजन सार्थक है जिसमें डॉ० द्विवेदी जैसे प्रख्यात भाषाविद् को सम्मानित किया जाये। डॉ० द्विवेदी आधा दर्जन विदेशी भाषाओं के ज्ञाता हैं तथा संस्कृत-भाषा के विकास में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। ऐसे विद्वान् पर हमें गर्व होना चाहिए। रत्नप्रकाश मेमोरियल सेवा संस्थान ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री प्रेमचन्द्र श्रीवास्तव में डॉ० द्विवेदी के हिन्दी एवं संस्कृत-साहित्य के योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला।

स्मृति-शेष

कैलाश गौतम

भोजपुरी तथा हिन्दी के लोकप्रिय कवि **कैलाश गौतम** का शनिवार, 9 दिसम्बर 2006 को प्रात: 9.30 बजे इलाहाबाद में निधन हो गया। वे 62 वर्ष के थे। वे हिन्दुस्तानी एकेडेमी इलाहाबाद के अध्यक्ष थे।

8 जनवरी 1944 को चन्दौली जनपद के डिग्घी गाँव में उनका जन्म हुआ था। उनका वास्तविक नाम था कैलाशनारायण सिंह। आकाशवाणी के श्रोताओं में वेगोवर्धन नाम से चर्चित रहे। कवि गौतम को उत्तर प्रदेश सरकार का सारस्वत सम्मान, हिन्दी संस्थान से राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार के अतिरिक्त निराला सम्मान, ऋतुराज सम्मान, परिवार सम्मान, समुच्चय सम्मान जैसे अनेक सम्मानों से विभूषित किया गया था। हास्य-व्यंग्य में जीने वाले कैलाश गौतम की 'इमरजेंसी' के बाद लिखी कविता आज भी याद की जाती है—

कहो फलाने अब का होई,
धैलस छूटल घाट धोबिया,
अब त पटक पटक के धोई,
कहौ फलाने अब का होई।

कैलाश गौतम की ये पंक्तियाँ उनकी रसमयता की बोधक हैं—

गोरी धूप कछार की, हम सरसों के फूल।
जब जब होंगे सामने, तब तब होगी भूल॥

कैलाश गौतम की कृतियाँ—(1) सीली माचिस की तीलियाँ (कविता संग्रह), (2) जोड़ा ताल (गीत-संग्रह), (3) तीन चौथाई आन्हर (भोजपुरी कविता संग्रह) पाठकों के भीतर अपनी सार्थक पैठ बना चुकी है और निकट भविष्य में बहुत शीघ्र छपकर आने वाली किताबें (1) रंगारंग (भोजपुरी गीत संग्रह), (2) आदिम राग (गीत संग्रह), (3) चिन्ता : नये जूते ही (हास्य-व्यंग्य निबन्ध संग्रह), (4) तम्बुओं का शहर (उपन्यास) रचनाकार की रचनाधर्मिता को और विस्तार से रेखांकित करेंगी। इनके अलावा दोहा संग्रह 'बिना कान का आदमी' ग्रामीण परिवेश से जुड़े उपन्यास 'जै-जै सियाराम' और 'बड़की भौजी'। बच्चों और किशोरों से जुड़ी पुस्तक 'बच्चे का गुलदस्ता' प्रकाशनाधीन है।

पद्मश्री वचनेशजी नहीं रहे

'राष्ट्रधर्म' मासिक के पूर्व सम्पादक क्रान्तिधर्मी पत्रकार **वचनेश त्रिपाठी** का निधन हो गया। वे 92 वर्ष के थे और आज भी लिखते थे। अतीत को वर्तमान में प्रासंगिक बनाने की कला में वे निपुण थे। उन्होंने लगभग 80 पुस्तकें लिखीं। उनका क्रान्तिकारियों से विशेष लगाव था। वैशम्पायन, यशपाल जैसे क्रान्तिकारी उनके मित्र थे। उनके पास राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर', सोहनलाल द्विवेदी प्रभृति साहित्यकारों व राज-नेताओं के पत्र थे जिनके प्रकाशन से नयी पीढ़ी को प्रेरणा मिलेगी। उनके निधन से समर्पित देशभक्त पत्रकार तथा साहित्यकार का स्थान रिक्त हो गया।

मनु शर्मा को मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार

महाभारत के पात्रों की आत्मकथा लिखकर साहित्य जगत में अमिट छाप छोड़ने वाले देश के लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार मनु शर्मा को मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार के लिए चुना गया। हिन्दी साहित्य की अलभ्य सेवा के लिए यह पुरस्कार उन्हें मध्य प्रदेश सरकार की ओर से दिया जाएगा। मध्यप्रदेश सरकार यह पुरस्कार अखिल भारतीय स्तर पर देती है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की स्मृति में दिए जाने वाले इस पुरस्कार में श्री शर्मा को मानपत्र एवं एक लाख रुपये की नगद राशि प्रदान की जाएगी। 'कथा जयनाथ की' शीर्षक से सृजित नवीन उपन्यास अपने प्रशंसकों तक पहुँचाने की तैयारी कर चुके पं० मनु शर्मा को इससे पूर्व भी राज्य और राष्ट्रीय स्तर के कई प्रतिष्ठित सम्मान प्रदान किए जा चुके हैं। उनकी बहुचर्चित कृतियाँ अब भी नित नये सन्दर्भ समाज के समक्ष प्रस्तुत करती हैं। इन कृतियों में द्रोण की आत्मकथा, द्रौपदी की आत्मकथा, छत्रपति, गाँधी लौटे प्रमुख हैं।

संगोष्ठी/लोकार्पण

सच एवं संवेदना तथा विनयपत्रिका का काव्यशास्त्रीय अध्ययन का लोकार्पण

पं० शिवकुमार शास्त्री द्वारा डॉ० रामअवतार पाण्डेय की कृति 'विनयपत्रिका का काव्यशास्त्रीय अध्ययन' का लोकार्पण करते हुए

3 दिसम्बर 2006 को अयोध्या भवन, वाराणसी में साहित्यिक संघ के तत्त्वावधान में डॉ० रामअवतारपाण्डेय के कविता संग्रह **सच और संवेदना** एवं **विनयपत्रिका का काव्यशास्त्रीय अध्ययन** साहित्यकारों और विद्वानों की उपस्थिति तथा राजवैद्य पं० शिवकुमार शास्त्री ने कहा—डॉ० पाण्डेय द्वारा विरचित 'विनयपत्रिका' के इस विद्वतापूर्ण ग्रन्थ को पढ़कर उनके विशिष्ट अध्ययन एवं अभिनव दृष्टिकोण और सूक्ष्म पर्यवेक्षण शक्ति का परिचय मिलता है। नि:सन्देह यह तुलसी साहित्य के अब तक प्रकाशित श्रेष्ठ ग्रन्थों में एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ सिद्ध होगा।

लोकार्पण समारोह में उपस्थित विद्वतजन

कविता संग्रह **सच और संवेदना** की समीक्षा करते हुए कहा—सच और संवेदना की प्रत्येक रचना हृदयस्पर्शी है जो सच को उद्घाटित करती हैं। पुरुषोत्तमदास मोदी ने कहा कि—''कुण्डलियों के लिए विख्यात रामअवतार पाण्डेय का यह दूसरा अवतार है। ऐसी श्रेष्ठ नई कविता के भी ये रचयिता हैं। यह पहली बार ज्ञात हुआ। 'सच और संवेदना' की भाषा में सहजता और मर्मस्पर्शी संवेदना है, सोचने को विवश करती है। यह पाण्डेयजी की श्रेष्ठतम रचना है।''

लोकार्पण समारोह में गीता के अन्तर्राष्ट्रीय व्याख्याता श्री शिवेन्द्र नागर, प्रो० लक्ष्मीशंकर गुप्त, अनुराधा बनर्जी, पारसनाथ सिंह आदि ने अपने विचार व्यक्त किये।

सफेद जनतंत्र

बिहार के मानव संसाधन विकास मंत्री वृशिण पटेल ने कवि शिवनारायण के सद्य: प्रकाशित कविता संग्रह 'सफेद जनतंत्र' का लोकार्पण पटना के रिपब्लिक होटल में 19 नवम्बर 2006 को किया। अध्यक्षता पूर्व गृह सचिव एवं वरिष्ठ साहित्यकार जियालाल आर्य ने की। स्वागत भाषण पुस्तकालय विज्ञानी डॉ० रामशोभित प्रसाद सिंह ने किया। समालोचक डॉ० अमरकुमार सिंह ने कहा कि शिवनारायण राजनीतिक चेतना के दृष्टि-सम्पन्न कवि हैं।

राजभवन पर पुस्तक

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल टी०वी० राजेश्वर ने 'राजभवन लखनऊ : एक ऐतिहासिक परिदृश्य' पुस्तक का विमोचन किया। पुस्तक का सम्पादन स्वर्गीय श्री पी०सी० पंत पूर्व विभागाध्यक्ष प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा किया गया है तथा प्रकाशन उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र इलाहाबाद द्वारा किया गया है। फोटोग्राफ का कार्य रवि कपूर ने किया है। 244 पृष्ठों वाली यह पुस्तक तीन भाग में विभाजित है। प्रथम भाग में राजभवन लखनऊ के ऐतिहासिक एवं पुरातत्व परिदृश्य के साथ प्रदेश के उपराज्यपालों एवं राज्यपालों की जीवनी सम्बन्धी रेखांकन है। द्वितीय भाग में उत्तर प्रदेश की विभिन्न युगों की वास्तुकला को दर्शाया गया है।

मड़ई 2006 विमोचित

मड़ई 2006 का विमोचन छत्तीसगढ़ की संस्कारधानी बिलासपुर नगर में परम्परानुरूप आयोजित 'राउतनाच महोत्सव' में हुआ। लोक संस्कृति के संरक्षण में पिछले दो दशक से निरन्तर क्रियाशील 'मड़ई' का 2006 अंक समकालीन लोकचिंतन के महत्त्वपूर्ण दस्तावेजों की शृंखला की नवीनतम कड़ी है। इस अंक में प्रकाशित आलेखों में लोक के विज्ञान और दर्शन की समकालीन पृष्ठभूमि में विवेचना की गयी है।

छत्तीसगढ़ के कृषिजीवी पशुपालक यदुवंशियों की लोक-सहभागिता का उत्सव 'राउत नाच' छत्तीसगढ़ लोक संस्कृति का एक अनुपम उदाहरण है। इस सामूहिक नृत्य के अनेक सोपान यथा अखरा, देवाला, सुहई, सुखधना, काछन, मड़ई, बाजार-बिहाना इत्यादि होते हैं। 'मड़ई' की रचना स्थानीय वनस्पतियों के मेल से एक ऊँचे बाँस पर लम्बवत् विजय-ध्वज के रूप में होती है। इसका निर्माण सामाजिक समरसता के अनुरूप इसी अंचल के निषाद या गोंड़ जनजाति के बैगा द्वारा किया जाता है। 'मड़ई' को राउतनाच के गोल (दल) नृत्य के समय अपने साथ रखते हैं।

'मड़ई' पत्रिका का नाम राउत नाच के इसी एक सोपान 'मड़ई' के नाम पर रखा गया है। 'मड़ई' लोक संस्कृति को आधुनिक विवेक सम्मत वैज्ञानिक दिशा की ओर ले जाने का एक प्रयास तो है ही साथ ही उत्तर आधुनिक पूँजीवाद द्वारा संचालित सांस्कृतिक प्रदूषण के प्रतिरोध एवं प्रतिपक्ष हेतु एक वैचारिक मंच है। लगभग 225 पृष्ठों की यह पत्रिका नि:शुल्क वितरण के लिए है—सम्पर्क : डॉ० कालीचरण यादव, सम्पादक : 'मड़ई', बनियापारा, जूना बिलासपुर, बिलासपुर (छत्तीसगढ़) 495 001

राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा के हिन्दी विभाग के तत्त्वावधान में राष्ट्रीय संगोष्ठियों की शृंखला सम्पन्न हुई। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ के सौजन्य से दिनांक 15 दिसम्बर 2006 को **ब्रजभाषा काव्य विमर्श** पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में पानीपत से पधारे लोकसाहित्य के अधिकारी विद्वान डॉ० राजेन्द्र रंजन उपस्थित थे। प्रमुख वक्ता कवि श्री सोम ठाकुर ने केन्द्रस्थ विचार व्यक्त किये। संयोजक डॉ० विष्णु विराट चतुर्वेदी ने ब्रजभाषा काव्य के विविध आयामों की चर्चा करते हुए ब्रजभाषा को पाठ्यक्रम से दरकिनार किए जाने पर चिन्ता व्यक्त की तथा ब्रजभाषा साहित्य के अध्ययन-अध्यापन के प्रशिक्षण शिविर आयोजित का प्रस्ताव भी रखा।

16 दिसम्बर 2006, **हिन्दी गीत : परम्परा और प्रयोग** पर साहित्यकार तथा संसद सदस्य श्री उदयप्रताप सिंह की अध्यक्षता में संगोष्ठी हुई।

18 दिसम्बर 2006, को हिन्दी साहित्य अकादमी, गाँधीनगर के सौजन्य से **मीडिया लेखन : दशा एवं दिशा** पर राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई। मुख्य अतिथि बाम्बे यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० रतनकुमार पाण्डेय थे। प्रो० विष्णु विराट चतुर्वेदी ने सभी सत्रों का संयोजन एवं संचालन किया तथा विभाग के सभी सदस्यों ने सक्रिय सहयोग दिया।

डॉ० हरिकृष्ण देवसरे के कृतित्व पर विमर्श-गोष्ठी

16 दिसम्बर 2006 को पूर्व सांस्कृतिक केन्द्र, दिल्ली में नवगठित 'बालसाहित्यविमर्श' द्वारा पूर्व सांस्कृतिक केन्द्र लिटरेरी क्लब के सहयोग से हिन्दी के प्रख्यात बाल साहित्यकार डॉ० हरिकृष्ण देवसरे के कृतित्व पर केन्द्रित एक विमश-गोष्ठी का आयोजन हुआ। प्रतिष्ठित आलोचक डॉ० हरदयाल गोष्ठी में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। गोष्ठी की अध्यक्षता बाल गीतकार बालस्वरूप राही ने की, संचालन युवा आलोचक देवेन्द्रकुमार देवेश ने किया।

बाल साहित्यकारों के कृतित्व पर केन्द्रित विमर्श-गोष्ठियों की शृंखला में आयोजित इस पहली गोष्ठी में बाल साहित्यकार राजेश जैन ने डॉ० देवसरे के बाल कथा साहित्य पर केन्द्रित अपना आलेख पढ़ते हुए कहा, ''अगर हम कहें कि राजा-रानियों, भूत-प्रेतों, परी, चुड़ैलों आदि की परम्परागत बेड़ियों से हिन्दी के बाल साहित्य को मुक्त कराने के लिए देवसरेजी ने स्वतंत्रता सेनानी जैसी भूमिका निभाई है तो अतिरंजना न होगी।''

डॉ० देवसरे की सम्पादन कला पर केन्द्रित अपने आलेख में रत्नप्रकाश शील ने उनकी आलोचना-दृष्टि और सम्पादकीय बारीकियों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर प्रतिष्ठित बाल साहित्यकार दामोदर अग्रवाल द्वारा लिखित आलेख शम्भुनाथ तिवारी द्वारा विशेष रूप से पढ़ा गया, जिसमें उनका मानना है कि डॉ० देवसरे बाल साहित्य के निर्माता तथा अद्वितीय समीक्षक हैं और वे बाल साहित्य को हर अर्थ में प्रासंगिक बनाने के अपने संकल्प में हर तरह से समर्पित हैं।

पं० विद्यानिवास मिश्र जन्मदिवस संगोष्ठी

आधुनिकता के इस दौर में हिन्दी साहित्य की मूल धारा भटकी नजर आती है। जब तक हम अपने साहित्य की मूल की ओर नहीं ध्यान देंगे तब तक सही स्वरूप प्रस्तुत करना कठिन है। यह विचार पद्मविभूषण पण्डित विद्यानिवास मिश्र के जन्म दिवस पर रवीन्द्रपुरी स्थित 'स्पंदन' में 14 जनवरी 2007 को आयोजित हमारा समय और आज का साहित्य विषयक संगोष्ठी में अध्यक्षता करते हुए हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध समालोचक डॉक्टर बच्चन सिंह ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि साहित्य के माध्यम से ही व्यक्ति की संस्कृति और सभ्यता की पहचान होती है। डॉक्टर चितरंजन मिश्र ने कहा कि हम अपने समय की विकृतियों को लेकर चिन्तित हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि तकनीकी विकास ने हम लोगों पर जादू-टोना कर दिया है, जिससे हिन्दी साहित्य पर भी कुप्रभाव देखा जा सकता है।

डॉक्टर पी०एन० सिंह ने आज की जटिलताओं, समकालीन साहित्य और पण्डितजी की विचाराधारा की विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि समग्रता के लिए वैदिक एवं गैर वैदिक परम्पराओं को साथ-साथ समझने की जरूरत है। डॉक्टर श्री प्रकाश शुक्ल ने साहित्य और पाठक के बीच बाजार के हस्तक्षेप को रेखांकित किया। डॉक्टर नीरजा माधव ने पण्डितजी के साहित्य और समय सम्बन्धी विचारों को सदैव प्रासंगिक बताया। डॉक्टर सदानंद शाही ने साहित्य के मूल्यांकन के प्रति असन्तोष व्यक्त किया। डॉक्टर अरुणेश नीरन ने कहा कि समय जितना कठिन होता है, साहित्य उतना ही सशक्त होता है। डॉक्टर रामप्रकाश कुशवाहा ने आज के संकट को समझने तथा उससे जूझने में पण्डितजी के लेखन को सहायक बताया। डॉक्टर गया सिंह ने समय और साहित्य के विविध सन्दर्भों को रेखांकित किया। आचार्य पंकज ने बताया कि पण्डितजी कि साहित्य परम्परावादिता एवं आधुनिक बोध सम्पन्न है।

इस अवसर पर डॉ० अनन्त मिश्र, डॉ० विश्वनाथप्रसाद, डॉ० अशोक सिंह, डॉ० दीनबन्धु तिवारी एवं डॉ० पवनकुमार शास्त्री ने भी विचार व्यक्त किये।

हिन्दी का गद्य साहित्य

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

षष्ठ संस्करण : 2007

पृष्ठ संख्या : 968

मूल्य : अजिल्द 440.00 ● सजिल्द 625.00

- हिन्दी गद्य-साहित्य का समग्र और व्यवस्थित अध्ययन।
- सभी स्तरों पर नवीनतम सामग्री का समावेश।
- अवधारणों के विकास और सामाजिक सन्दर्भों के बदलाव की द्वन्द्वात्मक स्थिति का विवेचन।
- नवीनतम गद्य-विधाओं का विशद विवेचन।
- वैचारिक अन्तर्धाराओं के सकारात्मक पक्ष पर बल।
- उनतीस गद्य लेखकों का सारगर्भित, सन्तुलित और आग्रह-मुक्त विवेचन।

''यह हिन्दी के गद्य-साहित्य का प्रामाणिक दस्तावेज है। समग्रता और सघनता दोनों दृष्टियों से यह पुस्तक महत्त्वपूर्ण है। समग्रता का आलम यह है कि लेखक ने भारतेन्दु पूर्व से लेकर आज तक के हिन्दी गद्य के विकासमान स्वरूप की प्रामाणिक पहचान प्रस्तुत की है तथा हर विधा में लिखी गयी सभी महत्त्वपूर्ण रचनाओं और पुस्तकों का लेखा-जोखा एवं आकलन प्रस्तुत किया है। यहाँ तक कि पत्र-पत्रिकाओं का भी संक्षिप्त किन्तु प्राय: समग्र परिचय दिया है। यह पुस्तक गद्य-साहित्य का इतिहास भी है और मूल्यांकन भी। इतिहास है, इसलिए गद्य-भाषा और उसमें लिखी जा रही विविध साहित्य विधाओं के क्रमिक विकास की स्पष्ट और प्रामाणिक पहचान उभरती है। इस प्रक्रिया में लेखक ने विविध साहित्यांदोलनों और वादों की मूल प्रकृति का विश्लेषण किया है। मूल्यांकन भी है। अत: लेखक ने विविध लेखकों और उनकी कृतियों का विशेषत: प्रमुख कृतियों का बहुत थोड़े में किन्तु सारभूत रूप में विश्लेषण और मूल्यांकन किया है।'' **—डॉ० रामदरश मिश्र**

कविता रोई

बरसब बसा बनारस मुझमें, मिला न अपना कोई,
'कौन सुनेगा पर की पीड़ा' कहकर कविता रोई।
वरुणा-करुणा-कलित हृदय की रोती आविल धारा,
सुबह बनारस अरुणदीप, दिन धुँआ उगलता सारा।
जो त्रि-शूल-हर, हर-त्रिशूल पर बसा गिरा-पुर न्यारा
विश्वनाथ का यह अनाथ-सा कलुषित गंग-किनारा।
तन-मन-जीवन-शुचिता जाने कहाँ लाज-सीखोई?
'कौन सुनेगा पर की पीड़ा' कहकर कविता रोई॥
जहाँ शास्त्र-संगीत-कला का मधुर जादुई संगम,
जहाँ निदर्शन दर्शन का, अध्यात्म-योग हृदयंगम,
नीलकण्ठ-सी संस्कृति, ग्रीवा गंगा और भुजंगम,
महाकाल के कालदण्ड से भीतिमुक्त जड़-जंगम।
मुक्ति-भुक्ति की, ज्ञान-भक्ति की सूखी-सरस रसोई।
'कौन सुनेगा पर की पीड़ा' कहकर कविता रोई॥
घाट-घाट बहु बाट, भाट-भट, नटखट नट अलबेले,
धर्म-नीति-बल-छल-छन्दों के रज्जु सधे-से खेले।
अपनेपन के सपनेपन के लगे लाख हैं मेले,
संवेदन की सँकरी गलियाँ, ठगाठगी के ठेले।
रीति अनूठी, बड़बोलापन, झूठी प्रीति पिरोई।
'कौन सुनेगा पर की पीड़ा' कहकर कविता रोई॥
गुण्डों-मुस्टण्डों-गलियों का, रूपजीविता-रंगा,
'राँड़-साँड़-सीढ़ी-संन्यासी' काशी का निजतमगा।
सन्तों की बानी कल्पानी, बहती कठवत गंगा,
आधा कर्दम-आधा चन्दन, बेढंगा मन चंगा।
जहाँ झूठ-सच घोंट भाँग-सी पीकर जनता सोई।
'कौन सुनेगा पर की पीड़ा' कहकर कविता रोई॥
रंग बनारस, ढंग बनारस, बना रहे रसरंगी,
मदिरा-मद-आपान, पानमय बानीमधुर त्रिभंगी।
मण्डन-मुण्डन, पंडित-पंडा, खड़ा वितण्डा जंगी,
अस्सी पर 'ऐसी की तैसी' सबकी हर-हर गंगी।
तारा रोये, तुलसी रोये या कबीर हो कोई।
'कौन सुनेगा पर की पीड़ा' कहकर कविता रोई॥
'हरिश्चन्द्र से हरिश्चन्द्र' तक, युग हो चाहे जैसा,
या प्रसाद का, पूज्यपाद आचार्यवरों का भय-सा।
मालवीय-महनीयमूर्ति-युग त्याग-तपोमय कैसा!
उस मन्दिर में ज्ञानविमण्डित पण्डित का धन पैसा!!
जातिवाद के जातवेद ने भव की भूति सँजोई।
'कौन सुनेगा पर की पीड़ा' कहकर कविता रोई॥

—अमलदार 'नीहार'

आपका पत्र

'भारतीय वाङ्मय' (नवम्बर 2006) का अंक मिला, इसका अवलोकन कर मुग्ध हो गया। यह केवल प्रचार पत्रिका नहीं परन्तु सारस्वत कृति है। आपने भारतेन्दु के पुस्तक प्रेम का वर्णन किया है, पर इसी 'कविवचनसुधा' ने भारतेन्दु की मृत्यु पर एक कॉलम भी काला नहीं किया, यह कैसी विडम्बना थी। प्रेमचंद स्मारक योजना और डॉ० राजेन्द्रप्रसाद के भाषण के साथ-साथ प्रेमचंद के प्रारम्भिक जीवन का आपने सटीक और मार्मिक चित्रण का उल्लेख किया है, इसे पढ़कर मुझे हिन्दी के प्रकाशक बैजनाथजी केडिया के साथ प्रेमचंद के सम्बन्ध का स्मरण हो आया जब उनके उपन्यासों को कौड़ी के मोल प्रकाशनार्थ खरीदा था। 'काबुल का किताबवाला' पढ़कर ऐसी अनेक घटनाएँ याद आ गईं जहाँ प्रसिद्ध ग्रन्थावलियों को और तो और अभी कुछ ही वर्ष हुए जब सम्भवत: पूना में इसी प्रकार महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ जला दिये गये थे। पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी का अभिनन्दन ग्रन्थ बेजोड़ था। वे जब भी कलकत्ता आते प्राय: मिलना होता था। डॉ० बच्चन सिंह का 'सौ इन्काउन्टर' अत्यन्त प्रासंगिक और प्रभावी है। इस वर्ष हम महादेवी, नन्ददुलारे वाजपेयी और आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की भी शताब्दी मना रहे हैं। इसके अतिरिक्त कई सूचनाएँ भी आपने दी हैं। आपका सम्पादकीय 'ज्ञान का अर्थशास्त्र : अर्थशास्त्र का ज्ञान' पूर्णत: सामयिक है। मेरी बधाई स्वीकार करें।

—प्रो० कल्याणमल लोढ़ा, जयपुर

दिसम्बर 2006 अंक में आपकी सम्पादकीय 'हिन्दीसेवी संस्थाएँ' पढ़कर आत्मा गद्गद् हो गयी। आपने स्वतंत्रता के बाद हो रही हिन्दी और हिन्दी की पुस्तकों की दुर्दशा का जो रेखाचित्र खींचा है वह लोकतांत्रिक सरकार, कार्यकाल और संवेदनशीलता से दूर हो रहे आदमी को नंगा करने के लिए पर्याप्त है। हिन्दी की दुर्दशा पर रोना आता है। न तो सरकारों और येन-केन प्रकारेण चुनाव जीतकर वीवीआईपी बनने वालों ने इस ओर ध्यान दिया, न ही हिन्दीभाषियों और सम्बन्धित संस्थाओं ने ही प्रयास किया। लेखक भी गिने-चुने ही बचे हैं, धीरे-धीरे इनका भी सूखा पड़ जायेगा। इसके साथ ही एक विडम्बना और है कि जो लोग पुस्तकें पढ़ना भी चाहते हैं उनकी जेब और उनकी आय उतनी नहीं है कि मँहगी पुस्तकें खरीद कर पढ़ें। पहले गली-मुहल्लों में पुस्तकालय थे जहाँ से पुस्तकें पढ़ने के लिए उपलब्ध हो जाती थीं किन्तु अब पुस्तकालय खोजना पड़ता है और जो उपलब्ध हैं वहाँ मनचाही पुस्तकें नहीं मिलतीं। इस ओर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। फिर भी आपकी सम्पादकीय मन को छू गयी। मेरे लिए यही पर्याप्त है। **—जवाहरलाल सेठ,** वाराणसी

इधर हिन्दी पत्रिकाएँ विशेष विचारधाराओं की वाहिका बनती चली जा रही हैं। प्रतिबद्धता आपत्तिजनक नहीं है पर किसी विचार के घरौंदो में बन्द ज्ञान, ज्ञान की सही परिभाषा नहीं दे पाते। ज्ञान में गतिशीलता का होना तटस्थ दृष्टि और वस्तुस्थिति का परिज्ञान अनिवार्य सा होता है। पर दु:खद है कि अधिसंख्य पत्रिकाएँ परम्पराओं पर प्रहार और आदि-स्रोतों के तिरस्कार तक सीमित हो गयी हैं। विशेषत: हिन्दी साहित्य में यह प्रवृत्ति तीव्रता से पनप रही है। तात्कालिक प्रवृत्तियों पर दीर्घकालिक निष्कर्ष नहीं निकाले जा सकते। स्वस्थ परम्पराओं के संरक्षण के बिना साहित्य के अर्थ को समझना असम्भव सा है। अत: प्राचीन और अर्वाचीन विचारों के सामंजस्य और समन्वय से ही सार्थक साहित्य का सृजन सम्भव है।

प्रसन्नता है कि 'भारतीय वाङ्मय' साहित्यिक आकांक्षाओं की पूर्ति कर रहा है। पत्रिका में वाद-विवाद से बचते हुए संवाद का वातावरण बन रहा है। संस्मरणों, साहित्यकारों के साक्षात्कारों, प्रेमचंदादि कथाकारों के मन्तव्यों और उन पर आज से 70-80 वर्ष पहले की गयी टिप्पणियों से यह पत्रिकाएँ भरपूर है। पुस्तकों की पाठकीय प्रवृत्ति पर टिप्पणियाँ मनोहर हैं। साथ ही पुरस्कारों, अद्यतन प्रकाशित पत्रिकाओं की पूर्ण जानकारी इसमें मिल जाती है। 'दो चौबों की नोक झोंक' और 'प्रेमचंद स्मारक योजना 1936 ई०' जैसे टिप्पणीनुमा संस्मरण हिन्दी पाठकों के मन को छू लेते हैं। ऐसी नित नवीन जानकारी के लिए मोदीजी धन्यवाद के पात्र हैं। ईश्वर उन्हें स्वस्थ रखे क्योंकि उनके 'रहस्यमय कोश' में अभी न जाने कितने मनोरंजक संस्मरण छिपे होंगे। **—उदयप्रताप सिंह,** सारनाथ

पूर्व अंकों की भाँति नवम्बर अंक का प्रेरक सम्पादकीय भी एक नई दृष्टि देता है। आज का सबसे बड़ा और कटु सत्य यह है कि ज्ञान संवेदनाशून्य होता जा रहा है। उपयोगितावाद, उपभोगवाद एवं भौतिकता की आँधी में समस्त मानवीय मूल्य गायब होते जा रहे हैं। आगे बढ़ने की होड़ मची है। इस होड़ में पाप-पुण्य, अच्छा-बुरा, सुकर्म-कुकर्म का बोध मिट गया है। मूर्ख उपदेश दे रहे हैं, अपराधियों के कन्धों पर सुरक्षा का दायित्व है, बलात्कारी लोग नारी उत्थान पर भाषण दे रहे हैं और सज्जन मौन हो सब कुछ देख सुन रहे हैं। **—डॉ० वीरेन्द्रकुमार सिंह**
उपनिदेशक, राजभाषा, फरीदाबाद

छोटी-छोटी इतनी रंजक, सूचनाप्रद, दस्तावेजी महत्त्व की सामग्रियाँ इस लघु कलेवर की पत्रिका में आप डाल देते हैं कि आनन्द आ जाता है। 'भारतेन्दु का पुस्तक प्रेम', 'प्रेमचंद स्मारक योजना 1936' (दोनों अंश), 'नटोरियस वीर' महामान्य मानव संसाधन विकास मंत्री अर्जुन सिंह जी का कार्टून, 'आत्महत्या रोकती कहानी', 'दो चौबों की नोक-झोंक', 'सौ इन्काउन्टर', 'राहुलजी का भोजपुरी प्रेम', आचार्य वाजपेयी के जन्मशती वर्ष पर आपकी सूचनात्मक टिप्पणी, हिन्दी विश्वविद्यलाय पर टिप्पणी और फिर इतनी छोटी-बड़ी खबरें। **—अशोक प्रियदर्शी,** राँची

'भारतीय वाङ्मय' एक पठनीय और विचारोत्तेजक पत्र बनता जा रहा है। प्रत्येक अंक में अनेक सूचनाएँ, अनेक टिप्पणियाँ ध्यानाकर्षक हैं ?

—डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ
अलीगढ़

'भारतीय वाङ्मय' एक पत्रिका है जो मेरे जैसे दूरस्थ जगह में रह रहे लोगों को सम्पूर्ण साहित्यिक गतिविधियों की जानकारी दे देती है। जानकर आश्चर्य एवं दु:ख हुआ कि 125वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में बने शिलान्यास पर प्रेमचन्द को 'प्रेमचन्द्र' कर दिया गया। अनभिज्ञता एवं लापरवाही का इससे बड़ा उदाहरण शायद ही कहीं मिले। **—डॉ० हरेराम पाठक,** असोम

'भारतीय वाङ्मय' के नवम्बर 06 अंक के सम्पादकीय 'ज्ञान का अर्थशास्त्र : अर्थशास्त्र का ज्ञान' में आपका सुझाव बहुत व्यवहारिक है। घोर व्यावसायिकता एवं बाजारवाद के इस दौर में बौद्धिक पक्ष को ही अधिक से अधिक उभारकर उसका दोहन करने की चेष्टा सब तरफ हो रही है, मनुष्य को मनुष्यता से जोड़ने वाली भावना या हृदय पक्ष की उपेक्षा हो रही है जिसके कारण जीवन में अनेक विकृतियाँ एवं समस्याएँ पनप रही हैं। बौद्धिक-व्यवसायिक मठों में रचनात्मक साहित्य की उपस्थिति और उसका पठन-पाठन ऐसे में जीवन-रस का संचार करने में अवश्य सहायक होगा और लोगों को तनाव, कुण्ठा एवं यांत्रिकता से बचाकर, उनमें उत्साह, प्रेरणा एवं सरसता का प्रसार करेगा।

'जलती किताबें' में काबुल के किताबवाले का किताबों की रक्षा हेतु संघर्षरत जो चित्र खींचा गया है, वह प्राचीन भारतीय पुस्तक प्रेमियों का भी एक काल्पनिक चित्र उपस्थित करता है। भारतीय समाज में पुस्तकों के प्रति जो पूज्य-भाव यहाँ के चिन्तकों द्वारा भरा गया था, वह निरर्थक नहीं गया। नालन्दा जैसे पुस्तकालय के जल जाने के पश्चात भी यहाँ का ज्ञान-विज्ञान यदि बचा रह सका तो उन पुस्तक-प्रेमियों के कारण ही, जिन्होंने अपने प्राणों से भी अधिक परवाह पुस्तकों की की। आज यह भाव खत्म हो रहा है, कैसी विडम्बना है ?

—डॉ० हरीशकुमार शर्मा
पासीघाट (अरुणाचल)

इसमें कोई शक नहीं कि 'भारतीय वाङ्मय' गागर में सागर है।

—कि ढेर सारी बातें, ढेर सारे साहित्य समाचार...कि ढेर सारा सोचा-विचारा जा सके।

—इंस्टा बुक डॉट नेट की सूचना, आशा है

लोगों के लिए काफी उपयोगी होगी। इस साइट को मैं पहले भी विजिट कर चुका हूँ।

—प्रभात पाण्डेय, कोलकाता

'भारतीय वाङ्मय' नवम्बर 2006 पत्रिका में प्रकाशित 'प्रेमचंद स्मारक योजना 1936' लेख पढ़ा। दु:ख हुआ। उनका स्मारक कब बनेगा? उसकी योजना क्या है? पत्रिका में योजना सम्बन्धी योजना पढ़कर ऊब गयी। केन्द्र सरकार भी उस पर ध्यान देती नहीं। बेकार खर्च करती रहती है। जिस उद्देश्य के लिए खर्च करना है, उसे खर्च नहीं करते। श्री प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त, रांगेय राघव आदि साहित्यकारों को याद करना मानव का धर्म है। चीन जैसे लोग, डॉ० कोटनीस की स्मृति अपने देश में स्थापित कर याद करते हैं। भारत अपने देश के सपूतों को भूलते हैं। खेद से लिख रही हूँ। आप इस ओर ध्यान देकर आगे बढ़ाने की कोशिश करें।

—बी०एस० शांताबाई, प्रधान सचिव
कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बेंगलोर

काव्याञ्जलि

विद्यापति

अमराई में राधिका, तके कृष्ण की राह।
विद्यापति के ज्ञान का, भीग गया उत्साह॥

मलिक मुहम्मद जायसी

जौहर की गाथा रची, जहाँ अग्नि ने दिव्य।
घूम रहा मन जायसी, उसी दुर्ग के मध्य॥

कबीर

शेख, बिहरमन, मौलवी, सन्त महन्त फकीर।
वहाँ न पहुँचा एक भी, पहुँचा जहाँ कबीर॥

कुम्भनदास

जिसने तुझको पा लिया, छोड़ दिया संसार।
क्या अकबर की सीकरी, क्या दिल्ली दरबार॥

सूरदास

बन्द आँख से मोहिनी, छबि देखे भरपूर।
अन्धी आँखों में किसे, मिलता ऐसा नूर॥

चन्दवरदाई

वह वाणी का दर्प था, कवि का दृढ़ आह्वान।
जिसने चूका लक्ष्य को, नहीं वीर चौहान॥

तुलसीदास

लड़े अनय-लंकेश से, ये और इनके राम।
हुलसी मानवता किया, तुलसी को सुप्रणाम॥

भक्ति-खड्ग लेकर किया, मानवता का त्राण।
जड़ता के उर में लगा, रामनाम का बाण॥

रहीम

नीति प्रीति, विश्वास दृढ़, धर्म, कर्म, अवकाश।
रहिमन याचक बन किया, याचकता का नाश॥

बिहारी

देह गंध से राधिका, कर मांसल अनुबन्ध
लिखे बिहारीलाल की मदिर प्रीति के छन्द॥

पुस्तकें और हम

—विजय कुमार

साहित्य की दुनिया में आधुनिक समय में ज्ञान-विज्ञान से आक्रान्त हमारी सारी पढ़ाई हमें विशेषज्ञताओं की ओर ले गयी है। हम बौद्धिकता के एक शुष्क और बंजर पठार पर खड़े हैं। पुस्तकों के साथ हमारा रस का, प्रेम का, आनन्द का, आस्वाद का जो सहज रिश्ता बनना चाहिए था, वह व्याख्याओं और टीका-टिप्पणियों के जंगल में कहीं खो गया है। पिछले दो-तीन दशकों में तमाम चीजों के अन्त का महोत्सव मनाया गया है। विचार का अन्त, इतिहास का अन्त, उपन्यास का अन्त, कविता का अन्त और यहाँ तक कि लेखक के अन्त की घोषणाएँ भी हो चुकी हैं। तो आखिर छपे हुए अक्षर के सामने बचता कौन है? केवल एक अकादमिक प्रोफेसर और बाल की खाल निकालने वाली उसकी विशेषज्ञ व्याख्याएँ। इन विशेषज्ञ व्याख्याओं में कला की सम्पूर्णता के अनुभव, उसकी प्रतीति, रूप-रंग, ताप, ऊष्मा, ऐन्द्रिक सौन्दर्य, उसकी सघनता और उसकी बहुआयामी अर्थवत्ता के प्रति एक अवमानना है। पढ़ते हुए हम अपने-अपने सिद्धान्तों और पूर्वाग्रहों को तुरन्त एक कृति पर टाँग देना चाहते हैं। किताबें हमें खोलती नहीं।

आज के इस उपभोक्तावादी जीवन में पढ़ने के लिए कम होते जाते अवकाश और पुस्तकों के लिए सिमटती हुई जगह के बारे में बहुत सारी बातें होती रहती हैं। दरअसल तत्कालीन उपयोग और व्यावहारिक जरूरतों के लिए पढ़ना, सूचना और जानकारियों को प्राप्त करने के लिए पढ़ना या किसी स्पर्धा में उतरे के लिए पढ़ना कम नहीं हुआ है। कम हुआ है ऐसा पढ़ना जो किसी व्यावहारिक उद्देश्य से चालित नहीं है। वह पढ़ना जो उपयोगितापरक नहीं है। जिसमें हमारी जीवन-दृष्टि और संवेदनाओं का पुनर्संयोजन होता है। कुछ कमियों के बावजूद यह पढ़ना हमारा अपना, नितान्त हमारा अपना पढ़ना है जहाँ छपे हुए अक्षर अचानक जैसे हमें पुकारते हैं। किसी गहरी नींद से जगाते हैं। वे पुस्तकें या कृतियाँ जिन्हें पढ़ने के बाद पाठक ने कुछ 'सीखा' नहीं, बल्कि वह कुछ 'हो गया'। गेटे ने कहा है कि हर अच्छा पाठक पुस्तक में स्वयं को ही पढ़ता है। ऐसे पढ़ना किसी न किसी रूप में हम सबको स्थानान्तरित करता है। वह हमसे हमारा सुरक्षित घर छीन लेता है पर ज्यादा बड़ी बात यह है कि यह हर जगह हमें एक घर देता है।

आक्तोवियो पाज़ ने कहा कि ''प्रत्येक पाठक एक दूसरा कवि है। कविता के सौन्दर्य और उसकी सार्थकता को बताने का काम स्वयं रचनाकार नहीं कर सकता, यह काम तो उसका पाठक करता है।''

मनुष्य का अपने अतीत, अपनी जड़ों, अपनी परम्पराओं, अपने परिवेश, भाषा-संस्कृति, रिश्तों, गली-मोहल्लों और शहरों से विस्थापन हो रहा है। सबसे बड़ी बात तो यह कि अपनी स्मृतियों से विस्थापन हो रहा है। एक असाधारण कृति हमें खण्डहरों में पड़े भग्नावशेषों से सच को पुनर्संयोजित करने का हौसला देती है। इस अर्थ में किसी भी कृति का पाठ सहसा मुझे यह याद दिलाता है कि मैं कहाँ-कहाँ किस-किस तरह से विस्थापित होता रहा हूँ।

मुझे जीवन में सिर्फ एक किताब की जरूरत है। मैं उसे पढ़कर बाहर निकलता हूँ और अपने भूले हुए घर की ओर लौटना चाहता हूँ।

किताबें कुछ कहना चाहती हैं

स्कूल-कॉलेज की किताबों से इतर आपके बच्चे क्या पढ़ते हैं? कोर्स की किताबों के अलावा पिछले एक साल में आपने उन्हें कितनी किताबें खरीद कर दी हैं? यदि आपके घर में हिन्दी बोली जाती है तो क्या आपने अपने बच्चों को हिन्दी की किताब पढ़ने के लिए प्रेरित किया है? क्या आपने कभी अपने बच्चों को पुस्तकालय या किताबों की दुकान पर ले जाकर किताबें देखने के लिए खुला छोड़ा है? पढ़ी गई किताबों को लेकर आपके और आपके बच्चों के बीच क्या कभी संवाद की स्थिति आती है? क्या आपने कभी अपनी पसन्द का गद्य या कविता अपने बच्चों को पढ़कर सुनाई है? पाठ्य-पुस्तकों में पढ़ी गई पसंदीदा रचनाएँ बच्चों के दिमाग में हमेशा के लिए अंकित हो जाती हैं। क्या आपने कभी उनकी पाठ्य-पुस्तकें खोलकर उनकी पसन्द-नापसन्द जानने की कोशिश की है? और क्या आपने बच्चों की पसंदीदा रचनाओं के लेखकों की अन्य कृतियाँ उन्हें दिलवाने की कोशिश की है? क्या आपकी अलमारी में अपने बड़े होते बच्चों के पढ़ने लायक कुछ किताबें हैं?

किताबें कुछ कहना चाहती हैं, तुम्हारे पास रहना चाहती हैं। **—'पहल' से साभार**

आपके आदेश का पालन

सरदार विट्ठलभाई पटेल सरदार वल्लभ भाई पटेल के अग्रज थे। वे अत्यन्त आधुनिक थे, विदेश भ्रमण कर आये थे। गाँधीजी से लोगों ने शिकायत की—''बापू विट्ठलभाई सिगरेट पीते हैं।'' बापू ने विट्ठलभाई से पूछा। विट्ठल भाई ने कहा—''बापू मैं तो आपके आदेश का पालन करता हूँ। आपका आदेश है, विदेशी वस्तुओं को फूँक दो, देखिए मैं विदेशी सिगरेट फूँकता हूँ।''

किताबों की वास्तविकता

—ज्ञानरंजन, सम्पादक 'पहल'

आइए हम अपने समय में किताबों की वास्तविकता के आसपास की संक्षिप्त जानकारी लेने का प्रयास करें। हम आप सब उस समय में पहुँच गए हैं जहाँ किताबों का रोमांस, किताबों से लगाव और किताबों से प्रेम पहले की तुलना में काफी क्षीण हो रहा है। पढ़ने के तरीके, पढ़ने के विषय और उनकी तकनीक बड़ीगहरी करवट ले रही है। किताबों को टेबुल पर रखकर, टेबुलटाप के साथ, छतों पर धूप में, बिस्तरों पर लेटकर, तकियों के नीचे छुपाकर रखते हुए, रेलगाड़ियों के सफर में पढ़ने वाले हाथ अब विरल हो रहे हैं। यह परिवर्तन है। परिवर्तन सदा होते हैं। पुराने लोग अब कहकर नहीं रूकते। नए लोगों की यह दुनिया है। किताबें हमारा साथ तब देती हैं जब हम उन्हें भरपूर समय देते हैं। किताबों के लिए जीना काफी वक्त माँगता है और यही फुरसतवाला समय आज कटता जा रहा है। किताबें प्रेमियों, प्रेमिकाओं की तरह हैं उनका कोई विकल्प नहीं है। चण्डीगढ़ में एक बार मुझे सेक्टर-22 में एक मिठाई की दुकान का मालिक मिला, उसके पास अपने घर के बेसमेंट में 20 हजार किताबों का एक बहुत ही खूबसूरत पुस्तकालय था। वे दो घण्टे तो रोज किताबों की धूल हटाने, साफ-सफाई में लगाते थे। यह पूरी तरह से एक निजी पुस्तकालय था। हर किताब उनकी टिप्पणियों और नोट्स से भरी हुई थी। दुर्लभ किताबें थीं, लोकप्रिय किताबें थीं, विविधता थी, भाषाएँ थीं, इतिहास, गल्प और कविता थी। बिल्कुल रोमांचित होने वाली अवस्था थी। दूसरी तरफ देश के अधिकांश सार्वजनिक पुस्तकालयों की हालत खस्ताहाल है। सच्चाई यह है कि हम अगर अच्छी वित्तीय स्थिति में नहीं हैं तो सार्वजनिक और सरकारी क्या, हमारे निजी पुस्तकालयों का जीवन भी अँधेरे में है।

अतीव बेचैन और मुश्किल दौर में हम हैं। रायल एशियाटिक बम्बई का विशाल और भव्य पुस्तकालय अद्भुत आनन्द और विचरण की जगह है। जगह है नहीं, जगह थी। अब इसकी चमक गायब है। कुछ पागल बूढ़ों ने उसे बचा रखा है। वे वहाँ किताब पढ़ने से अधिक आराम करने और समय काटने जाते हैं। यह पुस्तकालय कम म्युजियम अधिक लगता है। रायल एशियाटिक अतीत में डूब रही है। कागज फट रहे हैं, धूल खाते कोनों की गन्दगी बढ़ रही है। गनीमत है कि आबनूस के फर्नीचर कुछ अपनी आयु के दम के कारण बचे हैं। शान्ति तो है पर हलचल नहीं है। तनख्वाहें पुरानी हैं। लोग जीवन की निवृत्ति की प्रतीक्षा कर रहे हैं। पुस्तकालय की कीमत अस्त हो रही है। यही हाल जबलपुर की जैन लाइब्रेरी और गाँधी भवन की लाइब्रेरी का है। पटना के खुदाबख्श लाइब्रेरी में कभी-कभार के लोगों का ही दमखम बचा है। सब चीजें दिल्ली में केन्द्रित हैं। वहाँ सब आकर सिमट गए हैं। वहाँ अपार धनराशि है।

किताबें अच्छी और बुरी दोनों प्रकार की होती हैं। यूँ तो आज किताबें पहली की तुलना में अधिक चमकीली, सुन्दर और दीर्घ आयु वाली हो गयी हैं पर उनका भीतरी तत्त्व इससे पहचाना नहीं जा सकता। कितना विचित्र है कि किताबें मर भी रही हैं, सज भी रही हैं। विचारों की विदाई, सभ्यता के संघर्ष, इतिहास के अन्त, स्मृति के लोप का दर्शन और तर्क पैदा करने वाली किताबें भी पिछले शताब्दी में आयीं। ये अहम किताबें थीं। इन्होंने मनुष्य ही हजारों साल की अर्जित धरोहर को विदा कर दिया। इन्होंने मनुष्य का अपमान किया और विचारों के खिलाफ अविचार पैदा कर दिए। पर हम इन किताबों को भी नष्ट नहीं करना चाहते क्योंकि समाज अच्छी-बुरी सभी किताबों का जन्मदाता है। पता नहीं क्या होगा। भविष्य के गर्भ में क्या-क्या अजूबे दिए हैं, हम इसके बारे में कोई फतवा या फब्ती नहीं कस सकते। किताबों का बोझ, किताबों का मूल्य, उनका आकार, उनकी स्पेस, उभरते चमकते अक्षरों की जगह सपाट कम्प्यूटर से निकले निस्तेज अक्षर और हम सब उसी के आदी होते जा रहे हैं। किताबें इसके बावजूद हमारी हमसफर हैं। उन्हें पहाड़ की चोटियों तक ले जा सकते हैं। कुछ ही किताबें ऐसी होती हैं जो हमारे नींव का निर्माण करती हैं। वही जीवनभर साथ रहती हैं। कभी-कभी एक अकेली कविता हमसे मृत्युपर्यन्त आबद्ध रहती है। किताबों को अगर बचाना है तो उन्हें नई तकनीकों में प्रस्तुत करना होगा। पर किताबें तो उतनी अनगिनत हैं जितने आसमान में तारे। उन्हें नई तकनीक में बरतने की मुहिम में भी धन, श्रम, तैयारी और पक्की नीयत चाहिए। हम चाहते हैं कि कैसे भी हमारी धरोहरें बचायी जाएँ और उनको कूड़ेदान में नहीं फेंका जाए। भारत जैसे मुल्क में जहाँ प्रस्तर युग भी बचा हुआ है और स्पेस युग की शुरुआत भी हो चुकी है अनेक पीढ़ियाँ हैं जीवन की, अनेक स्तर हैं जीवन के। यहाँ तो किताबों की अनिवार्यता बहुत बढ़ी-चढ़ी है। गरीबी और साक्षरता की दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों की वजह से किताबें वजन में हल्की, आकर्षक, सस्ती और लम्बी अवधि तक न नष्ट होने की मजूबती में हों। पुस्तकें गाँव-गाँव, कस्बों, तहसीलों और पहुँच के करीब हों। चीन की तरह यहाँ भी किताबें आपके दरवाजे पर उपलब्ध हों, किस्तों में उपलब्ध हों, नि:शुल्क पुस्तकालयों में उपलब्ध हों, भारत देश में अभी पुस्तकों का जीवन बचा हुआ है। किताब के साथ हलचल हो, अखबार हो, पत्रिकाएँ हों, लेने-देने वाले लोग हों। जगहें भी शान्त हों। कबाड़ी भी किताबों से बनते हैं। कबाड़ी भी महान किताबों को सुरक्षित रखते हैं। कबाड़ियों और पुस्तक खोजी प्रेमियों का अजीब रिश्ता है। हमारे देश में अनेक शहरों में कीमती किताबों वाले फुटपाथ चिह्नित हैं। हम तो पढ़े-लिखे लोग हैं, हमें किताबों की नई भूमिकाओं को सोचना चाहिए। उनकी खोज करनी चाहिए ताकि किताबें सदा प्रकाशित रह सकें।

कोलकाता में मैंने घूम-घूमकर देखा चलित पुस्तकालय हैं। हर मोहल्ले में दो-तीन पुस्तकालय हैं। गेराजों में छोटे-छोटे पुस्तकालय बना रखे हैं। निम्न वर्ग, मध्य वर्ग के लोग वहाँ जाते हैं। बच्चे, महिलाएँ जाती हैं। रिहायशी कमरों में लोगों ने पाठ्य-पुस्तकों के पुस्तकालय बना रखे हैं। इन छोटे-छोटे गरीब पुस्तकालयों से संसार के पुस्तकालयों की भी याद आ रही है। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी, यूनाइटेड स्टेट लाइब्रेरी कांग्रेस और मास्को का पुस्तकालय, हमारे यहाँ इस तरह के पुस्तकालय नहीं हैं। हमें छोटे-छोटे, जगह-जगह वाले पुस्तकालय चाहिए। आने वाले समय में सभ्यताएँ, विकास के नए ढाँचों में किताबें कितना साथ देंगी यह एक प्रश्न चिह्न है। आज हमारे देश में किताबें जलाई जा रही हैं। दुर्लभ पुस्तकालयों को तोड़ा-फोड़ा जा रहा है। किताबों को बर्दाश्त करना कठिन है। किताबें हमारे खिलाफ चली जाती हैं। उनको लोकतांत्रिक समाज ही बर्दाश्त कर सकते हैं। फासिस्टों के लिए किताबें एक विरुद्ध जीवन हैं। ध्यानरहे मित्रों जब हम विचारों को प्रवाहमान बनाते हैं तो अनन्त रास्ते खुलते हैं। इसके बिना शिखर पर कैसे पहुँच सकते हैं। फिरदौसी ने कहा कि सफलता प्राप्त करने के लिए अपने को कभी भेड़िया बन जाना चाहिए कभी भेड़। किताबों को जो लोग जला रहे हैं उनके साथ हमें इसी रणनीति का पालन करना चाहिए।

पुस्तकों के महत्त्व के सहस्र पहलू भी हैं। यह जो आईटी तथा प्रबन्धन की बिल्कुल नई जगमगाती, मोहक, चिलबिली, धनाढ्य दुनिया है उसका अंत:करण बहुत मनहूस और यांत्रिक है। इसमें प्रचुर सम्पदा तो है पर प्रफुल्लता और फुरसत नहीं है। इन संस्थाओं की लाइब्रेरी में किताबें ही एक प्रेमी संगी हो सकती हैं जो इन्हें समृद्ध कर सकती हैं। उनके अपने विषय के अलावा प्रबन्धन और आईटी संस्थाओं में तिलिस्म, इतिहास, कविता, जीवन की किताबें भी रहनी चाहिए। इन्हें योगासन करने की जगह पुस्तकें पढ़नी चाहिए। तनाव दूर करने का यह

शेष पृष्ठ 18 पर

तेग़ अली का 'बदमाश दर्पण'

—राजेश जोशी

तेग़ अली के 'बदमाश दर्पण'। कविता संग्रह का यह नाम जितना रोचक है, उसके कवि का परिचय भी उतना ही मजेदार है।

तेग़ अली एक गुण्डे थे। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में वे अपने उरूज़ पर थे। वे बनारस के उत्तरी भाग के मुहल्ले तेलियाना मुत्तसिल भदाऊँ के निवासी थे। भारतेन्दु के समकालीन थे। उन्होंने काशिका में ग़ज़लें लिखीं थीं। राहुल सांकृत्यायन ने बनारस की भोजपुरी का यही नामकरण किया था। उनके एकमात्र संग्रह 'बदमाश-दर्पण' में उनकी सम्पूर्ण याने तेईस ग़ज़लें संकलित हैं। भारतेन्दु से वे उमर में बड़े थे और भारतेन्दु मण्डल में शामिल थे। रामचन्द्र शुक्ल के हिन्दी साहित्य के इतिहास में लेकिन तेग़ अली का नाम नहीं है। भारतेन्दु ने एक काल्पनिक मुशायरे का खाका लिखा था जिसमें तेग़ अली की कुछ ग़ज़लें भी शामिल की थीं। उनकी मृत्यु भारतेन्दु के बाद हुई। उनके एक शेर में 1887 के काबुल और तुर्किस्तान के बीच युद्ध का उल्लेख मिलता है। नारायण दास ने बदमाश दर्पण की भूमिका में तेग़ अली के जीवन और कृतित्व का विस्तार से वर्णन किया है। बदमाश दर्पण का पहला संकलन जीवन प्रेस के बाबू रामकृष्ण वर्मा ने 1895 में किया था। इसके बाद रुद्र काशिकेय के भाष्य के साथ भी एक संस्करण प्रकाशित हुआ। वर्तमान में जो बदमाश दर्पण मिलता है वह नारायण दास की व्याख्या के साथ है। नारायण दास मानते हैं कि सन् 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य का पतन शुरू हो चुका था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने अपने पाँव पसारना शुरू कर दिया था। जनता पर दोहरीमार थी। काशी की जनता त्रस्त थी। निराशा से भरे इसी समय में एक नये सम्प्रदाय का उदय हुआ। जिन्हें काशी में गुण्डा कहा जाता था। जयशंकर प्रसाद ने अपनी प्रसिद्ध कहानी 'गुण्डा' में अठारहवीं सदी के मध्य के ख्यात गुण्डे नन्हकू सिंह का ही खाका खींचा है। तेग़ अली नन्हकू सिंह के बाद के दौर के प्रसिद्ध गुण्डों में से एक थे। गुण्डा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के गुण्ड शब्द से हुई है। गुण्यति का अर्थ है आश्रय से ढाँप लेना या रक्षा करना।

तेग़ अली का पेशा गुण्डई था। रुद्रजी इस बात से असहमत थे। लेकिन खुद तेग़ अली ने एक ग़ज़ल में लिखा है 'न कौनो काम करीला न नौकरी बा कहूँ/वइठ के धूर कऽ रसरी रजा बटत बाटी।' उनकी ग़ज़लों में जुआ खिलाना, दुकानदारों से खर्चा वसूलना, महाजनों से इच्छित चीजें छीन लेना, लड़ना भिड़ना, मारपीट, लाठी चलाना, चाकू चलाना आदि का वर्णन मिलता है। प्रेम दर्शन का अन्दाज़ भी बिल्कुल अलग ढंग का है। उसमें माशूका स्त्री भी है और कई जगह लड़के भी। उसमें शराब और साकी नहीं है। शराब की जगह दूधिया ठण्डई है, भाँग बूटी है। अखाड़े हैं। मुगदर है, लाठी है। कुश्ती और कसरत है। कई बार तो वह अपने माशूक से कहते हैं कि अखाड़े में आकर वह अपना बदन बनाये।

तेग़ अली संगीत के शौकीन थे। उनकी ग़ज़लों में तरह-तरह के वाद्ययंत्रों का उल्लेख मिलता है। वे रहीम और रसखान की परम्परा के कवि लगते हैं। उनकी ग़ज़लों में राम, कृष्ण, दुर्गा, गंगा, तुलसी, प्रयाग, वृन्दावन, द्वारिका आदि का जिक्र बार-बार आता है। उनकी ग़ज़लों में अनेक मिठाइयों के नाम आते हैं बासौंधी, बरफी, खाजा, खुरमा, बुंदिया, मगदल, हलुआ आदि। हिन्दी में अपराध जगत की आन्तरिक छवियाँ लगभग नहीं हैं। पश्चिम की तरह अपराध जगत को अन्दर से जानने वाले लेखक या स्वयं कभी अपराधी रहे लेखक हमारी भाषा में नहीं हैं। अच्छा जासूसी लेखन भी हिन्दी में नहीं हुआ। चर्चा के समय ज्यादा से ज्यादा नीले फीते का जहर और श्रीलाल शुक्ल के आदमी का जहर को गिना दिया जाता हे। मुक्तिबोध ने कहीं इस समस्या की तरफ इशारा किया था। हिन्दी आलोचना में उनके जासूसी साहित्य को पढ़ने और उसकी चर्चा करने को उनके दुर्गुणों की तरह देखा गया। हिन्दी कविता की एक सीमा उसकी भाषा की अत्यधिक शालीनता में भी है। उसमें हमारे समय के बर्बर अपराधी चरित्र की भयावहता के लिए उपयुक्त भाषा और बिम्ब विधान नहीं हैं। वह अपने समाज के भीतर पनप रही अपराध की बर्बर दुनिया से लगभग अपरिचित है। तय है कि हमारे समय के गुण्डों का चरित्र नन्हकू सिंह या तेग़ अली जैसा नहीं है। लेकिन प्रसाद जैसी कोई कोशिश भी हमारे यहाँ नहीं है। सुल्ताना डाकू या डाकू मानसिंह पर इक्का-दुक्का नौटंकी भले ही मिल जाये।

(दो)

तेग़ अली के कुछ शेर देख लेना दिलचस्प भी होगा और उसकी ग़ज़ल के तेवर को थोड़ा समझा भी जा सकेगा।

रोज कह जालऽकि आईला से आवत बाटऽ।
सात चौदऽ काऽ ठेकाना तूं लगावत बाटऽ॥

तुम रोज कह जाते हो कि अभी आता हूँ लेकिन अभी तक आते ही रह गये। यह तो तुम सात से चौदह साल की सजा करवाने का इन्तजाम कर रहे हो।

ई छलावा न रही पल्ले परले देखब नऽ।
पिरथी मूंड़े पै तूं काहे के उठावत बाटऽ॥

यह तुम सिर पर पृथ्वी क्यों उठाये ले रहे हो। जब तुम मेरे पल्ले पड़ोगे तो यह शेखी गायब हो जायेगी।

❑❑

दुआरे राजा के जुआ परल बा जानऽ लऽ।
रजा अधेली कऽ पत्ती हमार बटलै बा॥

तुम तो जानते ही हो राजा कि दरवाजा में जुआ होता है और यह भी कि उस अड्डे की नाल की आमदनी में तेरी भी आधे की साझेदारी है।

❑❑

चढ़ जालैं कौनो दाँव पै सारे तऽ लेईला।
कंचन कऽ गोप मोती कऽ माला तोरे बदे॥

कोई साला मेरे हत्थे चढ़ जायेगा तो तुम्हारे लिये मैं खरे सोने की गोप और मोतियों की माला झटक लूँगा।

❑❑

बिन चुकौले लहू कऽ मोल न छोड़ब तोहें रजा।
गोजी से बा कपार गयल फट तोरे बदे।

तुम्हारे पीछे लाठी बाजी करने में मेरी खोपड़ी फट गयी। मैं अपने खून का मोल तुमसे वसूले बिना नहीं छोड़ूँगा।

❑❑

दुरगा उठावऽ नाहीं तऽ बिछुआ घुसेरीला।
सबके छलब न तेग के रगधै छलल करब॥

दुर्गा की कसम खाकर कहो कि सबको भले छलूँ लेकिन राम कसम तेग को कभी नहीं छलूँगा। नहीं तो मैं अभी बिछुआ घुसेड़ता हूँ।

❑❑

चूमीला माथा जुलफी कऽलट मूं में नाईला।
संझा सबेरे जीभी में नागिन डँसाईला॥

मैं उसका माथा चूम लेता हूँ और उसकी लट को मुँह में लेता हूँ। गोया सुबह शाम जीभ पर नागिन से डसवाता हूँ।

तेईस ग़ज़लों में तकरीबन 200 शेर हैं और उनके कई रंग हैं।

बदमाश-दर्पण, (**तेग़ अली** रचित), सम्पादक-व्याख्याकार : **नारायण दास**, मूल्य : 60.00, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

पृष्ठ 17 का शेष

कारगर उपाय है। पुस्तकें डिप्रेशन समाप्त करती हैं। वे परिवेश को संवेदनशील बनाती हैं। यांत्रिक जीवन की कठोरता से जीवन को मुक्त करती हैं। ज्ञान का अर्थशास्त्र क्रूर न हो स्पन्दित हो इसीलिए हिन्दी के सुप्रसिद्ध प्रकाशक अरविन्द कुमार ने हाल ही में एक किताब छापी है। उसका नाम है काबुल का किताबवाला। आप सब इसे जरूर पढ़ें। हम प्राय: कहा करते हैं कि दीपक और घुन कभी भी पहुँच सकते हैं। मैं कहता हूँ कि संसार के दुर्लभ भूखण्डों में, तिब्बत और काबुल में भी तालिबानों के बावजूद भी किताबें बची हुई हैं। सेंसर, आगजनी और बन्दिशों के बावजूद भी किताबें पढ़ी जा रही हैं।

माटी कहे कुम्हार से

मिथिलेश्वर

प्रथम संस्करण : 2005

भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 385.00

समाज बदलने की सफल कोशिश

'माटी कहे कुम्हार से' प्रसिद्ध कथाकार मिथिलेश्वर का नवीनतम उपन्यास है। मोटे कलेवर वाले इस उपन्यास में झुग्गी-झोपड़ियों का वर्णन, तमाम नृशंसताओं, हत्या, लूट, चोरी, फिरौती के साथ-साथ अनेक सामाजिक रूढ़ियों, प्रथाओं, परम्पराओं, रीतियों-कुरीतियों का विस्तार से वर्णन है। राजनीतिज्ञों का दोहरा चरित्र है। स्वार्थपरता की वह चरमसीमा है जहाँ पहुँचकर इन्सान इन्सानियत की सीमाओं को लाँघ जाता है। यहाँ लेखक ने विस्थापित, तिरस्कृत, बहिष्कृत, बेसहारा, लाचार लोगों की दुनिया का ऐसा चित्र खींचा है जो हमारे समाज के अंग होकर भी समाज से छिटक गये हैं, सामाजिक नियमों से अपने को मुक्त कर लिया है। यहाँ जाति-धर्म, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब को रेखांकित करनेवाली विभाजक रेखा नहीं है।

झोपड़पट्टी के लोगों में अपना सब कुछ वर्तमान में खोज लिया है। रोज कमाना एवं खाना, कोई संचय नहीं करना, क्योंकि उन्हें कल की कोई चिन्ता नहीं। हँसना एवं गाना उनके जीवन का मूल उद्देश्य है। ऐसे ही वातावरण में कथानायिका मुनिला (मुन्नी) पलती-बढ़ती है। उसके विकास के साथ कथा का विस्तार हुआ है। मुनीलाल नामक युवक से प्रेम-विवाह, झोपड़पट्टी से रघुनाथपुर पहुँचकर प्रतिष्ठा का जीवन जीना, वहीं पर मुनीलाल की हत्या, मुनिला का बजरंगपुर पहुँचना उपन्यास के प्रमुख पड़ाव हैं। बजरंगपुर में जमींदारों की ऐय्याशी, जमींदारी के दोष के साथ-साथ समाज में व्याप्त अनेक प्रकार की रीतियों, कुरीतियों, शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार का वर्णन है।

राजनीति का असली चेहरा बेनकाब करने का लेखक ने भरपूर प्रयास किया है। 'जनहित सेवादल' में शिकायत के लिए पहुँची मुनिला को गगनबिहारी चुनावी मोहरा बनाते हैं। जब मुनिला उनकी नीतियों से समझौता नहीं कर पाती तब उसकी हत्या कर दी जाती है। लेखक का सन्देश यहाँ भविष्य के प्रति आशावादी है। उनका कहना है समाज के लिए जो मारे जाते हैं वही समाज के कर्णधार हैं। उनका यह भी मानना है कि ''अब और अधिक समय तक यहाँ गलत को प्रश्रय मिलने वाला नहीं है। यह समय भी अब वह पहलेवाला नहीं रहा। पहले पर्दे के पीछे गलत को छिपने का अवसर था। अब वह पर्दा फट चला है। मुनिला की यह घटना सिर्फ सामान्य घटना नहीं...., समाज के बदलने की शुरुआत है....।''—**डॉ० पूनम सिंह**

संस्कृत साहित्य में रहीम

डॉ० नाहीद आबिदी

प्रकाशक : राष्ट्रिय संस्कृत-संस्थानम्, नई दिल्ली

मध्यकालीन हिन्दी-साहित्य में रहीम को सामान्यत: नीतिपरक दोहों के रचनाकार के रूप में जाना जाता है। वे बहुभाषाविद थे। वे हिन्दी के साथ संस्कृत और फारसी के विद्वान् तथा सजग रचनकार थे। संस्कृत में उन्होंने हिन्दू देवी-देवताओं के प्रति विनयपरक रचनाएँ की हैं। रहीम उस मध्ययुगीन अकबरकालीन सहज मानवीय रचनात्मक एवं समन्वयात्मक दृष्टि के विचारक थे जो हिन्दू और मुसलमानों को इस महादेश का नागरिक मानकर देवी-देवताओं के विभिन्न नाम-रूपों की भेदात्मक दृष्टियों से एकत्व की तलाश में विकसित हो रही थी।

प्रस्तुत ग्रन्थ की रचनाकार डॉ० नाहीद आबिदी (संस्कृत विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी) मुस्लिम होते हुए रहीम की परम्परा में संस्कृत में एम०ए० किया, वेद में पी-एच०डी० प्राप्त की। उन्होंने रहीम के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विस्तृत अध्ययन करते हुए, काव्यशास्त्रीय तथा नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से रहीम का मूल्यांकन किया है। रामायण, महाभारत, पौराणिक, कथाओं, श्रीमद्भगवद्गीता तथा वैदिक धर्म, दर्शन और रहीम-काव्य के महाकाव्यों में भाव-साम्य का तुलनात्मक अध्ययन किया है।

रहीम के नीतिकाव्य अथवा उपदेश-काव्यों—भर्तृहरि, आचार्य शंकर, चाणक्य, हनुमन्ननाटककार, संस्कृत की सुभाषित उक्तियों के भाव-साम्य पर भी विचार किया गया है। रहीम की संस्कृत कृतियों का विस्तृत अध्ययन भी है।

ग्रन्थ-लेखिका ने इस अध्ययन द्वारा दो संस्कृतियों के बीच सेतु स्थापित कर एक विशिष्ट कार्य किया है। इसके लिए उन्हें कितना भी साधुवाद दिया जाय, वह अपर्याप्त होगा। उन्होंने अपनी इस रचना से सिद्ध कर दिया है कि मुस्लिम शासनकाल में भी दोनों संस्कृतियाँ, स्वदेश-प्रेम और राष्ट्रीय एकता की संवाहक थीं।

सच और संवेदना (कविता संग्रह)

डॉ० रामअवतार पाण्डेय

सेवक प्रकाशन, ईश्वरगंगी, वाराणसी

मूल्य : 200.00

आधुनिक जीवन की त्रासद विसंगतियों के मार्मिक चित्रों के साथ ही समाज के शोषित एवं दलित वर्गों की पीड़ा की यथार्थ अनुभूति के स्वर इन कविताओं में है। रचनाकार ने चलते-फिरते, अपनी दैनन्दिन जीवनचर्या में अनायास जिस सच का साक्षात्कार किया है, उसे गहरी रागात्मक संवेदना के साथ यथासम्भव शब्दाचित करने का प्रयास किया है। इस दृष्टि से संग्रह का शीर्षक 'सच और संवेदना' बहुत सार्थक है।

जोग-संजोग

राजस्थानी समाज के पुरुषार्थ और संघर्ष की रोचक कथा

राजेन्द्र केडिया

वृन्दा प्रकाशन, 16 नूरमल लोहिया लेन, कोलकाता-7

मूल्य : 295.00

सेठ हजारीमल का नमक का विशाल और फैला हुआ कारोबार था। कच्छ और गुजरात के तटवर्ती इलाकों और राजपूताने कीसांभर झील के क्षेत्र से, हजार-हजार बलद गाड़ियों, और ऊँटों के टांडे सेठ हजारीमल का नमक और अनाज लाद कर चला करते थे। बैलों और ऊँटों के गले में बँधी घंटियों का स्वर, गाँवों, शहरों, धोरों और मैदानी इलाकों को पार करते हुए वे टांडे पर्वतीय इलाकों की घाटियों और तलहटियों तक नमक पहुँचाते थे।

समय ने करवट ली, पारिवारिक, सामाजिक मोह, ममता ने नई स्थितियाँ उत्पन्न कीं। तत्कालीन राजस्थान के रीति-रिवाज, कुरीतियों और टोने-टोटके उस राजस्थान का चित्र प्रस्तुत करते हैं, जो पुरुषार्थी के साथ भाग्यवादी था। कहते हैं—

इंसान का मन ही उसका भूत होता है, प्रेत होता है, वही उसका पितर भी होता है। उसका प्रेम, उसकी दया, उसका हठ, उसकी वासना, उसका क्रोध और उसकी ईर्ष्या ही उसको कभी प्रेत तो कभी पितर बना देती है। इन्सान स्वयं अपने को श्राप देता है और श्रापित बन जाता है। वही खुद को वरदान देता है और उसको भोगता भी है।

यह बिल्कुल निश्चित और तय बात है, इसमें कोई जोग संजोग नहीं होता है। राजस्थान के अतीत को अनुभव करते हुए वर्तमान राजस्थान को देखना आश्चर्यजनक प्रतीत होता है।

पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक

(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)

वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082

E-mail: sales@vvpbooks.com

पुस्तक समीक्षा

खजुराहो की मूर्तिकला के सौन्दर्यात्मक तत्व

डॉ० शरद सिंह

प्रथम संस्करण : 2006
ISBN : 81-7124-494-7
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 400.00

खजुराहो पर एक नया दृष्टिकोण

खजुराहो अपने अनूठे शिल्प सौन्दर्य के कारण पर्यटकों, इतिहासकारों एवं कलावेत्ताओं को सदैव लुभाता रहा है। खजुराहो का मूर्तिशिल्प अपने-आप में जिस यक्ष-प्रश्न के उत्तर को छिपाए हुए है वह प्रश्न है कि चंदेल राजाओं ने मन्दिर भित्तियों पर उकेरी गई मूर्तियों में रति कला को स्थान क्यों दिया? खजुराहो के मूर्तिशिल्प से जुड़ा हुआ एक और प्रश्न अक्सर सामने आ खड़ा होता है कि खजुराहो में रतिमिश्रित मूर्तिशिल्प के अतिरिक्त और क्या विशेष है? मोटे तौर पर इसका उत्तर यही होता है कि खजुराहो का मन्दिर स्थापत्य विशिष्ट है। वस्तुत: इन दोनों विशेषताओं से बढ़ कर भी एक तत्त्व है जो खजुराहो के मूर्तिशिल्प को विशिष्ट सिद्ध करता है, और वह है खजुराहो की मूतिकला में मौजूद सौन्दर्यात्मक तत्त्व। खजुराहो की मूर्तिकला पर आंग्ल भाषा पर अनेक पुस्तकें हैं, कुछ पुस्तकें हिन्दी में भी लिखी जा चुकी हैं किन्तु कम से कम हिन्दी में 'खजुराहो की मूर्तिकला के सौन्दर्य तत्त्व' की इतनी विशद व्याख्या और किसी पुस्तक में नहीं मिलती है जितनी की डॉ० (सुश्री) शरद सिंह की सचित्र पुस्तक 'खजुराहो की मूर्तिकला के सौन्दर्यात्मक तत्त्व' में मिलती है।

डॉ० शरद सिंह साहित्य एवं इतिहास विषयक लेखन के क्षेत्र में एक सुपरिचित नाम है। अत: खजुराहो की मूर्तिकला के सौन्दर्यात्मक तत्त्वों का विश्लेषण करते समय उनकी शोधपरक दृष्टि तथा लेखकीय कौशल ने विषय के उन सभी पक्षों को सामने रखने का सफल प्रयास किया है जो प्राय: अनदेखे, अनछुए रह जाते हैं। '**खजुराहो की मूर्तिकला के सौन्दर्यात्मक तत्त्व**' पुस्तक में खजुराहो के भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं मन्दिर निर्माण सम्बन्धी परिचय के बाद सबसे पहला अध्याय है—'कला और सौन्दर्य'। जैसा कि लेखिका ने स्वयं लिखा है कि ''किसी भी कलात्मक वस्तु चाहे वह मन्दिर हो या मूर्ति, उसके सौन्दर्य को तभी समझा जा सकता है जबकि मानसपटल पर यह तथ्य स्पष्ट हो कि कला क्या है? सौन्दर्य क्या है?'' प्रथम अध्याय में लेखिका ने सौन्दर्यशास्त्र की अवधारणा के साथ-साथ मूर्तिकला में सौन्दर्य तत्त्व कौन-कौन से होते हैं, इसकी विवेचना भी की है।

प्रथम अध्याय के बाद के सभी अध्याय खजुराहो की मूर्तियों में मौजूद सौन्दर्य के विभिन्न तत्त्वों पर केन्द्रित हैं। इन्हें पढ़ने के बाद इस तथ्य पर चकित हुए बिना नहीं रहा जा सकता है कि खजुराहो की मूर्तियाँ सौन्दर्य प्रसाधन, वेशभूषा, अलंकरण तथा ललित कलाओं की विविधताओं से परिपूर्ण हैं। स्त्रियों के वस्त्राभूषण, स्त्रियों के सौन्दर्य प्रसाधन, स्त्रियों की केश सज्जा, स्त्रियों के मनोरंजन के साधन आदि के साथ-साथ पुरुषों के सौन्दर्य प्रसाधन, पुरुषों की केश-सज्जा, पुरुषों के वस्त्राभूषण तथा पुरुषों के मनोरंजन के उन सभी तरीकों का विशद विवरण प्रस्तुत किया गया है जो खजुराहो की मूर्तियों में तत्कालीन कलाकारों ने उकेरा है।

डॉ० शरद सिंह ने खजुराहो की मूर्तियों में प्रदर्शित नृत्य, गायन, वादन, चित्रकला गोष्ठी, लेखन आदि विविध ललित कलाओं के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी है। इसी प्रकार पुस्तक में खजुराहो की मूर्तियों में प्रकृति के उकेरे गये विविध रूपों तथा प्रतीक तत्त्वों पर भी प्रकाश डाला है। इसके अन्तर्गत विविध प्रकार के वाद्यों, देवताओं के वाहनों, मांगलिक प्रतीकों तथा अस्त्र-शस्त्रों का विवरण है। लेखिका ने खजुराहो की मूर्तिकला के प्रति अपनी मौलिक दृष्टि को सामने रखते हुए सौन्दर्यशास्त्रीय विवेचन भी प्रस्तुत किया है। 'खजुराहो की मूर्तिकला के सौन्दर्यात्मक तत्त्व' में खजुराहो के मूर्तिशिल्प का समकालीन मूर्तिशिल्प से तुलनात्मक आंकलन भी किया गया है जो खजुराहो की मूर्तिकला की विशेषताओं का और अधिक दृढ़तापूर्वक रेखांकित करता है।

'खजुराहो की मूर्तिकला के सौन्दर्यात्मक तत्व' पुस्तक में लेखिका ने शिरोवस्त्र, वस्त्र-विन्यास, केश-सज्जा, गले के आभूषण, हाथों तथा पैरों के आभूषण, कानों के आभूषण, वाद्ययन्त्रों तथा आयुधों के सुन्दर रेखाचित्र तथा लगभग चौंसठ छायाचित्र दिए हैं जिनसे विषयवस्तु को समझने में भरपूर मदद मिलती है। डॉ० शरद सिंह की पुस्तक 'खजुराहो की मूर्तिकला के सौन्दर्यात्मक तत्त्व' खजुराहो की मूर्तिशिल्प एवं उसमें निहित सौन्दर्य तत्त्वों को समझने तथा जानने की दिशा में एक अत्यन्त उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण कृति है। यह पुस्तक खजुराहो को एक नए दृष्टिकोण से देखने और समझने की क्षमता प्रदान करने में सक्षम है।

—गुलाबचन्द, '*उत्तर प्रदेश*' से

हिन्दी भाषा, व्याकरण और रचना

डॉ० अर्जुन तिवारी

प्रथम संस्करण : 2006
ISBN : 81-7124-523-4
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 150.00

भाषा की महत्ता का आकलन

व्याकरण की अज्ञानतावश कई तरह की गलतियाँ हो जाती हैं जिससे अर्थ का अनर्थ हो जाता है। व्याकरण के ज्ञान से व्यक्ति स्वजन (सम्बन्धी), श्वजन (कुत्ते), सकल (पूर्ण), शकल (आधा), सकृत (एक बार), शकृत (मल) जैसे अनेक शब्दों में भेद जान पाता है। हिन्दी के शुद्ध ज्ञान के लिए डॉ० अर्जुन तिवारी की पुस्तक 'हिन्दी भाषा व्याकरण और रचना' एक बेहतर किताब है। इसकी मदद से भाषा और साहित्य के सम्बल पर सफलता की सीढ़ी पर तेजी से चढ़ सकते हैं। किस्मत को मुट्ठी में कैसे बाँधें? इस पुस्तक को पढ़कर सीखा जा सकता है। आईएएस, पीसीएस तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में हिन्दी को लेकर सफलता प्राप्त करने के इच्छुक परीक्षार्थियों के लिए यह किताब उपयुक्त है। हमारी मातृभाषा हिन्दी सर्वाधिक सरल, सहज भाषा सिद्ध हो चुकी है। राजा राममोहन राय ने भी स्वीकार किया है कि 'हिन्दी में अखिल भारतीय बनने की क्षमता है।' इस पुस्तक की मदद से हिन्दी का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

यह पुस्तक तीन खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड 'भाषा एवं हिन्दी भाषा' के अन्तर्गत भाषा की परिभाषा, उसकी विशेषता, उत्पत्ति के साथ भाषा विज्ञान के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। इसी अध्याय के अन्तर्गत ही विश्व भाषाओं का वर्गीकरण, भारतीय आर्य भाषा तथा हिन्दी भाषा की महत्ता का आकलन भी इसी खण्ड में किया गया है।

द्वितीय खण्ड 'व्याकरण' में, व्याकरण के स्वरूप, उसकी उपयोगिता को बताया गया है। वर्ण, वर्तनी, विरामचिह्न, लिपि, विकासक्रम, संज्ञा, सर्वनाम, विश्लेषण, क्रिया, अव्यय, अलंकार, छन्द, वाक्य रचना की सोदाहरण प्रस्तुति ग्रन्थ की अपनी विशेषता है। लिंग,वचन तथा कारक विवेचन को विशुद्ध रूप से रेखांकित किया गया है ताकि हिन्दी में आये दिन हो रही त्रुटियों से पाठक वर्ग सावधान रहे।

तृतीय खण्ड 'रचना' में शब्द भण्डार, संक्षेपण, पल्लवन, प्रारूपण, पत्र लेखन को स्पष्ट किया गया है। इनके आदर्श लेखन की पंक्तियों को भी बताकर उनके उदाहरण दिये गये हैं ताकि

इसी प्रारूप से नई पीढ़ी रचना कर सके। रस, छन्द, अलंकार के विभिन्न पहलुओं को बोधगम्य रूप से समझाने का प्रयास ग्रन्थ की विशेषता है। शब्द शक्ति, काव्यगुण, काव्य दोष, की व्याख्या के साथ साहित्य सृजन के सोपानों को सुस्पष्ट किया गया है। कविता, कहानी, नाटक, एकांकी, निबन्ध, गद्यकाव्य, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, यात्रावृत्त, पत्रकारिता, रिपोर्ताज, डायरी आदि विधाओं का सारगर्भित विवेचन, हिन्दी रचनाकारों के लिए कण्ठहार है। इस पुस्तक में व्याकरण पर विस्तृत चर्चा की गयी है।

—डॉ० प्रभा रानी, '*हिन्दुस्तान*' से

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और उनके समकालीन आलोचक

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

प्रथम संस्करण : 2007

ISBN : 81-7124-529-3

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 60.00

प्रो० रामचन्द्र तिवारी जीवन के नवें दशक में प्रवेश कर चुके हैं। उनके पास अनुभव का एक व्यापक संसार तथा अध्ययन का एक चिन्तनशील मानस विद्यमान है। वह आज भी साधक की तरह पढ़ने बैठते हैं और आलोचक की तरह विश्लेषण करते रहते हैं। प्रो० तिवारी का 50 वर्ष का जीवन अध्ययन व लेखन में व्यतीत हो गया। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में डॉ० तिवारी अपनी सटीक टिप्पणी के माध्यम से प्रभूत यश अर्जित कर चुके हैं। 'हिन्दी का गद्य साहित्य' उनकी ऐसी मुकम्मल पुस्तक है कि केवल उसे ही पढ़ लिया जाय तो किसी अन्य गद्य की पुस्तक पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं होती। वह निरन्तर लिख रहे हैं। उनके दीर्घकालिक अनुभव और परिपक्व ज्ञान का परिपाक उक्त पुस्तक के रूप में तैयार हुआ है।

प्रस्तुत रचना में प्रो० तिवारी ने आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, श्यामसुन्दरदास, कृष्णबिहारी मिश्र, पद्म सिंह शर्मा, लाला भगवानदीन तथा बाबू गुलाब राय के आलोचकीय व्यक्तित्व पर प्रभूत मात्रा में अपना विचार व्यक्त किया है। ध्यातव्य है कि आचार्य शुक्ल इन छह आलोचकों में कई से अवस्था में छोटे हैं। पर उनकी दृष्टि छहों आलोचकों से बहुत बड़ी है। लगता है इसी को ध्यान में रखकर आचार्य शुक्ल और अन्य पाँच समीक्षकों का विश्लेषण हुआ है। शुक्लजी में विश्लेषण की अचूक क्षमता उन्हें एक समर्थ समीक्षक सिद्ध करती है। उनका हिन्दी और अंग्रेजी का ज्ञान उनकी आलोचना में पूर्णत: उतरता दिखायी पड़ता है। शायद इस प्रकार का योग अन्य समीक्षकों में नहीं है। पर हिन्दी निर्माता की दृष्टि से अन्य पाँच समीक्षकों का आंकलन कम नहीं है। बाबू श्यामसुन्दरदास ने जहाँ हिन्दी को एक मानक भाषा और साहित्य के रूप में प्रतिष्ठित किया वहीं मिश्र बन्धुओं में श्रीकृष्णबिहारी मिश्र ने 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' लेखन की परम्परा विकसित की। पद्म सिंह शर्मा ने तुलनात्मक आलोचना के माध्यम से पूर्व में की गयी अनेक त्रुटियों की ओर हिन्दी पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया था। उक्त चमत्कार शर्माजी को प्रिय था। लाला भगवानदीन ने टीका पद्धति को एक उत्कर्ष प्रदान किया और बिहारी बन्धुओं द्वारा की गयी आलोचना पर बेबाक टिप्पणी कर हिन्दी में प्रत्यालोचना को महत्त्व प्रदान किया। बाबू गुलाब राय व्यावहारिक और सैद्धान्तिक दोनों प्रकार की आलोचना में समन्वयशील विचारक के रूप में जाने जाते हैं।

प्रो० रामचन्द्र तिवारी के सद्य: प्रकाशित कृति में इन आलोचकों और उनकी कृतियों पर स्पष्ट विचार आ सके हैं। वैसे भी हिन्दी में आलोचक और आलोचना परम्परा को समझने के लिए यह पुस्तक महत्त्वपूर्ण है। आज के हिन्दी पाठक प्राय: आचार्य शुक्ल तक ही आलोचना का संसार मानते हैं। पर तिवारीजी ने इन आलोचकों को एक स्थान पर रखकर हिन्दी पाठकों के लिए एक अभिनव और उपयोगी प्रयोग किया है। विद्यार्थियों का समाज इससे विशेष लाभान्वित होगा। आलोचना की अन्य पुस्तकों में शुक्लजी को छोड़कर शेष समकालीन आलोचकों का मात्र नामोल्लेख तथा परिगणन होता रहा है। एक स्थान पर सभी समकालीन समीक्षकों का परिचय उनकी कृतियों और मन्तव्यों का मूल्यांकन तथा हिन्दी के निर्माण में उनकी भूमिकाओं का प्रत्याखान इस पुस्तक की विशेषता है। **—उदयप्रताप सिंह,** वाराणसी

हिन्दी का गद्य साहित्य

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

षष्ठ संस्करण : 2007

ISBN : 81-7124-358-4

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य :
(अजिल्द) 440.00
(सजिल्द) 625.00

'हिन्दी का गद्य-साहित्य' का पाँचवाँ संस्करण सन् 2006 ई० में प्रकाशित हुआ था। एक वर्ष बाद अब यह छठाँ संस्करण आपके हाथों में है। इस बीच दो बार इसका पुनर्मुद्रण करना पड़ा है। यह इस महत्त्वपूर्ण कृति की क्रमश: बढ़ती हुई लोकप्रियता का द्योतक है। विगत तीन वर्षों में हिन्दी गद्य का बहुमुखी विकास हुआ है। इस विकास का समग्र आकलन करके लेखक ने प्रस्तुत संस्करण को यथासम्भव सभी दृष्टियों से समृद्ध बनाने का प्रयत्न किया है। इस क्रम में पुस्तक के तीनों खण्डों में उसे पर्याप्त परिष्कार और परिवर्तन करना पड़ा है, विशेषत: दूसरे खण्ड में विगत तीन वर्षों से गद्य साहित्य की विविध विधाओं में प्रकाशित होने वाली पूरी सामग्री का समावेश और सारगर्भित आकलन अत्यन्त श्रम साध्य कार्य था, लेखक ने इसे पूरी निष्ठा से पूरा किया है। तीसरे खण्ड में श्री विष्णु 'प्रभाकर' का मूल्यांकन बढ़ा दिया गया है। शेष गद्यकारों के मूल्यांकन में यथास्थान नयी सामग्री जोड़ दी गयी है। इस प्रकार 'हिन्दी का गद्य-साहित्य' अब हिन्दी गद्य की नवीनतम प्रवृत्तियों के विवेचन विश्लेषण से समृद्ध एक नितान्त उपयोगी सन्दर्भ ग्रन्थ बन गया है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी संसार पहले की तरह इस महत्त्वपूर्ण कृति का स्वागत करेगा और निकट भविष्य में ही इसका सातवाँ संस्करण प्रकाशित करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास

रचनाकार :
म०म० रेवाप्रसाद द्विवेदी

प्रथम संस्करण : 2007

ISBN : 81-7124-543-9

वितरक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

पृष्ठ : 528 मूल्य : 500.00

ग्रन्थकार ने संस्कृत में लिखित काव्यशास्त्र को भी आगम-मूलक सिद्ध किया है। इस ग्रन्थ के दो स्तम्भ हैं। प्रथम है आगमस्कन्ध जिसे कालातीत माना गया है। दूसरा स्तम्भ है आगमाश्रित काव्यशास्त्र के क्रमिक विकास का। द्वितीय की अन्तिम सीमा है 2005 ई०। आरम्भ है ई०पू० 300 वर्ष अर्थात् मुनि भरत के नाट्यशास्त्र से लेकर। अन्त है स्वयं ग्रन्थकार के अलं ब्रह्म (2005) ग्रन्थ से। स्मरणीय है कि प्रसिद्ध इतिहासकार काणे तथा डे ने 17वीं शती के पण्डितराज जगन्नाथ को अन्तिम आचार्य माना है। अन्त में अतिरिक्त आचार्यों के रूप में मधुसूदन सरस्वती से लेकर स्वामी करपात्रीजी तक भक्तिरस के आचार्यों का परिचय दिया गया है। ग्रन्थकार का उद्घोष है कि भारतीय काव्यशास्त्र का इतिहास तब पूरा माना जाएगा जब उसमें भारत की सभी बोलियों में निर्मित काव्यशास्त्र का संग्रह हो।

समग्र इतिहास को चार धामों में और पाँच कल्पों में बाँटा गया है। चार धामों में प्रथम धाम ठहरा काञ्चीधाम जहाँ दण्डी (650 ई०) हुए, द्वितीय धाम ठहरता है कश्मीर का शारदाधाम जहाँ भामह (700 ई०) से लेकर मम्मट आदि तक आचार्य हुए, तीसरा धाम ठहरता है धारानगरी का महाकालेश्वरधाम, जिसके प्रमुख आचार्य थे धनञ्जय, धनिक और भोजराज। चतुर्थ धाम माना गया काशी नगरी का विश्वेश्वर धाम जहाँ मधुसूदन सरस्वती, अप्पयदीक्षित पण्डितराज जगन्नाथ, स्वामी करपात्रीजी तथा सनातन (रेवाप्रसाद द्विवेदी) कवि हुए। 5 कल्पों में कविता का विकास दिखलाया गया है। प्रथम कल्प : पूर्णताकल्प, जिसकी उपलब्धि थी दोषाभाव, दूसरा कल्प : माना गया गुणकल्प जिसमें उक्ति के माधुर्य या परुषता को स्थान मिला। द्वितीय कल्प में उक्ति कविता बन गई। तृतीय कल्प को ध्वनिवादियों ने छोड़ रखा था वह था कविता का अपूर्ण अलंकार जिसे भरत मुनि ने 'लक्षण'-तत्त्व के रूप में प्रस्तुत किया था, अभिनवगुप्त ने जिसे असंख्येय बतलाया था, किन्तु भोजराज ने उसकी 64 संख्या सीमित कर दी थी। चतुर्थ कल्प था पूर्ण विकसित उपमादि विच्छित्तियों का। पाँचवाँ कल्प था 'पूर्णता से विच्छित्तियों' तक के समाहार का कल्प, जिसे प्रसिद्धि मिली 'साहित्यकल्प'। सभी कल्प केवल ज्ञानरूप थे। ध्वनिवाद को अलंकारकल्प में अन्तभूर्त माना गया और प्रौढ़ तर्कों के साथ रस को भी अलंकार कहा गया अनेक आचार्यों के आधार पर।

प्रत्येक क्रान्ति की पृष्ठभूमि भी स्पष्ट की गई तथा उसकी स्वस्थ अर्थात् आग्रहमुक्त समीक्षा भी प्रस्तुत की गयी।

आचार्यों के ग्रन्थों के सही नाम भी निश्चित किए गए यथा दण्डी के काव्यादर्श को 'काव्यलक्षण' नाम दिया गया और भामह के ग्रन्थ को भामहालङ्कार आदि आदि।

अथर्ववेद का काव्य

अथर्ववेद के चुने हुए सूक्तों का अनुवाद

अनुवादक
राधावल्लभ त्रिपाठी

प्रथम संस्करण : 2007
ISBN : 81-7124-536-6
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 150.00

अथर्ववेद (10.08.32) में कहा गया है— पश्य देवस्य काव्यम् न ममार न जीर्यति। यह देव काव्य (सृष्टि/रचना) कभी नष्ट नहीं होता, कभी झीण नहीं होता। यह वेद का केन्द्रीय स्वर है। इस धारा के उन्मेष में श्री राधावल्लभ त्रिपाठी के 'अथर्ववेद का काव्य' में काल के क्षण को जैसे एक शाश्वतता प्रदान की गई है।

पुस्तक के शीर्षक से आरम्भ में यह सामान्य धारणा बन सकती है कि यह पुस्तक 'अथर्ववेद का काव्य' मीमांसा सम्बन्धी कोई समालोचना कृति है, किन्तु इसमें रचना और समालोचना का बड़ी कुशलता से एक ही स्थानपर सम्गुम्फन है। जहाँ पुस्तक की भूमिका और सूक्तों सम्बन्धी टिप्पणियाँ श्री त्रिपाठी के आचार्यत्व की प्रमाण है, वहीं चयनित 35 सूक्तों का काव्यान्तर उनके 'कविर्मनीषी' पक्ष का प्रतिनिधित्व करता है।

विश्वविद्यालय प्रकाशन ने कुछ वर्ष पूर्व (2001) मेरी, 'वेद की कविता' प्रकाशित की थी। स्वाभाविक रूप से उसमें भी अथर्ववेद के 'पृथिवी' और 'सूर्या विवाह' आदि कुछ सूक्तों का काव्यानुवाद था। यह भी स्वाभाविक है, कि इस पुस्तक को पढ़ते हुए मैंने अपने मित्रों से यही कहा है, कि राधावल्लभजी के अनुवाद में एक स्वाभाविक अधिकार है, तथा अपने कार्य को मैं चेष्टाबल ही कहूँगा।

वेद के अपौरुषेय, वैज्ञानिक, रहस्य, दर्शन, समाजशास्त्र, इतिहास, नृतत्व और भूगोल आदि जो भी पक्ष हों, इसकी कविता सहज मानवीय संवेदनाओं का सार्वभौम निकष है। वेद के द्रष्टा ऋषि सत्य के साक्षात्कार की अपनी गहन अनुभूति को एक उत्कृष्ट काव्य के माध्यम से ही व्यक्त कर सकते थे। पृथिवी सूक्त धरती की ऐसी पहली और उत्कृष्ट कविता का ही परिचय है—

तेरी जो सौभाग्यमयी चमकीली गन्ध
रमी हुई है मनुष्यों में
स्त्रियों में, पुरुषों में,
अश्वों में, वीरों में, मृगों और हाथियों में
तेरा जो वर्चस् रहता है एक कन्या के भीतर
हे धरती अपनी उसी गन्ध में
उस वर्चस् मे एकमेक कर ले
हम सब को
कि कोई मुझसे करे न द्वेष। (पृ० 25, 73)

जैसा कि त्रिपाठीजी ने भूमिका में लिखा है, वेद के मन्त्रों का सर्व स्वीकृत काव्यान्तर/अनुवाद एक 'ऊबड़ खाबड़' में चलने जैसा है। किन्तु यह स्पष्ट है कि इसमें विराट से साक्षात्कार का जो सार्वभौम स्वर है, उसकी अनुगूँज किसी काल या स्थान की सापेक्ष नहीं है—

जो भूत, भविष्य और वर्तमान को
इस सब को
किये अधिष्ठित
जो है केवल प्रकाशमय
ज्येष्ठ ब्रह्म को हम करें नमन (1) (पृ० 44)

श्री राधावल्लभजी जैसे अधिकारी विद्वान् से वेद विषयक जैसी पुस्तक की मैं अपेक्षा कर रहा था उसे उन्होंने प्रस्तुत कर वर्तमान को सारभूत विस्तार दिया है। मैं इसके लिए उन्हें साधुवाद देता हूँ।

—प्रभुदयाल मिश्र

वेदान्त और आइन्सटीन

अनिल भटनागर

प्रथम संस्करण : 2007
ISBN : 81-7124-539-0
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 100.00

आधुनिक ज्ञान जिसे सामान्यतया वैज्ञानिक ज्ञान के रूप में जाना जाता हे, स्वयं उस आदि प्रश्न का उत्तर देने के निकट पहुँच चुका है। इस पुस्तक में वैज्ञानिक ज्ञान को वेदान्तवादी विचार में अंतरित करने और यह प्रदर्शित करने का प्रयास है कि आधुनिक विज्ञान उन्हीं निष्कर्षों पर पहुँचा है, जो वेदान्तवादी विचार में निहित है।

इस पुस्तक का पहला भाग उपनिषदों में यथा प्रस्तुत अद्वैत वेदान्त की व्याख्या करने का प्रयास है। पुस्तक का दूसरा भाग आज के समय में जिस रूप में आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान को समझा गया है, उसे एक स्थान पर एकत्र करने और यह प्रदर्शित करने का प्रयास है कि निष्कर्ष वही है जो अद्वैत वेदान्त में है। ये निष्कर्ष अल्बर्ट आइन्सटीन के सापेक्षतावादी भौतिक विज्ञान और मैक्स प्लांक के क्वांटम सिद्धान्त के बीच एक सहमति इंगित करते हैं और उस बिन्दु तक पहुँचने के द्वार हैं जिसे आज 'थ्योरी ऑव एवरीथिंग' या 'द ग्रान्ड यूनीफाइड थ्योरी' कहा जाता है।

संगीत की रसिक परम्परा

डॉ० प्रमिला प्रियहासिनी

प्रथम संस्करण : 2007
ISBN : 81-7124-549-8
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 150.00

इस ग्रन्थ में सुव्यवस्थित रूप से संगीत के विविध आयामों, विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। संगीत के लौकिक एवं लोकोत्तर क्षितिज को अपनी संवेदनशील दृष्टि से अनुभूत कर शब्दों में अभिव्यक्त किया है। संगीत के कला पक्ष तथा भाव पक्ष दोनों को सम्यक् रूप से स्पष्ट किया है, उनकी महत्ता को बताया है। संगीत एक ओर यदि स्वान्तः सुखाय होता है तो दूसरी ओर स्वात्म से सर्वात्म की ओर मानव हृदय को उन्मुख करता है।

'नादाधीनं जगत्सर्वम्'—साधकों ने, योगियों ने नाद की सर्वव्यापिनी सत्ता को जाना, महत्ता को समझा, नाद की अपार, अथाह शक्ति के प्रति सचेत हो वे नतमस्तक हुए, समर्पित हुए और कालान्तर में इसी नाद साधना का आधार संगीत बना। भारतीय चिन्तन ने नाद को ब्रह्म के रूप में प्रतिष्ठित किया

और संगीत साधना को नाद ब्रह्म की उपासना माना। नाद ब्रह्म के उपासक, संगीत मर्मज्ञ राजा श्यामानन्द सिंहजी के गहन संगीत प्रेम, उनकी सहृदयता, उनका संवेदनशील व्यक्तित्व, संगीतज्ञों के प्रति उनकी असीम उदात्त, आदर भावना, उनके सांगीतिक जीवन से जुड़ी अनेक घटनाओं, अनेक संस्मरणों से प्रमिला की यह पुस्तक अनुप्राणित हुई है। उनके जीवन से जुड़े अनेक रोचक, हृदयग्राही, शिक्षाप्रद प्रसंगों ने पुस्तक को समृद्ध किया है।

योगसाधना : आधुनिक परिप्रेक्ष्य में

खेमचन्द्र चतुर्वेदी

प्रथम संस्करण : 2007

ISBN : 81-7124-533-1

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 100.00

योग एक मानवतावादी सार्वभौम, सम्पूर्ण जीवन-दर्शन है, यह भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र है। इसके महत्त्व को सभी देश और जाति के लोग बिना भेदभाव के स्वीकार करने लगे हैं। इस पुस्तक का उद्देश्य युवा पीढ़ी की योग साधना में रुचि जागृत करना है। अनेक प्रमुख योगासनों के रेखाचित्रों सहित।

पुस्तक के विषय : भारतीय योग-परम्परा, योग का उद्देश्य एवं महत्त्व, पातञ्जल योग-सूत्र, साधनपाद (क्रियायोग और पंच क्लेश), अष्टांग-योग (यम-नियम), योगासन, प्राणायाम, अष्टांग योग (प्रत्याहार), विभूतिपाद (धारणा-ध्यान-समाधि), विभूतिवाद, कैवल्यपाद।

सौन्दर्यलहरी तन्त्र-दृष्टि और सौन्दर्य-सृष्टि

प्रभुदयाल मिश्र

प्रथम संस्करण : 2007

ISBN : 81-7124-537-4

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 120.00

शक्तिमान शिव शक्ति से अपृथक हैं, किन्तु उनके सत्य का प्रकटीकरण शिवा के सौन्दर्य निरूपण से ही किया जा सकता है। भारतीय प्रज्ञा का यह एक चमत्कार ही है कि यह अनुष्ठान आदि शंकर के द्वारा सम्पन्न किया गया जो स्वयं अद्वैत मत और निर्गुणोपासना के प्रवर्तक थे।

आदि शंकर की यह बहश्रुत, बहुपठित और सर्वसिद्ध कृति सर्वत्र समादृत है। इसका दार्शनिक और साहित्य पक्ष जहाँ इनकी मुख्य धाराओं के प्रतिमान बनाता है, वहीं इसकी अनुष्ठान क्षमता साधकों के लिये लोक और परलोक का मार्ग प्रशस्त करती है।

श्री प्रभुदयाल मिश्र योग और शक्तिपात में दीक्षित तथा वैदिक साहित्य के अन्वेषक-अध्येता हैं। उनकी 'सौन्दर्यलहरी-काव्यानुवाद' मध्यप्रदेश संस्कृत अकादेमी द्वारा 'व्यास-सम्मान' से अलंकृत है। इस कृति को जहाँ मूर्धन्य विद्वानों ने सराहा है, वहीं यह अनेक साधकों की 'पूजा का पर्याय' बनी हुई है। लेखक ने इस कृति के इस 'विशेष संस्करण' का कलेवर पुस्तक के दर्शन, तंत्र और साहित्य पक्ष को अक्षुण्ण रखते हुए तैयार किया है। पुस्तक में यन्त्र और उनके प्रयोग भी दिये गये हैं।

योगवासिष्ठ की सात कहानियाँ

भरत झुनझुनवाला

प्रथम संस्करण : 2007

ISBN : 81-7124-548-X

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 60.00

एक बार युवावस्था में श्रीराम को वैराग्य उत्पन्न हो गया था। संसार उन्हें भ्रम-मात्र दिखने लगा था और सांसारिक कार्यों में उनकी रुचि नहीं रह गई थी। उसी समय महर्षि विश्वामित्र अयोध्या पधारे थे। उनकी प्रेरणा से गुरु वसिष्ठ ने श्रीराम को उपदेश दिया जिसके फलस्वरूप श्रीराम राजकाज में प्रवृत्त हुए। यह उपदेश योग वासिष्ठ महारामायण के नाम से जाना जाता है।

लौकिक जीवन में इन उपदेशों का बड़ा महत्त्व है। भरत झुनझुनवाला ने साधारण भाषा में आधुनिक समय के उपयुक्त उदाहरणों के साथ बताने का प्रयास किया है।

सात कहानियों में प्रत्येक में किसी एक विषय पर प्रमुखत: टिप्पणी की गई है। ये विषय इस प्रकार हैं—

लीला : युक्ति के रूप में ब्रह्म को निष्क्रिय बताना।

भुशुण्ड : स्पाइनल काम में चक्रों को आधुनिक मनोविज्ञान की दृष्टि से बताना।

चूडाला : महापुरुषों की सक्रियता का रूप एवं कारण।

विद्याधरी : स्त्रियों की विशेष क्षमताएँ और आत्म-साक्षात्कार की समस्याएँ।

विपश्चित : कर्म सिद्धान्त की गलत व्याख्या से दलितों का शोषण एवं भारत का पतन।

बलि : लीलावाद एवं मायावाद का स्पष्टीकरण।

प्रह्लाद : पूर्ण ब्रह्म में विकास।

एक कवि की चाह

जन्म लिया जब से धरती पर
हिन्दी ही हिन्दी पायी है।
हिन्दी खायी, हिन्दी पी है;
हिन्दी की ओढ़ी रजाई है।
अब एक बाकी सदिच्छा है बाकी-
जब अन्त समय में हो जाना;
बस मेरी अर्थी पर यारों!
हिन्दी का कफ़न उढ़ा देना।

—जीवितराम सेतपाल

महत्त्वपूर्ण पठनीय एवं संग्रहणीय ग्रन्थ

काशी गौरव ग्रन्थमाला

1. **काशी का ऐतिहासिक भूगोल**
2. **काशी की जीवन शैली**
3. **काशी में शिक्षा व्यवस्था**

सम्पा० : *देवीप्रसाद सिंह* 1200.00

तथागत एवं उनके श्रावक
(भिक्षु, भिक्षुणी, उपासक, उपासिकाएँ)
डॉ० शान्ति सिंह 250.00

कालिदास : अपनी बात भारतीय दृष्टि *रेवाप्रसाद द्विवेदी* 350.00

संस्कृत-काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास *रेवाप्रसाद द्विवेदी* 500.00

कौटिल्य अर्थशास्त्र और प्रशासन (राजनीति) *डॉ० सी०पी० सिंह* 450.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन

चौक, वाराणसी

गोपालक लालू यादव जिन्दाबाद

'*द हिन्दू*' से साभार

विवादों में घिरे
चित्रकार मकबूल फिदा हुसैन

साहित्य की वैचारिकता

शशिकला त्रिपाठी

प्रथम संस्करण : 2006, मूल्य : 200.00, मेधा बुक्स, नई दिल्ली

सुपरिचित आलोचक डॉ० शशिकला त्रिपाठी की नई पुस्तक 'साहित्य की वैचारिकता' साहित्यिक दृष्टि से ही नहीं, समाजशास्त्रीय दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। पुस्तक में पन्द्रह निबन्ध हैं। उन सभी में वे ज्वलन्त मुद्दे हैं जो साहित्य में केन्द्रीयता प्राप्त किए हुए हैं। वर्णाश्रम-व्यवस्था या ब्राह्मणवाद, वर्ण-संघर्ष, धार्मिक पाखण्ड, फासीवाद, मुसलमान और राष्ट्रवाद, लोकतंत्र, दलितचिंतन, भूमण्डलीकरण, बाज़ारीकरण, नवउपनिवेशवाद आदि मसलों पर लेखिका ने आलोचनात्मक ढंग से विचार किया है। यह विचार साहित्य की कई विधाओं—कहानी, उपन्यास, नाटक आदि के माध्यम से हुआ है, तो कुछ निबन्धों में सीधे-सीधे इनकी विवेचना हुई है। वृद्धों की समस्याओं पर केन्द्रित एक आलेख भी है जिसमें बढ़ती महत्वाकांक्षा, सिकुड़ते सम्बन्ध और संवेदनहीनता को ही दर्शाया नहीं गया है, अपितु मानवीय-अपेक्षाओं को भी चिह्नित किया गया है।

शशिकलाजी ने यह सही लिखा है कि "विचार/चिंतन की पुरानी परम्परा है। चिन्तन या दर्शन भारतीय हो या पश्चिमी; उसका सहज स्वीकार साहित्य में लक्षित होता है। समकालीन साहित्य हो या मध्ययुगीन।" इसीलिए, उन्होंने भक्तिकालीन संत कवियों से लेकर अद्यावधि के साहित्य और समाज को व्याख्यायित और मूल्यांकित किया है। लेखिका की यह चिन्ता साफ झलकती है कि हम 'रक्त' और 'वर्ण' से ही भारतीय हैं। अन्यथा, हमारा जीवन, समाज और साहित्य तो पश्चिमी विचारों से अधिक आक्रान्त रहा है। विचारों के क्षेत्र में भी भाषायी-साम्राज्यवाद का वर्चस्व है। भारतीय चिंतकों को उतना महत्त्व नहीं मिला, जितना पश्चिमी-विचारकों को। अत: नव उपनिवेशवाद के इस दौर में भारतीय बुद्धिजीवियों, रचनाकर्मियों और आलोचकों का यह सामाजिक-दायित्व हो जाता है कि वे सही रास्ता सुझाएँ। यह प्रयत्न लेखिका ने स्वयं किया है अपनी सहज, सुबोध भाषा में। निश्चित ही ऐसी उपयोगी पुस्तक से पाठकों के विभिन्न वर्गों को वैचारिक उत्तेजना मिलेगी।

दनकौर से लखनऊ तक

त्रिलोकचन्द्र गोयल

सर्जरी के सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ० त्रिलोक चन्द्र गोयल के पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन की संस्मरणात्मक जीवनी का तीसरा संस्करण पुस्तक दो खण्डों में विभाजित है। प्रथम खण्ड में जीवनी तथा संस्मरण, द्वितीय खण्ड में साहित्यिक अध्ययन तथा चिकित्सीय अनुभव एवं परामर्श।

सिद्धाश्रम एवं श्री हनुमतलीला विलास

संत सेठ सीताराम मक्खनलाल पोद्दार

श्री मेंहदीपुर बालाजी मानव कल्याण मण्डल
24 जीरो रोड, इलाहाबाद-3

हनुमानजी की अद्भुत अनोखी लीलाओं एवं महिमाओं का वर्णन।

'संवेदना' साहित्य की धुरी है। साहित्यकार अपने सृजन से पाठकों में संवेदनशीलता और जीवन-रखा भी उत्पन्न करता है। नाट्यशास्त्र के लेखक भरतमुनि से लेकर अद्यतन इस मान्यता की अहमियत है। आम पाठक साहित्य से रसास्वादन ही चाहता है। इस प्रकार, साहित्य हृदय और बुद्धि दोनों ही भूमियों पर व्यक्ति को उर्वरा-शक्ति देती है। साहित्यिक विधाओं की पड़ताल आलोचकीय-जिम्मेदारी के तहत ही शशिकलाजी ने किया है। उनके अनुसार मनुष्य की जब तक उपस्थिति रहेगी, साहित्य जीवित रहेगा।

गाँधी दर्शन पर महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

गाँधीवाद : विविध आयाम	*डॉ० सतीश कुमार*	120.00
आचार्य विनोबा की साहित्य दृष्टि	*डॉ० सुमन जैन*	250.00
गाँधी की इतिहास दृष्टि	सम्पा० : *प्रो० परमानन्द सिंह*	200.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 8 **जनवरी-फरवरी 2007** **अंक : 1-2**

प्रधान संपादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित
वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

☎ : Offi. : (0542) 2421472, 2413741, 2413082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082
E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो० बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O.Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)